सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
# परिवहन विशेष
वर्ष 03, अंक 182, नई दिल्ली, मंगलवार 09 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है "भरोसा"

03 उत्तर-पश्चिम दिल्ली की हैदरपुर नहर में दो लड़के डूबे
06 शिक्षा की रोशनी
08 नशा तस्कर सोनी सहित पांच व्यक्ति 8.1 किलो हेरोइन के साथ गिरफ्तार

## टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
## भारत में मानव अधिकार उल्लंघन और उनके लिए सज़ाएं

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट

**भारत में आम मानव अधिकार उल्लंघन:**

1. पुलिस द्वारा अत्याचार और हिरासत में हिंसा

उल्लंघन: पूछताछ के नाम पर मारपीट, टॉर्चर, हिरासत में मौत या फर्जी मुठभेड़।

कानूनी प्रावधान:

1. आईपीसी की धारा 330, 331 – जबरन कबूल करवाने के लिए चोट पहुँचाना।

2. सीआरपीसी के तहत न्यायिक जांच का प्रावधान (जैसे हिरासत में मृत्यु पर मजिस्ट्रेट जांच)।

सज़ा: दोषी पाए जाने पर 7 साल तक की जेल, जुर्माना और सेवा से बर्खास्तगी।

2. अनुसूचित जाति/जनजातियों के प्रति भेदभाव और हिंसा

उल्लंघन: जातीय आधार पर उत्पीड़न, सामाजिक बहिष्कार, शारीरिक हिंसा

**कानूनी प्रावधान:**

1. एससी/एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम,

2. 1989 – अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून।

सज़ा: 6 महीने से लेकर आजीवन कारावास तक, साथ ही जुर्माना।

**महिलाओं के खिलाफ हिंसा**

उल्लंघन: घरेलू हिंसा, बलात्कार, दहेज हत्या, कार्यस्थल पर यौन शोषण।

**कानूनी प्रावधान:**

1. IPC की धारा 375, 376 (बलात्कार), 498A (दहेज उत्पीड़न)

2. घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005

3. कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम अधिनियम, 2013

**सज़ा:**

1. बलात्कार के लिए न्यूनतम 7 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास या कुछ मामलों में फांसी तक।

2. दहेज हत्या: 7 साल से उम्रकैद तक।

4. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन

उल्लंघन: सरकार या पुलिस द्वारा आलोचना करने वाले पत्रकारों, छात्रों, कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई।

कानूनी प्रावधान:

1. संविधान का अनुच्छेद 19(1)(a): बोलने की स्वतंत्रता का अधिकार।

2. यूएपीए गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम,

3. राजद्रोह (आईपीसी 124A) का दुरुपयोग।

**सज़ा:**

1. यूएपीए के तहत बिना मुकदमा चलाए लंबी हिरासत।

2. आईपीसी 124A के तहत आजीवन कारावास भी संभव।

5. संवेदनशील क्षेत्रों में मानवाधिकार उल्लंघन (जैसे जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर)

उल्लंघन: सुरक्षा बलों द्वारा टॉर्चर, गुमशुदगी, फर्जी मुठभेड़।

कानूनी प्रावधान:

1. एएफएसपीए: सुरक्षा बलों को विशेष अधिकार।

चुनौती: इस कानून के तहत सैनिकों को कानूनी छूट होती है, जिससे कार्रवाई में मुश्किल आती है।

**जांच और कार्रवाई करने वाली संस्थाएं**

1. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी)

2. राज्य मानवाधिकार आयोग (एसएचआरसी)

3. न्यायपालिका (अदालतें)

**मुख्य चुनौतियाँ**

1. न्याय प्रक्रिया में देरी

2. पुलिस और अधिकारियों की जवाबदेही की कमी

3. भ्रष्टाचार और राजनीतिक हस्तक्षेप

4. पीड़ितों को न्याय तक पहुंचने में कठिनाई

**अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण**

भारत संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणा (यूडीएचआर) और आईसीसीपीआर जैसे अंतरराष्ट्रीय समझौतों का हिस्सा है, लेकिन एमनेस्टी इंटरनेशनल और ह्यूमन राइट्स वॉच जैसे संगठनों ने भारत में कानून के दुरुपयोग और जवाबदेही की कमी पर चिंता जताई है।

**निष्कर्ष:**

भारत में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए मजबूत कानून हैं, लेकिन असली चुनौती उनके प्रभावी क्रियान्वयन की है। यदि कानूनों को निष्पक्षता और सख्ती से लागू किया जाए, तो मानवाधिकार उल्लंघन पर अंकुश लगाया जा सकता है।

***टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत)***
*tolwaindia@gmail.com*

## दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा डीजल के वाहनों के पंजीकरण का शुल्क अन्य राज्य से अधिक और वन टाइम रोड टैक्स 15 साल का क्यों?

संजय बाटला

***किस आधार पर दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहनों को जिन पर सिर्फ दिल्ली की सड़को पर चलने से पाबंदी लगी है को अन्य राज्यों की सड़को पर डी रजिस्टर कर के दिल्ली परिवहन विभाग चलने से रोक रहे हैं वो भी रोड टैक्स 15 साल का वसूल कर?***

दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व में जारी आदेश के तहत डीजल वाहनों को दिल्ली की सड़को पर चलने की अनुमति मात्र 10 साल फिर भी दिल्ली परिवहन विभाग उनसे पंजीकरण शुल्क अन्य राज्य से अधिक वसूल रहा है और साथ ही उनसे वन टाइम रोड टैक्स जो 15 साल के सड़को पर चलने वाले वाहनों से लेना चाहिए वसूल रहा है आखिर क्यों ?

दिल्ली सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका के अनुसार दिल्ली सरकार दिल्ली में समय सीमा समाप्त कर चुके वाहनों को निरस्त करने के लिए वाहनों की आयु की जगह वाहनों द्वारा निकलने वाले प्रदूषण के आधार पर निरस्त करने की अपनी मांग बता चुकी है और उसी के तहत माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगी बंदिश को हटाने की मांग कर चुकी है। अब प्रश्न यह उठता हैं की भारत सरकार के सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा डीजल वाहनों की भी आयु 15 साल निर्धारित है फिर दिल्ली में 10 साल क्यों ?

दूसरा सवाल यह उठता हैं की दिल्ली में को अब तक डीजल वाहनों को सड़को पर चलने के लिए आज्ञा 10 साल तो उनसे वन टाइम रोड टैक्स के तहत 15 साल का रोड टैक्स क्यों लिया जा रहा है ?

तीसरे सवाल जब भारत सरकार द्वारा डीजल वाहनों की आयु सीमा भी 15 साल तो 15 साल पूरे होने से पूर्व दिल्ली परिवहन विभाग किस आधार पर उन्हें डी रजिस्टर कर रहा है ? यहां यह जानने योग्य बात है की कानून के अनुसार एक राज्य की सड़को पर चलने से लगी रोक पर आयु सीमा बचे वाहनों को दिल्ली परिवहन विभाग डी रजिस्टर कर अन्य राज्यों में चलने से किस आधार पर रोक सकता है ?

कुल मिलाकर दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग दिल्ली की जनता जिन्होंने अपने लिए डीजल वाहन खरीद कर दिल्ली से पंजीकरण करवाए हैं उन्हें को गैर कानूनी तरीके से परेशान कर रहे हैं।

**दिल्ली परिवहन विभाग को जनता के समक्ष इस बात का जवाब देना चाहिए की किस आधार पर सिर्फ दिल्ली की सड़को पर चलने से लगी पाबंदी पर अन्य राज्यों की सड़को पर डी रजिस्टर कर के वह चलने से रोक रहे हैं वो भी रोड टैक्स 15 साल का वसूल कर ?**

## राउरकेला इस्पात संयंत्र में सिंडिकेट परिवहन के विरुद्ध आर जी टी ए के सदस्यों का मुवायना

### यूनियन के नाम पर बाहरी गाड़ियों को लगाकर,एक अलग ही खेल जारी

**राउरकेला** - राउरकेला इस्पात संयंत्र से परिवहन हेतु एक सिंडिकेट प्रभावि तरीके से कब्जा जमाए हुए कई अनैतिक वीधीयों के द्वारा जकड़ लिया गया है, जिसके विरुद्ध सोमवार 8 सितम्बर को राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के सदस्यों ने आज देवगांव गेट का मुआयना किया था1

आरजीटी के पूर्व महासचिव मोहम्मद सलीम का कहना है कि "जब यूनियन की गाड़ी लगती नहीं है तो किस बात का 300 से 400 अधिक लेकर बाहर की गाड़ियों को ही लगाई जा रही है हमारी अपनी गाड़ी खड़ी है, मतलब साफ है कि यह सिर्फ परिवहन नहीं है मामला कुछ और है1 इस्पात संयंत्र के अंदर के कर्मचारियों,अधिकारियों व निचले स्तर तक पूरा सिंडिकेट के साथ संलिप्त है, दबे जबान में सभी को पता है- सिर्फ एक असरदार विजिलेंस इंक्वारी अंदरुनी टीम के द्वारा या उच्च स्तरीय जांच से इस खेल का भंडाफोड़ होकर रहेगा"

"वहीं अन्य सदस्यों का कहना है कि मामला चंद रुपयों का नहीं करोड़ों के खेल है साफ़ शब्दों में एक्सेस मटेरियल डिस्पैच पर यदि जांच बैठाई जाए तो मामला खुलकर स्वतः ही बाहर आ जाएगा"

आरजीटीए का कहना है कि शीघ्र ही उनकी टीम केवल इस्पात संयंत्र के अंदर उच्च अधिकारियों ही नहीं बल्कि इस्पात मंत्रालय तक एक प्रतिनिधि मंडल के द्वारा मिलकर इन सब का खुलासा तथ्यागत तरीके से करने को तैयार है- कारण जो भी हो गाड़ियों के प्लेसमेंट पर आज असर पड़ा है अब आने वाले दिनों में पता चलेगा की इस सिण्डिकेट के तंत्र का खेल टूट सकता है या नहीं 1 आज के प्रतिनिधि मंडल में नंदकिशोर सिंह (नंदू बाबू),शंकर लाल शर्मा,राकेश जयसवाल (मुन्ना),चकित महाजन,अमूलया धल, अम्बुज शुक्ला,बलविंदर सिंह बिट्टू,मिंटू सिँह व अन्य मौजूद थे1 वही आरजीटी इसी मामले को लेकर मंगलवार शाम को एक जरूरी बैठक बुलाकर,आगे की रणनीति पर मजबूत तरीके से सभी तथ्यों को प्रशासन के सामने रखने के लिए रणनीति बनाने पर विचार कर रहा है।

## बारापुला एलिवेटेड कॉरिडोर के तीसरे चरण को मिली मंजूरी
## दिल्ली सरकार का दावा- एक वर्ष में शुरू हो जाएगा मार्ग

दिल्ली में बारापुला एलिवेटेड कॉरिडोर के तीसरे चरण को सीईसी से हरी झंडी मिल गई है। इस परियोजना के पूरा होने से मेरठ एक्सप्रेस–वे रिंग रोड और डीएनडी फ्लाईवे पर यातायात का दबाव कम होगा। परियोजना के चलते काटे जाने वाले पेड़ों में से कई को बचाने का प्रयास किया गया है जिसके अंतर्गत कुछ पेड़ों को प्रत्यारोपित किया जाएगा। पीडब्ल्यूडी मंत्री ने जल्द काम पूरा करने की बात कही।

नई दिल्ली। वर्षों से लटकी बारापुला फेस-तीन एलिवेटेड कॉरिडोर परियोजना में हरे पेड़ों को लेकर आ रही बड़ी बाधा दूर हो गई है। केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (सीईसी) ने बारापुला फेज-तीन एलिवेटेड कॉरिडोर के लिए पेड़ संबंधी अंतिम मंजूरी प्रदान कर दी है। इससे लगभग एक दशक से रुकी हुई इस महत्वपूर्ण परियोजना को नई गति मिलने जा रही है। सीईसी के निर्देशों के अनुरूप पेड़ों का संयुक्त पुन: सर्वेक्षण किया गया है।

जिसमें पीडब्ल्यूडी और वन विभाग ने जियो-लोकेशन, पेड़ों की प्रजाति और उनकी मोटाई संबंधी डेटा इकट्ठा कर योजना में संशोधन किया, ताकि अधिक से अधिक पेड़ संरक्षित किए जा सकें।

इसके तहत 333 में से 161 पेड़ कटने या स्थानांतरित होने से बचा लिए गए हैं, और केवल 85 पेड़ ही काटे जाएंगे, ये वे पेड़ हैं जो सूखने के कगार पर हैं। जबकि 87 पेड़ प्रत्यारोपित किए जाएंगे।

बारापुला के नाम से सराय काले खां से एम्स तक फेज-एक और दो को कुल लंबाई में पौने सात किलोमीटर तक कई साल पहले तैयार किया जा चुका है। फेज-तीन के तहत इस परियोजना के तहत सराय काले खां से मयूर विहार तक करीब साढ़े तीन किलोमीटर बनाने का काम किया जा रहा है।

इसे 2014 में स्वीकृति मिली थी और अप्रैल 2015 में निर्माण कार्य आरंभ हुआ था। शुरुआती अनुमानित लागत 964 करोड़ थी, जो अब बढ़कर लगभग 1,330 करोड़ हो गई है।

परियोजना पर 90 प्रतिशत काम पूरा किया जा चुका है। इस परियोजना के लिए जमीन से जुड़े सभी मामले हल हो चुके हैं, इस परियोजना के बीच आ रहे हरे पेड़ ही एक बड़ी अड़चन रहे हैं।

सीईसी द्वारा दी गई मंजूरी के तहत पेड़ों की जिम्मेदारी वन विभाग के दो डिवीजन के तहत दी गई है। सेंट्रल फॉरेस्ट डिवीजन के तहत कुल 155 पेड़ आ रहे हैं। इसमें 10 पेड़ सूखने के कगार पर हैं, जिन्हें काटा जाएगा, 34 प्रत्यारोपित होंगे, 111 संरक्षित किए जाएंगे, यानी इन्हें नहीं हटाया जाएगा।

इसमें से 107 में हल्की छंटाई की जाएगी। इसी तरह साउथ फॉरेस्ट डिवीजन के तहत कुल 178 पेड़ आ रहे हैं। इनमें से 75 सूखने के कगार पर हैं जो काटने योग्य हैं। 53 प्रत्यारोपित होंगे और 50 संरक्षित किए जाएंगे,इन पेड़ों को नहीं काटा जाएगा। ।इनमें से 13 में हल्की छंटाई की जाएगी।

# पितरों को न भूलें - यह पर्व हमें आत्ममंथन और कृतज्ञता की भावना से जोड़ता है, यही है पितृपक्ष का सच्चा संदेश - वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

पितृपक्ष : पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता, आत्मिक शुद्धि और परंपरा से जुड़ाव का पर्व – वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

पितृपक्ष पर पूर्वजों के स्मरण, उपवास, तर्पण और साधना के माध्यम से जीवन को नव ऊर्जा, संतुलन और आध्यात्मिकता से भरें : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

"जब हम अपने पितरों का स्मरण करते हैं, तो केवल उन्हें श्रद्धांजलि नहीं देते, बल्कि उनसे जुड़कर जीवन के गहरे अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं।"

**आगरा, संजय साग़र सिंह।** वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने पितृपक्ष के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि कहा कि श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह पूर्वजों के प्रति आभार प्रकट करने और त्रऋण चुकाने का पावन अवसर हैं। उन्होंने कहा कि यह पर्व हमें न केवल अपनी जड़ों से जोड़ता है, बल्कि अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक शाश्वत संबंध की अनुभूति कराता है।

भाद्रपद पूर्णिमा से आरंभ होकर 16 दिनों तक चलने वाले पितृपक्ष को लेकर श्री खुराना ने कहा, ₹जैसे कोई वृक्ष अपनी जड़ों से ऊर्जा लेकर फल-फूल सकता है, वैसे ही मनुष्य भी अपनी संस्कृति, परंपरा और पूर्वजों से जुड़कर जीवन में संतुलन और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।"

उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पितृपक्ष केवल अतीत को स्मरण करने का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मा की अमरता, पीढ़ियों के बीच भावनात्मक और आध्यात्मिक संवाद का माध्यम है। समाज को संबोधित करते हुए श्री खुराना ने कहा, ₹परिवार केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि वह धारा है जिसमें संस्कार, मूल्य और आस्था प्रवाहित होती है। आधुनिकता की दौड़ में यदि हम इन परंपराओं को भूलते हैं, तो यह वैसा ही है जैसे कोई वृक्ष अपनी जड़ों को त्याग दे।₹

श्री खुराना ने यह भी उल्लेख किया कि इस वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा पर चंद्रग्रहण के साथ पितृपक्ष का आरंभ एक विशेष आध्यात्मिक संयोग लेकर आया है। उन्होंने कहा, ₹ग्रहण काल साधना, मंत्र-जप और आत्म-निरीक्षण का श्रेष्ठ समय माना जाता है। यह न केवल शरीर की शुद्धि का, बल्कि मन की स्थिरता और आत्मा की जागृति का अवसर भी प्रदान करता है।"

उन्होंने आगे कहा, "ग्रहण का अंधकार क्षणिक होता है, परंतु प्रकाश शाश्वत है। इसी तरह जीवन की कठिनाइयाँ अस्थायी हैं, लेकिन आत्मा की ज्योति अमर है। पितृपक्ष और ग्रहण का यह संगम हमें भीतर की यात्रा का अवसर देता है।"

संस्कारों की धारा ही राष्ट्र की शक्ति है

राजेश खुराना ने यह भी कहा कि भारतीय संस्कृति में परिवार न केवल सामाजिक इकाई है, बल्कि चरित्र निर्माण की पाठशाला है। पितृपक्ष जैसे पर्व परिवार और संस्कृति को जीवंत बनाए रखने वाले स्तंभ हैं, जो राष्ट्र को आंतरिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

**पुकार पूर्वजों की, उत्तर वर्तमान का**

पितृपक्ष का सार बताते हुए श्री खुराना ने कहा, ₹जब हम अपने पितरों का स्मरण करते हैं, तो केवल उन्हें श्रद्धांजलि नहीं देते, बल्कि उनसे जुड़कर जीवन के गहरे अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं। यह पर्व हमें आत्ममंथन और कृतज्ञता की भावना से जोड़ता है।"

अंत में उन्होंने ओम्-घृणि सूर्याय नमः के मंत्रोच्चारण के साथ सभी से आह्वान किया कि वे इस पितृपक्ष पर पूर्वजों के स्मरण, उपवास, तर्पण और साधना के माध्यम से जीवन को नव ऊर्जा, संतुलन और आध्यात्मिकता से भरें।

*पितरों को न भूलें – यही है पितृपक्ष का सच्चा*

# अमावस्या और पूर्णिमा का रहस्य

हिन्दू धर्म में पूर्णिमा, अमावस्या और ग्रहण के रहस्य को उजागर किया गया है। इसके अलावा वर्ष में ऐसे कई महत्वपूर्ण दिन और रात हैं जिनका धरती और मानव मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उनमें से ही माह में पड़ने वाले 2 दिन सबसे महत्वपूर्ण हैं- पूर्णिमा और अमावस्या। पूर्णिमा और अमावस्या के प्रति बहुत से लोगों में डर है। खासकर अमावस्या के प्रति ज्यादा डर है। वर्ष में 12 पूर्णिमा और 12 अमावस्या होती हैं। सभी का अलग-अलग महत्व है।

हिन्दू पंचांग के अनुसार माह के 30 दिन को चन्द्र कला के आधार पर 15-15 दिन के 2 पक्षों में बांटा गया है- शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। शुक्ल पक्ष के अंतिम दिन को पूर्णिमा कहते हैं और कृष्ण पक्ष के अंतिम दिन को अमावस्या।

**हिन्दू पंचांग की अवधारणा**

यदि शुरुआत से गिनें तो 30 तिथियों के नाम निम्न हैं-पूर्णिमा (पूरनमासी), प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दूज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पंचमी (पंचमी), षष्ठी (छठ), सप्तमी (सातम), अष्टमी (आठम), नवमी (नौमी), दशमी (दसम), एकादशी (ग्यारस), द्वादशी (बारस), त्रयोदशी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस) और अमावस्या (अमावस)।

अमावस्या पंचांग के अनुसार माह की 30वीं और कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि है जिस दिन कि चंद्रमा आकाश में दिखाई नहीं देता। हर माह की पूर्णिमा और अमावस्या को कोई न कोई पर्व अवश्य मनाया जाता ताकि इन दिनों व्यक्ति का ध्यान धर्म की ओर लगा रहे। लेकिन इसके पीछे आखिर रहस्य क्या है?

**नकारात्मक और सकारात्मक शक्तियां**

शक्तियाः- धरती के मान से 2 तरह की शक्तियां होती हैं- सकारात्मक और नकारात्मक, दिन और रात, अच्छा और बुरा आदि। हिन्दू धर्म के अनुसार धरती पर उक्त दोनों तरह की शक्तियों का वर्चस्व सदा से रहता आया है। हालांकि कुछ मिश्रित शक्तियां भी होती हैं, जैसे संध्या होती है तथा जो दिन और रात के बीच होती है। उसमें दिन के गुण भी होते हैं और रात के गुण भी।

इन प्राकृतिक और दैवीय शक्तियों के कारण ही धरती पर भांति-भांति के जीव-जंतु, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों, निशाचरों आदि का जन्म और विकास हुआ है। इन शक्तियों के कारण ही मनुष्यों में देवगुण और दैत्य गुण होते हैं।

हिन्दुओं ने सूर्य और चन्द्र की गति और कला को जानकर वर्ष का निर्धारण किया गया। 1 वर्ष में सूर्य पर आधारित 2 अयन होते हैं- पहला उत्तरायण और दूसरा दक्षिणायन। इसी तरह चंद्र पर आधारित 1 माह के 2 पक्ष होते हैं- शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।

इनमें से वर्ष के मान से उत्तरायण में और माह के मान से शुक्ल पक्ष में देव आत्माएं सक्रिय रहती हैं, तो दक्षिणायन और कृष्ण पक्ष में दैत्य और पितर आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं। अच्छे लोग किसी भी प्रकार का धार्मिक और मांगलिक कार्य रात में नहीं करते जबकि दूसरे लोग अपने सभी धार्मिक और मांगलिक कार्य सहित सभी सांसारिक कार्य रात में ही करते हैं।

**पूर्णिमा का विज्ञान :**

पूर्णिमा की रात मन ज्यादा बेचैन रहता है और नींद कम ही आती है। कमजोर दिमाग वाले लोगों के मन में आत्महत्या या हत्या करने के विचार बढ़ जाते हैं। चांद का धरती के जल से संबंध है। जब पूर्णिमा आती है तो समुद्र में ज्वार-भाटा उत्पन्न होता है, क्योंकि चंद्रमा समुद्र के जल को ऊपर की ओर खींचता है। मानव के शरीर में भी लगभग 85 प्रतिशत जल रहता है। पूर्णिमा के दिन इस जल की गति और गुण बदल जाते हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस दिन चन्द्रमा का प्रभाव काफी तेज होता है इन कारणों से शरीर के अंदर रक्त में न्यूरॉन सेल्स क्रियाशील हो जाते हैं और ऐसी स्थिति में इंसान ज्यादा उत्तेजित या भावुक रहता है। एक बार नहीं, प्रत्येक पूर्णिमा को ऐसा होता रहता है तो व्यक्ति का भविष्य भी उसी अनुसार बनता और बिगड़ता रहता है।

जिन्हें मंदाग्नि रोग होता है या जिनके पेट में चय-उपचय की क्रिया शिथिल होती है, तब अक्सर सुनने में आता है कि ऐसे व्यक्ति भोजन करने के बाद नशा जैसा महसूस करते हैं और नशे में न्यूरॉन सेल्स शिथिल हो जाते हैं जिससे दिमाग का नियंत्रण शरीर पर कम, भावनाओं पर ज्यादा केंद्रित हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों पर चन्द्रमा का प्रभाव गलत दिशा लेने लगता है। इस कारण पूर्णिमा व्रत का पालन रखने की सलाह दी जाती है।

**कुछ मुख्य पूर्णिमा :**

कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा आदि।

**चेतावनी :**

इस दिन किसी भी प्रकार की तामसिक वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इस दिन शराब आदि नशे से भी दूर रहना चाहिए। इसके शरीर पर ही नहीं, आपके भविष्य पर भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। जानकार लोग तो यह कहते हैं कि चौदस, पूर्णिमा और प्रतिपदा उक्त 3 दिन पवित्र बने रहने में ही भलाई है।

**अमावस्या :**

वर्ष के मान से उत्तरायण में और माह के मान से शुक्ल पक्ष में देव आत्माएं सक्रिय रहती हैं तो दक्षिणायन और कृष्ण पक्ष में दैत्य आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं। जब दानवी आत्माएं ज्यादा सक्रिय रहती हैं, तब मनुष्यों में भी दानवी प्रवृत्ति का असर बढ़ जाता है इसीलिए उक्त दिनों के महत्वपूर्ण दिन में व्यक्ति के मन-मस्तिष्क को धर्म की ओर मोड़ दिया जाता है।

अमावस्या के दिन भूत-प्रेत, पितृ, पिशाच, निशाचर जीव-जंतु और दैत्य ज्यादा सक्रिय और उन्मुक्त रहते हैं। ऐसे दिन की प्रकृति को जानकर विशेष सावधानी रखनी चाहिए। प्रेत के शरीर की रचना में 25 प्रतिशत फिजिकल एटम और 75 प्रतिशत ईथरिक एटम होता है। इसी प्रकार पितृ शरीर के निर्माण में 25 प्रतिशत ईथरिक एटम और 75 प्रतिशत एस्ट्रल एटम होता है। अगर ईथरिक एटम सघन हो जाए तो प्रेतों का छायाचित्र लिया जा सकता है और इसी प्रकार यदि एस्ट्रल एटम सघन हो जाए तो पितरों का भी छायाचित्र लिया जा सकता है।

ज्योतिष में चन्द्र को मन का देवता माना गया है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा दिखाई नहीं देता। ऐसे में जो लोग अति भावुक होते हैं, उन पर इस बात का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। लड़कियां मन से बहुत ही भावुक होती हैं। इस दिन चन्द्रमा नहीं दिखाई देता तो ऐसे में हमारे शरीर में हलचल अधिक बढ़ जाती है। जो व्यक्ति नकारात्मक सोच वाला होता है उसे नकारात्मक शक्ति अपने प्रभाव में ले लेती है।

धर्मग्रंथों में चन्द्रमा की 16वीं कला को 'अमा' कहा गया है। चन्द्रमंडल की 'अमा' नाम की महाकला है जिसमें चन्द्रमा की 16 कलाओं की शक्ति शामिल है। शास्त्रों में अमा के अनेक नाम आए हैं, जैसे अमावस्या, सूर्य-चन्द्र संगम, पंचदशी, अमावसी, अमावासी या अमामासी। अमावस्या के दिन चन्द्र नहीं दिखाई देता अर्थात जिसका क्षय और उदय नहीं होता है उसे अमावस्या कहा गया है, तब इसे 'कुहू अमावस्या' भी कहा जाता है। अमावस्या माह में एक बार ही आती है। शास्त्रों में अमावस्या तिथि का स्वामी पितृदेव को माना जाता है। अमावस्या सूर्य और चन्द्र के मिलन का काल है। इस दिन दोनों ही एक ही राशि में रहते हैं।

**कुछ मुखय अमावस्या :**

भौमवती अमावस्या, मौनी अमावस्या, शनि अमावस्या, हरियाली अमावस्या, दिवाली अमावस्या, सोमवती अमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या।

**चेतावनी :**

इस दिन किसी भी प्रकार की तामसिक वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। इस दिन शराब आदि नशे से भी दूर रहना चाहिए। इसके शरीर पर ही नहीं, आपके भविष्य पर भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। जानकार लोग तो यह कहते हैं कि चौदस, अमावस्या और प्रतिपदा उक्त 3 दिन पवित्र बने रहने में ही भलाई है।

**अमावस्या तिथि का आध्यात्म एवं ज्योतिष में महत्त्व**

हिंदू धर्म में अमावस्या तिथि का बहुत अधिक महत्व है। हिंदू पंचांग की तीसवीं तिथि और कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि अमावस्या कहलाती है। इस तिथि का नाम सिनीवाली भी है। इसे हिंदी में अमावसी भी कहते हैं। अमावस्या तिथि का निर्माण तब होता है जब सूर्य और चंद्रमा का अंतर शून्य हो जाता है। इस दिन आकाश में चांद नहीं दिखाई देता है। इस तिथि पर भगवान शिव और माता पार्वती के पूजन का विधान है। मान्यता है कि इस तिथि के दिन केतु का जन्म हुआ था।

**अमावस्या तिथि का ज्योतिष में महत्त्व**

अमावस्या तिथि के स्वामी पितर माने गए हैं। इस तिथि पर चंद्रमा की 16वीं कला जल में प्रविष्ट हो जाती है। इस दिन चंद्रमा आकाश में नहीं दिखाई देता है और इस तिथि पर वह औषधियों में रहते हैं। अमावस्या तिथि के दिन कृष्ण पक्ष समाप्त होता है। इस तिथि के दिन सूर्य और चन्द्रमा दोनों समान अंशों पर होते है।

**अमावस्या तिथि में जन्मे जातक**

अमावस्या तिथि में जन्मे जातकों की दीर्घायु होती है। ये लोग अपनी बुद्धि को कुटिल कार्यों में लगाते हैं। ये बहुत पराक्रमी होते हैं लेकिन इन्हें ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रयत्न बहुत करना पड़ता है। इनकी आदत व्यर्थ में सलाह देने की बहुत होती है। इन जातकों को जीवन में संघर्षों का सामना बहुत करना पड़ता है। ये लोग मानसिक रूप से स्वस्थ्य नहीं होते हैं। इनमें असंतुष्टी की भावना बहुत अधिक रहती है।

**अमावस्या के दिन क्या करें और क्या ना करें**

अमावस्या तिथि पर भगवान शिव और माता पार्वती का पूजन करना शुभ माना जाता है।

इस तिथि पर पितरों का तर्पण करने का विधान है। यह तिथि चंद्रमास की आखिरी तिथि होती है।

इस तिथि पर गंगा स्नान और दान का महत्व बहुत है।

इस दिन क्रय-विक्रय और सभी शुभ कार्यों को करना वर्जित है।

अमावस्या के दिन खेतों में हल चलाना या खेत जोतने की मनाही है।

इस तिथि पर जब कोई बच्चा पैदा होता है तो शांतिपाठ करना पड़ता है।

अमावस्या के दिन शुभ कर्म नहीं करना चाहिए।

**अमावस्या तिथि के प्रमुख हिन्दू त्यौहार एवं व्रत व उपवास**

माघ अमावस्याः- इस तिथि को मौनी अमावस्या के रूप में जाना जाता है। इस दिन गंगा स्नान करके मौन धारण किया जाता है।

फाल्गुन अमावस्या, अश्विन अमावस्या, चैत्र अमावस्याः- इस अमावस्या को पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। इस दन दान, तर्पण और श्राद्ध किया जाता है।

वैशाख अमावस्याः- इस तिथि के दिन सर्पदोष से मुक्ति पाने के लिए उज्जैन में पूजा करने का विधान है।

ज्येष्ठ अमावस्याः- यह तिथि के दिन आप ज्योतिषाचार्य से शनिदोष निवारण का उपाय करा सकते हैं। इस दिन वट सावित्री की पूजा का भी प्रावधान है।

आषाढ़ अमावस्याः- इस अमावस्या के दिन पितरों का तर्पण करते हैं उनकी आत्मा की शांति के लिए। इस दिन स्नान और दान का विशेष महत्व है।

श्रावण अमावस्याः- इस तिथि को हरियाली अमावस्या के नाम से जानते हैं। इस तिथि को पितृकार्येषु अमावस्या के नाम से भी जाना जाता है।

भाद्रपद अमावस्याः- इस तिथि को कुशाग्रहणी अमावस्या के नाम से जाना जाता है। इस दिन कुशा को तोड़कर रख लिया जाता है।

कार्तिक अमावस्याः-इस तिथि के दिन दीपों का पर्व दीवाली मनाते हैं। इस दिन 14 वर्ष का वनवास पूरा करके श्री राम अयोध्या वापस लौटे थे।

मार्गशीर्ष अमावस्याः- इस तिथि को सोमवती अमावस्या के नाम से जाना जाता है।

# बालों की ग्रोथ के लिए जरूरी है ये विटामिन, डाइट में इन फूड्स को शामिल कर पूरी करें कमी, तेजी से होगी ग्रोथ

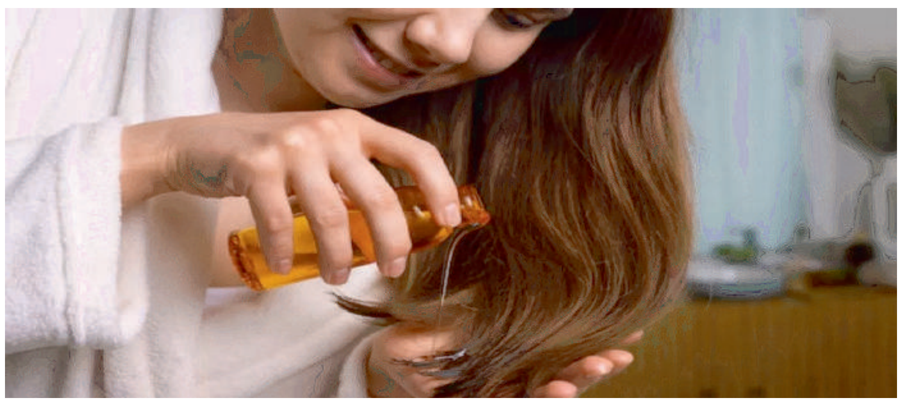

1. बायोटिन (Vitamin B7): फायदाः बालों की जड़ों को मजबूत करता है और ग्रोथ को बढ़ाता है। फूड्सः अंडा, बादाम, मूंगफली, केला, स्वीट पोटैटो।
2. विटामिन A: फायदाः स्कैल्प में सीबम (प्राकृतिक तेल) बनाता है जिससे बाल नमी पाते हैं। फूड्सः गाजर, पालक, आम, शकरकंद।
3. विटामिन C: फायदाः कोलेजन प्रोडक्शन में मदद करता है और आयरन के अवशोषण को बढ़ाता है। फूड्सः आंवला, संतरा, नींबू, अमरूद।
4. विटामिन D: फायदाः हेयर फॉलिकल्स को एक्टिव करता है। फूड्सः सूरज की रोशनी, मशरूम, अंडा की जर्दी।
5. विटामिन E: फायदाः ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाता है और बालों को मजबूत बनाता है। फूड्सः सूरजमुखी के बीज, बादाम, पालक।

**टिप्सः** जंक फूड और स्ट्रेस से बचें।
प्रोटीन और आयरन भी बालों के लिए जरूरी हैं।
रोजाना पर्याप्त पानी पिएं।

निष्कर्षः
बालों की हेल्थ के लिए सही पोषण बेहद जरूरी है। इन विटामिन्स को अपनी डेली डाइट में शामिल करें और पाएं लंबे, मजबूत और घने बालों का तोहफा।

# सपने में सांप देखने का अर्थ

सपने में सांप दिखाई देना शुभ अशुभ दोनों हो सकता है यह निर्भर करता है कि स्वप्न में आपको सांप किस अवस्था में दिखाई दिया। कुछ लोग सपने में सांप को मार देते हैं और कुछ को सांप सपने में डस लेता है।

**राहू का सांप से सम्बन्ध**

जब राहु की आहट जीवन में होती है तो सांप जरूर दिखाई देता है इसका अर्थ है कि राहु आपको फल देने वाला है यह किसी के लिए शुभ होता है और किसी के लिए अशुभ। जब तक स्वपन पूरा न हो कुछ कहा नहीं जा सकता।

**स्वप्न में सांप का काटना**

सांप द्वारा यदि आप डस लिए गए हैं या सांप ने काट लिया है तो डसे जाने वाले व्यक्ति के लिए चेतावनी है क्योंकि राहु शनि द्वारा संचालित होता है। शनि का आदेश है कि राहु सांप के रूप में दिखाई दे, ये संकेत है कि अचानक होने वाली घटना घटित होने जा रही है।

**सपने में सांप को मारना**

यदि आप सांप को मार रहे हैं या आप सांप को मरा हुआ देख रहे हैं तो इसका अर्थ है आपने राहु के फल को पूरी तरह भोग लिया है आपके कष्ट समाप्त हो गए हैं अब राहु आपको परेशान नहीं करेगा।

**सपने में सांप को देखना**

सपने में सांप के मात्र दर्शन होना इस बात का प्रमाण है कि राहु की दशा चल रही है या राहु की दशा आने वाली है या फिर राहू गोचर में आप के राशि पर प्रभाव दाल रहा है।

**ज्योतिष के अनुसार सपने में सांप का दिखना**

अक्सर जब लग्न के 12वें घर में राहु आता है तो सपने में सांप दिखाई देता है जिनको जीवन में बार बार सांप दिखाई दे उनकी जन्म कुंडली के लग्न में या 12वें घर में राहु विराजमान है या लग्नेश के साथ राहु विराजमान है अथवा कुंडली मे कालसर्प दोष है।

**जब स्वप्न में सांप दिखाई दे तो करें यह उपाय**

चाहे आप स्वप्न में या वास्तविक जीवन में सांप से भयभीत रहते हैं या फिर यदि आपको लग रहा है की सांप के दिखाई देने के आप के स्वप्न का फल बुरा हो सकता है तो शिव मंदिर में जाएँ और उनकी पूजा अर्चना करें रुद्राभिषेक करवाएं या शिव मंदिर में जाकर शिव महिम्न स्त्रोत का पाठ करें।

महाभारत ग्रन्थ के शुरुआत में ही सर्प सत्र नाम से अध्याय है उसका पठन और श्रवण मात्र से व्यक्ति को सर्पों से जीवन में किसी प्रकार का भय नहीं रहता।

चन्द्रमा और सूर्य के कहने पर राहू नामक राक्षस का भगवान विष्णु ने सर काट दिया था उस राक्षस के सर का नाम राहू और धड़ का नाम केतु है।

उसी समय से राहू की सूर्य और चंद्रमा से शत्रुता है। जो लोग सूर्य और चन्द्रमा की दशा और राहू के अंतर में होते हैं उन्हें भी राहू से भय होता है जिस कारण स्वप्न में सांप दिखाई देते हैं। ऐसे लोगों को विष्णु की शरण में जाना चाहिए श्री विष्णु का मंत्र है,

**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**

इस मन्त्र का मन ही मन पाठ करने से केवल इक्कीस दिनों में आप राहू के बुरे फल को शुभ फल में बदल सकते हैं। किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से आरम्भ कर लगातार 41 दिन भुजंग स्तोत्र का पाठ सर्व प्रकार के सर्प भय से मुक्ति दिलाता है। नवनाग पूजन उपरांत राहु केतु के वैदिक जप और दशांश हवन से भी सर्प दोषों से मुक्ति मिलती है।

## पितृपक्ष पर विशेष – पूर्वजों का आशीर्वाद पाएं...!

अपने पितरों का अवश्य करिए श्राद्ध,
पूर्वजों से 'मोह' आप रहते हैं आबद्ध।
ये सोलह दिन में महालय श्राद्ध तिथि,
करों उनका 'तर्पण' मिलती उन्हें गति।
कर्मकांड–ब्राह्मण भोजन हैं अनिवार्य,
माना जाता हर वर्ष करना होंगे कार्य।

श्राद्ध तो श्रद्धा छोड़ने वाला कर्म नहीं,
हमारी यादों में रहे इस बिना मर्म नहीं।
केवल अश्विन महीने के कृष्ण पक्ष में,
पितृ लोक एक घण्टे के लिए खुलता।
परिवार के पितृ को 'पृथ्वी' पर रुकने,
सिर्फ चार मिनट का समय हैं मिलता।

पूर्वजों की आत्मा आएँ वर्ष में 1 बार,
'जल आहार 'ग्रहण करने खोलों द्वार।
पितृ लोक का एक दिन पृथ्वी पर ही,
एक वर्ष के बराबर ही माना जाता है।
वर्षभर के लिए तृप्त होती हैं आत्माएं,
सब सुखी पूर्वजों का आशीर्वाद पाएं।

**संजय एम तराणेकर**
**(कवि, लेखक व समीक्षक)**

## बाबा बैजनाथ

संसार में अनेक देशों की जनसंख्या भी उतनी नहीं है, जितने भगवाधारी हर वर्ष सावन के महीने में बाबा बैजनाथ के शिवलिंग पर जल चढ़ाने पहुँच जाते हैं।

बाबा बैजनाथ की कथा कौन नहीं जानता! औघड़दानी भगवान शिव केवल मनुष्यों के ही देवता नहीं हैं, वे संसार के समस्त चर अचर के मालिक हैं, उनपर कृपा बरसाते हैं। वे देवताओं को मिल जाते हैं और दैत्यों को भी! यही कारण है कि बुराई के प्रतीक लंकेश रावण पर भी उनकी कृपा दृष्टि थी। रावण की तपस्या से प्रसन्न भगवान शिव ने उसे अपना ज्योतिर्लिंग तो दिया, पर यह भी कहा कि इसे जहां भी भूमि पर रख दिया जाएगा, वहीं स्थापित हो जाएगा।

संध्या के समय जब विप्र रावण संध्या वंदन के लिए रुका तो उसने ऐसे किसी व्यक्ति को ढूंढा जो संध्या पूजन करने भर तक शिवलिंग को थाम ले। लोक में मान्यता है कि बैजू नाम के ग्वाले ने कुछ देर तक शिवलिंग को थामा, पर रावण को देर होते और सांझ गहराती देख कर उसने शिवलिंग वहीं रख दिया और गायों को हांकने चला गया। कहीं कहीं यह कार्य भगवान विष्णु और कहीं कहीं भगवान गणेश द्वारा किया गया बताया जाता है।

लोक प्राचीन कथाओं को अनेक रूपों में याद रखता है। इस कथा के भी अनेक रूप हैं। हां, यह

बात सभी मानते हैं कि इस स्थान का नाम वैजनाथ धाम उसी बैजू ग्वाले के नाम पर है।

इस कथा को सुन कर आपको लगेगा कि यहाँ तो रावण के साथ छल हो गया। तो सुनिये! छल भी एक सामान्य व्यवहार ही है, और यदि संसार के हित के लिए किसी व्यक्ति विशेष से छल करना भी पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिये। धर्म की बागडोर अधर्मी व्यक्ति के हाथ में जाय तो समूची सभ्यता को कष्ट भोगना पड़ता है। संसार को रावण से अत्याचारों से मुक्त करने के लिए यह छल आवश्यक था।

बैजनाथ धाम के शिवलिंग को कामना लिंग कहते हैं। रावण ने भोलेनाथ से मांगा था कि अपना ऐसा विग्रह दीजिये जो मेरी हर मनोकामना पूरी कर दे। देवघर में स्थापित भोलेनाथ अपने भक्तों की हर कामना पूरी करते हैं।

देवघर में केवल बाबा ही नहीं हैं, मइया भी हैं। माँ शक्ति का पवित्र शक्तिपीठ भी है यहाँ। यहाँ माता सती का हृदय गिरा था। माता का मृत शरीर छिन्न-भिन्न हुआ तब भी हृदय वहीं गिरा जहाँ पति विराजमान थे। उतना प्रेम संसार में कहाँ होगा...

देवघर चिताभूमि भी कहलाता है, क्योंकि यहीं माता के हृदय का दाह संस्कार किया गया था। और फिर उसी चिताभष्म को अपने शरीर में लगा कर बाबा युगों तक संसार से कटे वैरागी हो गए थे। यही कारण है कि यहाँ प्रसाद में भी चिता भष्म दी जाती है।

यहाँ माता के मंदिर और बाबा के मंदिर के शिखरों में बीच लाल कपड़े का रिबन बांधा जाता है। यह गठबंधन है, संसार के सबसे पूज्य युगल का गठबंधन। नए विवाहित जोड़े भी बंधवाते है यह गांठ, इस प्रार्थना के साथ कि उनके मध्य भी शिव पार्वती सा प्रेम बना रहे। उनकी कृपा हो तो कुछ भी असम्भव नहीं।

सुल्तानगंज में, जहां से जल उठाया जाता है, वहाँ गंगा उत्तर की ओर बहती हैं। सम्भवतः दो ही स्थान ऐसे हैं जहाँ गंगा उत्तरवाहिनी है। एक काशी और दूसरा सुल्तानगंज।

देवघर की यात्रा में असँख्य तीर्थों की श्रृंखला है। अजगैबीनाथ, बासुकीनाथ... हर ओर बाबा की कृपा पसरी हुई है।

बाबा की कृपा आप सब पर भी बरसे। हर हर महादेव...

## आज की कहानी
## गया तीर्थ की कथा

ब्रह्माजी जब सृष्टि की रचना कर रहे थे उस दौरान उनसे असुर कुल में गया नामक असुर की रचना हो गई। गया असुरों के संतान रूप में पैदा नहीं हुआ था इसलिए उसमें आसुरी प्रवृति नहीं थी. वह देवताओं का सम्मान और आराधना करता था।

उसके मन में एक खटका था. वह सोचा करता था कि भले ही वह संत प्रवृति का है लेकिन असुर कुल में पैदा होने के कारण उसे कभी सम्मान नहीं मिलेगा. इसलिए क्यों न अच्छे कर्म से इतना पुण्य अर्जित किया जाए ताकि उसे स्वर्ग मिले।

गयासुर ने कठोर तप से भगवान श्री विष्णुजी को प्रसन्न किया. भगवान ने वरदान मांगने को कहा तो गयासुर ने मांगा- आप मेरे शरीर में वास करें. जो मुझे देखे उसके सारे पाप नष्ट हो जाएं. वह जीव पुण्यात्मा हो जाए और उसे स्वर्ग में स्थान मिले।

भगवान से वरदान पाकर गयासुर घूम-घूमकर लोगों के पाप दूर करने लगा. जो भी उसे देख लेता उसके पाप नष्ट हो जाते और स्वर्ग का अधिकारी हो जाता।

इससे यमराज की व्यवस्था गड़बड़ा गई. कोई घोर पापी भी कभी गयासुर के दर्शन कर लेता तो उसके पाप नष्ट हो जाते. यमराज उसे नर्क भेजने की तैयारी करते तो वह गयासुर के दर्शन के प्रभाव से स्वर्ग मांगने लगता. यमराज को हिसाब रखने में संकट हो गया था।

यमराज ने ब्रह्माजी से कहा कि अगर गयासुर को न रोका गया तो आपका वह विधान समाप्त हो जाएगा जिसमें आपने सभी को उसके कर्म के अनुसार फल भोगने की व्यवस्था दी है. पापी भी गयासुर के प्रभाव से स्वर्ग भोंगेगे।

ब्रह्माजी ने उपाय निकाला. उन्होंने गयासुर से कहा कि तुम्हारा शरीर सबसे ज्यादा पवित्र है इसलिए तुम्हारी पीठ पर बैठकर मैं सभी देवताओं के साथ यज्ञ करुंगा।

उसकी पीठ पर यज्ञ होगा यह सुनकर गया सहर्ष तैयार हो गया. ब्रह्माजी सभी देवताओं के साथ पत्थर से गया को दबाकर बैठ गए. इतने भार के बावजूद भी वह अचल नहीं हुआ. वह घूमने-फिरने में फिर भी समर्थ था।

देवताओं को चिंता हुई. उन्होंने आपस में सलाह की कि इसे श्री विष्णु ने वरदान दिया है इसलिए अगर स्वयं श्री हरि भी देवताओं के साथ बैठ जाएं तो गयासुर अचल हो जाएगा. श्री हरि भी उसके शरीर पर आ बैठे।

श्री विष्णु जी को भी सभी देवताओं के साथ अपने शरीर पर बैठा देखकर गयासुर ने कहा- आप सब और मेरे आराध्य श्री हरि की मर्यादा के लिए अब मैं अचल हो रहा हूं. घूम-घूमकर लोगों के पाप हरने का कार्य बंद कर दूंगा।

लेकिन मुझे चूंकि श्री हरि का आशीर्वाद है इसलिए वह व्यर्थ नहीं जा सकता इसलिए श्री हरि आप मुझे पत्थर की शिला बना दें और यहीं स्थापित कर दें।

श्री हरि उसकी इस भावना से बड़े खुश हुए. उन्होंने कहा- गया अगर तुम्हारी कोई और इच्छा हो तो मुझसे वरदान के रूप में मांग लो।

गया ने कहा- " हे नारायण मेरी इच्छा है कि आप सभी देवताओं के साथ अप्रत्यक्ष रूप से इसी शिला पर विराजमान रहें और यह स्थान मृत्यु के बाद किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों के लिए तीर्थस्थल बन जाए."

श्री विष्णु ने कहा- गया तुम धन्य हो. तुमने लोगों के जीवित अवस्था में भी कल्याण का वरदान मांगा और मृत्यु के बाद भी मृत आत्माओं के कल्याण के लिए वरदान मांग रहे हो. तुम्हारी इस कल्याणकारी भावना से हम सब बंध गए हैं।

भगवान ने आशीर्वाद दिया कि जहां गया स्थापित हुआ वहां पितरों के श्राद्ध-तर्पण आदि करने से मृत आत्माओं को पीड़ा से मुक्ति मिलेगी. क्षेत्र का नाम गयासुर के अर्धभाग गया नाम से तीर्थ रूप में विख्यात होगा. मैं स्वयं यहां विराजमान रहूंगा। इस तीर्थ से समस्त मानव जाति का कल्याण होगा।साथ ही वहा भगवान "श्री विष्णुजी ने अपने पेर का निशान स्थापित किया जो आज भी वहा के मंदिर मे दर्शनीय हे ।

गया विधि के अनुसार श्राद्ध फल्गू नदी के तट पर विष्णु पद मंदिर में व अक्षयवट के नीचे किया जाता है।

वह स्थान बिहार के गया में हुआ जहां श्राद्ध आदि करने से पितरों का कल्याण होता है।

पिंडदान की शुरुआत कब और किसने की, यह बताना उतना ही कठिन है जितना कि भारतीय धर्म-संस्कृति के उद्भव की कोई तिथि निश्चित करना। परंतु स्थानीय पंडों का कहना है कि सर्व प्रथम सतयुग में ब्रह्माजी ने पिंडदान किया था।

महाभारत के 'वन पर्व' में भीष्म पितामह और पांडवों की गया-यात्रा का उल्लेख मिलता है। श्रीराम ने महाराजा दशरथ का पिण्ड दान यहीं (गया) में किया था। गया के पंडों के पास साक्ष्यों से स्पष्ट है कि मौर्य और गुप्त राजाओं से लेकर कुमारिल भट्ट, चाणक्य, रामकृष्ण परमहंस व चैतन्य महाप्रभु जैसे महापुरुषों का भी गया में पिंडदान करने का प्रमाण मिलता है। गया में फल्गू नदी प्रायः सूखी रहती है। इस संदर्भ में एक कथा प्रचलित है।

# दिल्ली में प्रशासनिक अधिकारियों (आईएएस) को सौंपा गया अन्य विभागों का अतिरिक्त कार्य भार चार्ज, जाने

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
SERVICES DEPARTMENT: SERVICES-I BRANCH
DELHI SECRETARIAT: 5TH LEVEL: B-WING
I.P. ESTATE: NEW DELHI
http://services.delhi.gov.in
Tel: 011 – 23392038

No.F.8/02/2024/S.I Dated: 08.09.2025

ORDER No. 331

Hon'ble Lt. Governor, Delhi is pleased to order transfer and posting of IAS and DANICS officers, with immediate effect as given below:-

| Sl. No. | Name & Designation | Present posting | Posted as |
|---|---|---|---|
| 1. | **Prashant Goyal,** IAS (AGMUT:1993) | Financial Commissioner | In addition to Financial Commissioner, the officer will also hold the additional charges of ACS (Food & Civil Supplies) & CMD (DFC) |
| 2. | **Sandeep Kumar** IAS (AGMUT:1997) | Pr. Secretary (Vigilance) with additional charge of Pr. Secretary (AR) Pr. Secretary (IT) & Pr. Secretary (Envt. & Forest) | Pr. Secretary (Vigilance) with additional charge of Pr. Secretary (AR), Pr. Secretary (IT) & Chairman (DPCC) |
| 3. | **Neeraj Semwal** IAS (AGMUT:2003) | Secretary Revenue-cum-Divisional Commissioner with the additional charge of Secretary (Land & Building) | In addition to Secretary Revenue-cum-Divisional Commissioner with the additional charge of Secretary (Land & Building), the officer will also hold the additional charge of Secretary (Power) |
| 4. | **Shurbir Singh** IAS (AGMUT:2004) | Secretary (Finance) with additional charges of Secretary (GAD) and Secretary (Power) | Secretary (Finance) with the additional charge of Development Commissioner |
| 5. | **Pandurang K. Pole** IAS (AGMUT:2004) | Secretary (Higher Education & TTE) with additional charge of Secretary (UD) | Secretary (Higher Education & TTE) with the additional charge of Secretary (Education) |
| 6. | **Vijay Kumar Bidhuri,** IAS (AGMUT:2005) | Awaiting posting | Secretary (Urban Development) with the additional charge of Secretary (Environment & Forests) |
| 7. | **Ashok Kumar** IAS (AGMUT:2006) | Secretary (Education) | Secretary (GAD) |

-2-

No.F.8/02/2024/S.I Dated: 08.09.2025

| | | | |
|---|---|---|---|
| 8. | **Shilpa Shinde** IAS (AGMUT:2006) | Development Commissioner with the additional charges of Secretary-cum-Commissioner (Labour) and Secretary (Cooperation) | Secretary-cum-Commissioner (Labour) with the additional charge of Secretary (Cooperation) |
| 9. | **Sandeep Kumar Singh** IAS (AGMUT:2011) | Special Secretary to Chief Minister | In addition to Special Secretary to Chief Minister, the officer will also hold additional charge of Special Secretary (Finance) |
| 10. | **Ravi Jha** IAS (AGMUT:2011) | Commissioner (Excise) | In addition to Commissioner (Excise), the officer will also hold the additional charge of Special Secretary (PWD) |
| 11. | **Jitendra Kumar Jain** IAS (AGMUT:2013) | Special Director (Employment) | In addition to Special Director (Employment), the officer will also hold the additional charge of Commissioner (Food Safety) |
| 12. | **Dr. Kinny Singh** IAS (AGMUT:2014) | Special Secretary (Health & Family Welfare) with the additional charge of Project Director (DSACS) and Secretary (PGC) | Member (Administration) Delhi Jal Board |
| 13. | **Sanjeev Kumar** IAS (AGMUT:2014) | Special Secretary (AR Department) with the additional charge of Special Secretary (SC/ ST/ OBC/ Minorities) | Special Secretary (Health & Family Welfare) |
| 14. | **Ravi Dadhich,** IAS (AGMUT:2014) | Special Secretary (Power) with additional charges of MD (IPGCL) and MD(PPCL) | In addition to Special Secretary (Power) with additional charges of MD (IPGCL) and MD(PPCL), the officer will also hold the additional charge of Special Secretary (IT) |
| 15. | **Yash Chaudhary** IAS (AGMUT:2017) | Director (Social Welfare) | In additional to Director (Social Welfare), the officer will also hold the additional charge of Special Secretary (SC/ ST/ OBC/ Minorities) |
| 16. | **Praveer Kumar Singh,** (DANICS:2014) | Superintendent (Prisons) | Executive Director (DSIIDC) |

(BHAIRAB DUTT)
DEPUTY SECRETARY (SERVICES)

-3-

No.F.8/02/2024/S.I Dated: 08.09.2025

Copy to the:
1. Principal Secretary to Lt. Governor, Delhi.
2. Secretary to Chief Minister, Delhi.
3. Secretary to Speaker, Delhi Vidhan Sabha, Delhi.
4. Secretaries to all Ministers, Govt. of NCT of Delhi.
5. OSD to Leader of Opposition, Delhi Vidhan Sabha, Delhi.
6. Staff Officer to Chief Secretary, Govt. of NCT of Delhi.
7. All Additional Chief Secretaries / Principal Secretaries /Secretaries / Head of Departments Local Bodies / Public Undertakings, GNCT of Delhi.
8. All Officers concerned.
9. Section Officer (Coordination), Services Department, Govt. of NCT of Delhi - *with the request to upload this order on website of Services Department.*
10. Section Officer (S-I/APAR), Confidential Cell, Services Department, GNCTD.
11. PAO concerned, GNCTD.
12. Guard file/Personal file.

**Copy forwarded to the:**

1. Under Secretary (UTS-I), Govt. of India, Ministry of Home Affairs, Room No. 34049, 4th floor, work hall, Kartavya Bhawan-3, New Delhi-110001.
2. Research Officer, Career Management Division, Govt. of India, Department of Personnel and Training, CCS-03 Building, Janpath, New Delhi.

(BHAIRAB DUTT)
DEPUTY SECRETARY (SERVICES)

# एलजी विनय सक्सेना की अध्यक्षता में हुआ संवाद, पब्लिक-प्राइवेट भागीदारी से दिल्ली को मिलेगी स्वच्छता को नई गति

सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** राजधानी को स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण-मुक्त बनाने के उद्देश्य से 'Rejuvenating Yamuna & Delhi – A CSR Dialogue' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माननीय उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में उद्योग जगत, मल्टीनेशनल कंपनियों, कॉर्पोरेट्स और सार्वजनिक उपक्रमों के प्रमुखों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में आधुनिक तकनीक आधारित सीवर ट्रीटमेंट, दीर्घकालिक पर्यावरणीय कार्य संस्कृति और CSR कॉर्पस फंड जैसे समाधान केंद्र बिंदु रहे। यमुना की निर्मलता, कचरा-मुक्त वातावरण और स्वच्छ हवा पर सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से ठोस कार्रवाई पर विस्तृत चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली कहा कि सरकार यमुना प्रदूषण, कचरे के पहाड़ और वायु प्रदूषण जैसी समस्याओं के समाधान हेतु युद्धस्तर पर कार्य कर रही है। बनसेरा, असीता और वाटिका जैसे प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि जब इच्छाशक्ति हो, तो परिवर्तन संभव है।

सरकार का लक्ष्य सभी स्टेकहोल्डर्स के सामूहिक प्रयासों से दिल्ली को स्वच्छ, सुंदर और हरित बनाना है। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री प्रवेश साहिब सिंह और कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

# केशवपुरम के सामुदायिक भवन में वाल्मीकि महापंचायत का हुआ आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली:** दिल्ली के केशवपुरम इलाके के सामुदायिक भवन में वाल्मीकि महापंचायत का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली नगर निगम समस्त यूनियन कोर कमेटी एवं ऑल इंडिया वाल्मीकि यूथ फ्रंट ने संयुक्त रूप से किया।

इस मौके पर ऑल इंडिया वाल्मीकि यूथ फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष खन्ना ढिकोलिया, दिल्ली सफाई कर्मचारी आयोग के चेयरमैन संजय गहलोत, कोर कमेटी के अध्यक्ष नरेश पिव्हाल, कोर कमेटी के प्रधान महासचिव संत लाल चावरिया, संयोजक रामकुमार बिडलान, महामंत्री कप्तान सिंह ढीका, पवन टॉक, प्रिंस गोपी, दीपक झिंगाला, ब्रहम पार्चा, त्रिलोक चंद टॉक, राम रतन, ओमदत्त चंडालिया, अनिल बाजीत पुरिया, कुलदीप, जयभगवान, दिलीप पार्चा, धर्म सिंह गहरोलिया, सीमा चंदेलिया, रेखा टॉक, मीना लुक्खड, राजरानी मौजूद रहे। इस अवसर पर जानकारी देते हुए ऑल इंडिया वाल्मीकि यूथ फ्रंट के अध्यक्ष खन्ना ढिकोलिया ने बताया कि इस महापंचायत में कई मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया।

स्टॉल प्रस्ताव:
सिंगल साइड ओपन स्टोल: 2000
कॉर्नर साइड स्टोल: 3500
तीन साइड ओपन स्टोल: 4500
सिर्फ एक टेबल: 1000
सिर्फ दो टेबल: 1250

कार्यक्रम विवरण:
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान: डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें: 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार: 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ:
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें:
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क: इंदु राजपूत
मोबाइल: 9210210071

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:
- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान:
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण:
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र:
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।


## उत्तर-पश्चिम दिल्ली की हैदरपुर नहर में दो लड़के डूबे

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम दिल्ली के शालीमार बाग इलाके की हैदरपुर नहर में दो लड़कों की डूबने से मौत हो गई। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। मृतकों की पहचान अनिकेत (9) और कृष्ण कुमार (13) के रूप में हुई है, जो शालीमार बाग में आयुर्वेदिक अस्पताल के पास झुग्गियों में रहते थे। पुलिस ने बताया कि लड़के रविवार दोपहर हैदरपुर नहर के पास गए थे, लेकिन दुर्घटनावश फिसलकर पानी में गिरे और डूब गए। पुलिस ने बताया कि घटना के संबंध में रात करीब 10.17 बजे पीसीआर (पुलिस नियंत्रण कक्ष) को फोन आया, जिसके बाद लड़कों को बीजेआरएम अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पुलिस के अनुसार, अनिकेत तीन भाइयों में सबसे छोटा था और उसके परिवार में उसके पिता और दो बड़े भाई हैं। कुमार के परिवार में उसके पिता, दो भाई और एक बहन हैं। अधिकारी ने कहा, 'दोनों के पिता दिहाड़ी मजदूर हैं और घटना के समय वे काम पर गए हुए थे।'

जांचकर्ताओं ने कहा कि लड़के वयस्कों की निगरानी के बिना जलाशय के करीब चले गए थे और प्रथम दृष्टया यह दुर्घटनावश डूबने का मामला प्रतीत होता है। अधिकारी ने बताया कि घटना के क्रम को समझने के लिए परिवारों और स्थानीय लोगों के बयान दर्ज करने के लिए पुलिस टीमों को तैनात किया गया है। पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

# भारत का 'डिजिटल डायमंड': वैश्विक ताकत का नया प्रतीक

हरीश शिवनानी

बात इसी 15 अगस्त की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से एलान किया कि भारत का पहला 'मेड इन इंडिया' सेमीकंडक्टर चिप इसी साल के अंत तक बाजार में आ जाएगा। इस एलान को अभी बमुश्किल एक पखवाड़ा ही बीता कि भारत के वैज्ञानिकों ने दो सितंबर को अपनी पहली पूरी तरह स्वदेशी 32-बिट माइक्रोप्रोसेसर चिप 'विक्रम' लॉन्च करके एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली। ऐतिहासिक इसलिए कि यह महज एक छोटी चिप मात्र नहीं है बल्कि निकट भविष्य में ही भारत को एक वैश्विक शक्ति बनाने का मुख्य स्रोत है, क्योंकि आने वाली दुनिया की दशा और दिशा को सेमीकंडक्टर चिप्स ही संचालित करेगी। इसलिए यह अकारण नहीं कि मोदी ने इस नन्ही चिप को 'डिजिटल डायमंड' घोषित किया है। इस चिप को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो की सेमीकंडक्टर लैब ने विकसित किया है। इसे विशेष रूप से अंतरिक्ष मिशनों और रॉकेट लॉन्च की कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये चिप्स न केवल भारतीय उद्योग जगत का नक्शा बदल देंगी अपितु युद्ध तकनीकी को भी सातवें आसमान पर पहुंचा देंगी। 'डिजिटल डायमंड' भारत की वैश्विक ताकत होने का नया प्रतीक है।

भविष्य के युद्ध तोप और टैंकों से नहीं, इन्हीं माइक्रोचिप्स से लड़े जाएंगे। माइक्रोचिप्स आधुनिक तकनीक का आधार हैं। स्मार्टफोन से लेकर मिसाइलों तक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) से लेकर ड्रोन तक, हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैश्विक सेमीकंडक्टर बाजार 2025 में 600 अरब डॉलर का हो चुका है और 2030 तक इसके 1,000 अरब डॉलर से अधिक होने की उम्मीद है। यही सेमीकंडक्टर उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया में और ऊंचे स्थान पर ले जाएगा। यही वजह है कि चिप निर्माण के इको सिस्टम को और मजबूत बनाने के लिए सरकार इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आइएसएम) के दूसरे चरण के लिए काम कर रही है। इसके तहत स्वीकृत परियोजनाओं की संख्या अब 10 हो गई है, जिनमें छह राज्यों में चिप से जुड़े पूरे इको सिस्टम को कवर किया जाएगा और इंसेंटिव भी दिए जाएंगे। पहले चरण के तहत भारत सरकार ने सेमीकंडक्टर से जुड़े प्लांट को 75,000 करोड़ से अधिक के इंसेंटिव देने का प्रविधान किया था। इनमें से 65,000 करोड़ चिप के निर्माण तो 10,000 करोड़ मोहाली स्थित सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला के आधुनिकीकरण के लिए आवंटित किए गए। इन यूनिटों में आटो सेक्टर से लेकर बिजली, इलेक्ट्रानिक्स, उपभोक्ता वस्तु व रक्षा सभी जगह पर इस्तेमाल होने वाले चिप का निर्माण होगा। फ़िलहाल 28 स्टार्टअप चिप डिजाइनिंग के सेक्टर में काम कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय मांग के आधार पर इनको पूरा प्रोत्साहन भी मिल रहा है। चिप निर्माण एक बेहद जटिल प्रक्रिया है। चिप निर्माण में 500 केमिकल्स और 50 प्रकार की गैसों का उपयोग होता है और इन सभी के निर्माण के लिए भारत में फैक्ट्रियां लगाई जा रही हैं। भविष्य में चिप निर्माण से जुड़ी मशीनें भी भारत में बनेंगी। अभी विक्रम 3201 की साइज़ तुलनात्मक रूप से काफी बड़ी कही जा सकती है लेकिन यह चिप आम जनता के लिए नहीं, अंतरिक्ष यानों और रक्षा संबंधी उपकरणों के प्रयोजन की है।

वर्तमान में सबसे छोटी साइज की सेमीकंडक्टर चिप 2 नैनोमीटर की है। इसे ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी द्वारा बनाई जा रही है। हालांकि 2 नैनोमीटर नैनोशीट तकनीक पर आधारित दुनिया की पहली चिप का प्रोटोटाइप आईबीएम ने तैयार किया। यह चिप 50 बिलियन ट्रांजिस्टर को एक नाखून के आकार के चिप में समेट सकती है और यह आज की 7 नैनोमीटर चिप्स की तुलना में 45 प्रतिशत से अधिक प्रदर्शन और 75 फीसदी कम ऊर्जा खर्च करती है।

भारत में भी छोटी चिप्स के विकास की दिशा में प्रगति हो रही है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु एंग्स्ट्रॉम-स्केल (लगभग 0.1 नैनोमीटर) चिप विकसित करने पर काम कर रहा है, जो मौजूदा 2 नैनोमीटर चिप्स से भी 10 गुना छोटी होगी। यह परियोजना अभी प्रारंभिक चरण में है। भारत में ही रेनेसास इलेक्ट्रॉनिक्स (जापान) नोएडा और बेंगलुरु में 3 नैनोमीटर चिप डिजाइन पर काम कर रही है। इस प्रकार, चिप निर्माण का पूरा इको सिस्टम हजारों रोजगार के अवसर पैदा करेगा और दुनिया को कुशल श्रमिकों की सप्लाई करेगा। बावजूद इसके, अभी भारत को बहुत लंबा सफ़र तय करना है। क्योंकि वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग पर ताइवान, अमेरिका, दक्षिण कोरिया, चीन और जापान का वर्चस्व है। भारत अभी इस दौड़ में नया है और उत्पादन में इसकी हिस्सेदारी मात्र 0.1 फीसदी है। भविष्य के लिए भारत की योजनाएँ बहुत महत्वाकांक्षी हैं, जिसमें 2030 तक अपने बाजार को 100 बिलियन डॉलर तक पहुँचाना और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में उभरना शामिल है। अब सरकारी समर्थन और बड़े पैमाने पर निवेश से भारत के सेमीकंडक्टर क्षेत्र के तेजी से विकास की उम्मीद बंधी है। भारत में इंजीनियरिंग, विज्ञान और गणित में हर वर्ष 25 लाख से अधिक युवा ग्रेजुएट होते हैं जोकि किसी अन्य देश की तुलना में काफी अधिक है। जाहिर है, ये युवा हो 'डिजिटल डायमंड' के माध्यम से भारत को वैश्विक शक्ति बनाने का दम रखते हैं।


सूचना/ आवश्यकता है

आउटसोर्सिंग के माध्यम से मेरठ मण्डल के विभिन्न राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्य करने हेतु चतुर्थ श्रेणी कार्मिकों की। पदों की संख्या 481, आवेदन प्रारम्भ होने की तिथि 30 अगस्त 2025 व अंतिम तिथि 14 सितम्बर 2025.
सेवा प्रदाता ए2 जेड मल्टीसर्विसेज एण्ड आई०टी० सल्यूशंस प्रा०लि० पर पदों की विस्तृत जानकारी एवं विवरण www.sewayojan.up.nic.in उपलब्ध है, इच्छुक अभ्यर्थी अधिक से अधिक संख्या में सेवायोजन पोर्टल पर आवेदन करें। साक्षात्कार की सूचना अलग से ई-मेल एवं SMS के माध्यम से दी जायेगी।

भारतीय जन संचार संस्थान
Indian Institute of Mass Communication
(A Deemed to be University)
Aruna Asaf Ali Marg, JNU New Campus, New Delhi 110 067
(Advt. No. 01/2025)

The Indian Institute of Mass Communication (IIMC), Deemed to be University under the Ministry of Information & Broadcasting, Government of India with its main campus in New Delhi and Regional Campuses at Aizawl, Amravati, Dhenkanal, Jammu, and Kottayam, invites ONLINE applications from eligible candidates for 01 Post of Professor and 20 posts of Assistant Professor in the field of Mass Communication

Details of Proforma for application, pay scale, eligibility qualifications, etc. are available in vacancy section of the Indian Institute of Mass website on the http://www.iimc.gov.in/vacancy

The last date to submit Online applications: 6th October, 2025
CBC 22103/11/0003/2526

Government of Karnataka
KARNATAKA GOVERNMENT SECRETARIAT
MS Building, Dr B R Ambedkar Veedhi, Bengaluru.
No: RD/493/TNR/2024(P8) Date: 6th Sept 2025

RE - NOTIFICATION REGARDING ENGAGEMENT OF CONSULTANTS/SPECIALIST FOR THE KWSRP-PMU

**Subject:** Advertisement for engaging Consultants for the Project Management Unit (PMU) established in the Revenue Department (Disaster Management) for effective monitoring and implementation of the World Bank-funded Karnataka Water Security and Resilience Program (KWSRP).

The World Bank-funded Karnataka Water Security and Resilience Program (KWSRP) is being implemented across the State. The overarching objective of the Program is to enhance disaster resilience through a combination of structural and non-structural measures. The initiative seeks to develop climate-resilient infrastructure to mitigate the impacts of floods and droughts, while also strengthening disaster risk governance and resilience mechanisms.

The Revenue Department (Disaster Management) Government of Karnataka, invites applications from qualified and experienced professionals for the following positions:
1. Environment Specialist-1 position.
2. Social Development Specialist -1 position.
3. Disaster Risk Management & Mitigation Specialist-1 position.
4. Technical Specialist-Civil/Structural Engineering-1 position.

The detailed terms of reference, eligibility criteria, and other conditions for engagement of the above positions are available in the Terms of Reference (ToR) and may be seen on the KSNDMC **website: https://www.ksndmc.org/default.aspx.**

1. Applications, along with the relevant supporting documents, should be submitted by email to **jsrdssp@gmail.com,** latest by **17/09/2025.**
2. Incomplete applications will not be considered. The Revenue Department (Disaster Management) reserves the right to reject any application without assigning a reason.
3. The qualified candidates will be shortlisted and called for interview for final selection.

For any queries, contact - The Joint Secretary, Revenue Department (KAT, SSP and PP). Ph: 080-22032010.

**Sd/- (G. Venkatesh)**
**Joint Secretary,**
**Revenue Department (KAT, SSP and PP)**
DIPR/CP/SHIRDI SAI/2678/2025-26

# प्रधानमंत्री मोदी ने सांसदों से स्वदेशी मेला आयोजित कर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की अपील की

परिवहन विशेष न्यूज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनडीए सांसदों से स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने और उन्हें जनता तक पहुंचाने के लिए स्वदेशी मेला आयोजित करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि हाल ही में जीएसटी दर में कटौती से बाजार में सकारात्मक माहौल बना है, जिसे आम जनता तक प्रभावी रूप से पहुंचाना आवश्यक है। पीएम मोदी ने स्वनिधि योजना के विस्तार पर भी जोर देते हुए गरीबों और छोटे व्यापारियों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने की बात कही। उन्होंने सांसदों से आग्रह किया कि वे इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाएं ताकि आर्थिक समावेशन और स्थानीय व्यवसायों को मजबूती मिल सके।

# राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल पटेल (सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री-भारत सरकार) से मिले प्रदेश अध्यक्ष उड़ीसा

प्रदेश में संगठन के सुदृढ़ता व अन्य जरूरी रणनीतियों पर विस्तार पूर्वक चर्चा

**राउरकेला** - राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के ओड़शिा प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर राजकुमार यादव नई दिल्ली दौरे के दौरान अन्य पदाधिकारीयों सहित राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल (सांसद व पूर्व केंद्रीय मंत्री-भारत सरकार) से उनके आवासीय कार्यालय पर मिले व संगठन की सुदृढ़ता एवं अन्य रणनीतियों पर जरूरी दिशा निर्देश प्राप्त किया1 बैठक के दौरान उड़ीसा में राष्ट्रीय कार्यकारिणी का प्रस्ताव रखा, पूर्णांग कमेटी सौंपने पर चर्चा की व अन्य जरूरी मुद्दों पर बात रखते हुए ओड़शिा प्रदेश दौरे का प्रस्ताव रखा 1 वहीं प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर यादव ने कहा कि ₹उड़ीसा में हमारे पार्टी के विस्तार की संभावनाएं बहुत है, कारण पहले भी हमारे दल से चार विधायक रह चुके हैं व एक लोकसभा की सीट हमने 5000 वोटो के मामूली अंतर से गवाई थी 1 चुनाव के किसी भी प्रणाली में हम शामिल होंगे व पार्टी अपने दमखम से चुनाव लड़ेगी एंव विजय पताका फहराएगी1 कई प्रमुख चेहरे हमारे मंच में आने को तैयार बैठे हैं समय आने पर इसका खुलासा किया जाएगा व परिपक्व रणनीति के तहत पार्टी चुनाव में उतरेगी1 राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष को उड़ीसा के विभिन्न भागों भौगोलिक स्थिति व स्थानीय नेताओं के जनाधार के विषय में अच्छी जानकारी है जिसका हमें उचित लाभ चुनाव में मिलेगा"

# बजरडीहा वाराणसी जोल्हा दक्षिणी वार्ड नंबर 27 में महिनों से जमा गंदे पानी से बढ़ने लगी बिमारियां

वसीम अहमद जिला वाराणसी संवाददाता
पुर्व मिडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश

वाराणसी बजरडीहां क्षेत्र में जबरदस्त गंदगी से जुझ रहे लोग दहशत में जी रहे हैं बजरडीहा अंबा क्षेत्र में जबरदस्त बारिश के गन्दे पानी से बढ़ने लगी दुश्वारियां डायरियां चीकन मुनिया कालरा जैसी गंभीर बिमारियां पैदा होने लगा है काफी मुश्किल दौर से गुज़र रहें हैं लोग जगह जगह पानी भरने से पानी से बदबू के साथ साथ लोगों के घरों में बिमारियां बढ़ने लगा है छोटे बड़े सभी लोग बिमार हो रहें हैं पुरे बजरडीहॉ क्षेत्र वार्ड में जगह जगह गंदगी और सीवर जाम से गलियां और रोड की स्थिति काफी खराब है अंबा क्षेत्र में खुले मैदान में महिनों से जमा पानी में मच्छरों का प्रकोप जो खतरनाक साबित होते जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्व मिडिया प्रभारी वसीम अहमद ने जिला अधिकारी से अपील करते हुए कहा कि बजरडीहा क्षेत्र में जल्द से जल्द दवा का छिड़काव और दवा का कैंप लगाया जाएं ताकि क्षेत्र में फैल रहें बिहारियों को रोका जा सके।

बजरडीहा क्षेत्र में कई ऐसे मोहल्ले है जो काफी मुश्किल में दिखाई दे रहे हैं अहमद नगर कोल्हुआ आजाद नगर जक्खा फारुकी नगर उचवां अंबा कुआं के पास लगभग कई महिनों से जमा सीवर का गन्दा जों क्षेत्र में डायरियां से दो बच्चों की मौत भी हो चुकी है जिससे क्षेत्र में दहशत का माहौल बना हुआ है।

## मंथन साहित्य परिवार और हमारे बीच सेतु बंधन थे, बच्चू लाल जी दीक्षित

एक समय था जो हमारे साथ सदैव परछाई बनकर हमारे साथ रहता थे तथा रचना लिखने के लिए प्रेरित करते रहते थे ।सकारात्मक ऊर्जा से लगातार हमें ऊर्जावान बनाए रखने में सहायक होते हुए मार्गदर्शक के रूप में मिल के पत्थर की तरह दिखाई देते थे ।आज वही रचनाकार अपनी सारी ऊर्जा समेट कर हमारा साथ छोड़कर अचानक चले गया ।निश्चित ही एक दुखद खबर है ।बच्चू लाल जी दीक्षित की यादों को अतीत के झरोखों से अब हम सदैव देखते रहेंगे ।यह इसलिए लिख रहा हूं कि , जिनको वर्तमान में हमने खोया है उनकी कमी एक शब्द की तरह खल रही है जो कहीं विचारों में खोकर किसी कल्पना का इंतजार कर रहे हैं ।यूं तो हर रोज कोई ना कोई तो विषय मिल हीं जाता है लिखने के लिए लेकिन , कभी विषय ऐसा मिल जाता है जिस पर चाह कर भी कुछ लिखना नहीं होता है परंतु प्रकृति के विरुद्ध भी तो नहीं जाया जा सकता है ।मंथन साहित्य परिवार में एक ऐसी घटना घटित हो गई जिस कलम चाह कर भी अपने आप को उनके विशाल व्यक्तित्व और लेखन के बारे में लिखने से रोक नहीं पा रही ऐसा ही आज का विषय कहूं या कोई प्रसंग कहूंगा या फिर उस कलमकार पर लिखूं यह मेरे लिए लिखना संभव नहीं है ।मंथन साहित्य परिवार के आधार स्तंभ बच्चू लाल जी दीक्षित हमारे बीच नहीं रहे । बस उनकी शेष , अशेष याद के साथ स्मृतियों के पल में वह ठहर गए हैं ।मंथन साहित्य परिवार के इस विशाल व्यक्तित्व पर क्या लिखूं , क्या नहीं लिखूं कुछ समझ नहीं आ रहा है ।कलम उठाकर किसी शब्दो से बातचीत करना चाहता हूं या फिर लिखना चाहता हूं वह इस खबर से उदास है ।दुखी है ।परन्तु यह सत्य है की , मृत्यु निश्चित है और शरीर क्षणभंगुर है मगर जो शरीर क्षणभंगुर था वह हमारे परिवार के लिए किसी चंदन या कोई अनमोल मिट्टी से काम नहीं था जो हमारा ललाट पर प्रतिदिन किसी विचार को लेकर चमकता रहता था ।प्रातः काल होते ही किसी समाचार पत्र में किसी रचनाकार की रचना प्रकाशित होती थी तो बच्चू लाल जी दीक्षित उसे उस रचनाकार तक पहुंचा देते थे प्रकाशित रचना जब पहुंचती तो उसे रचनाकार की खुशी दुगनी हो जाती थी आज वह खुशी बांटने वाला खुशी-खुशी कालचक्र के साथ हमें यूं अचानक छोड़कर चला गया और हमें दुखी कर गया परंतु मंथन साहित्य परिवार और हमारे बीच एक सेतु बंधन बनाकर चला गया इसलिए कि , वह साहित्यीक जीवन धारा में आने वाले शब्द , विचार , कल्पनाओं को जहां नाई रहा के साथ दिशा मिलती रहेगी ।अंत में बच्चू लाल जी दीक्षित के बारे में यही कहना चाहता हूं की आपकी किसी प्रतीक्षा में , इंतजार में शब्दों की खोज में साहित्य की यात्रा प्रारंभ रहेगी यही हमारे सच्चे श्रद्धांजलि होगी ।

-प्रकाश हेमावत

# कांग्रेसी पिछले पांच दिन कर रहे हैं पीड़ित मानवता की सेवा

बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत शिविरों में जाकर कर रहे भोजन, बेडशीट, चिड़वा, चना एवं बिस्किट का वितरण

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** इन दिनों यमुना नदी में आयी भयंकर बाढ़ के पांचवें दिन कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष सोहन सिंह सिसोदिया के नेतृत्व में समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओं के द्वारा गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रांगण में बने राहत शिविर में सभी बाढ़ पीड़ितों को चद्दर, बेडशीट वितरित की गई ।इसके अलावा श्रीमती सुवटी देवी झुनझुनवाला अग्रवाल उ.मा. विद्यालय व मोदी भवन में बाढ़ पीड़ितों को सुबह 8:00 बजे चिड़वा-मूढी और चना एवं बिस्किट आदि का वितरण किया गया।

वरिष्ट कांग्रेस नेता सोहन सिंह सिसोदिया ने कहा कि तीनों राहत शिविरों में बाढ़ पीड़ितों के लिए यह सेवा पिछले पांच दिन से निस्वार्थ भाव से निरन्तर की जा रही है ।यह सेवा पीड़ित मानवता की सेवा के लिए है ।जिसके लिए प्रतिदिन सभी कांग्रेस कार्यकर्ता जगह-जगह पीड़ितों के लिए भोजन की व्यवस्था कर रहे हैं। इस अवसर पर ठाकुर संग्राम सिंह, श्यामसुंदर धानुका, वैभव गौतम, पाखी, रामबाबू शर्मा, महेश गौतम, प्रदेश सचिव प्रकाश शर्मा, चो. योगेंद्र पाल सिंह लांबा, यश प्रताप सिसोदिया, ब्रजराज मिश्रा, नत्थों प्रजापति आदि की उपस्थिति विशेष रही।

# ई-कॉमर्स और वेयरहाउस मैनेजमेंट: नई चुनौतियाँ और अवसर --- संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

भारत में डिजिटल क्रांति और इंटरनेट के तीव्र प्रसार ने खुदरा व्यापार की पूरी तस्वीर बदल दी है। आज उपभोक्ता अपने मोबाइल फोन से एक क्लिक में देश-विदेश के उत्पाद घर बैठे मंगवा सकते हैं। इसी बदलाव का सबसे बड़ा आधार है ई-कॉमर्स और उससे जुड़ा आधुनिक वेयरहाउस मैनेजमेंट। एक समय था जब वेयरहाउस केवल माल जमा करने का स्थान होता था, लेकिन आज यह सप्लाई चेन का सबसे अहम हिस्सा बन चुका है। खासतौर पर ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए गोदाम प्रबंधन केवल भंडारण का नहीं, बल्कि तेज़, सटीक और कुशल डिलीवरी सुनिश्चित करने का ज़रिया है।

ई-कॉमर्स के दौर में उपभोक्ताओं की अपेक्षाएँ बदल चुकी हैं। अब वे केवल अच्छी गुणवत्ता के उत्पाद ही नहीं चाहते, बल्कि त्वरित डिलीवरी, पारदर्शी ट्रैकिंग और लचीले रिटर्न की भी उम्मीद करते हैं। इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए वेयरहाउसिंग सिस्टम में बड़े पैमाने पर तकनीकी निवेश की आवश्यकता होती है। पारंपरिक गोदाम व्यवस्था, जहां माल को लंबे समय तक एक ही स्थान पर रखा जाता था, अब प्रासंगिक नहीं रही। आधुनिक वेयरहाउस मैनेजमेंट में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, ड्रोन तकनीक और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, जिससे न केवल इन्वेंटरी की सटीकता बढ़ती है बल्कि डिलीवरी की गति भी कई गुना तेज़ होती है।

इस परिवर्तन के साथ कई चुनौतियाँ भी उभर रही हैं। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में लॉजिस्टिक्स नेटवर्क का विकास आसान नहीं है। ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी इलाकों में सड़क, बिजली और इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी वेयरहाउस संचालन को प्रभावित करती है। साथ ही, उपभोक्ताओं की बढ़ती संख्या के हिसाब से पर्याप्त आधुनिक वेयरहाउसिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराना भी एक कठिन कार्य है। शहरी क्षेत्रों में भूमि की बढ़ती कीमत और स्थान की कमी के कारण वेयरहाउस स्थापित करना महँगा हो गया है। ई-कॉमर्स कंपनियों को तेज़ डिलीवरी के लिए शहरों के नज़दीक छोटे-छोटे फुलफिलमेंट सेंटर्स बनाने पड़ रहे हैं, जिससे लागत में वृद्धि होती है।

इन चुनौतियों के बावजूद अवसरों की कमी नहीं है। भारत का वेयरहाउसिंग सेक्टर तेजी से निवेश आकर्षित कर रहा है। रियल एस्टेट कंपनियाँ और लॉजिस्टिक्स प्रदाता मिलकर बड़े-बड़े स्वचालित वेयरहाउस बना रहे हैं। मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी सरकारी पहलें इस विकास को गति दे रही हैं। जीएसटी लागू होने के बाद राज्यवार अलग-अलग गोदाम रखने की बाध्यता समाप्त हो गई, जिससे कंपनियाँ अब रणनीतिक रूप से कुछ बड़े वेयरहाउस स्थापित कर देशभर में आपूर्ति कर सकती हैं।

ई-कॉमर्स और वेयरहाउस मैनेजमेंट के रिश्ते में तकनीक का महत्व सबसे ज्यादा है। इन्वेंटरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर से लेकर रियल टाइम ट्रैकिंग सिस्टम तक, हर स्तर पर ऑटोमेशन ने दक्षता में क्रांतिकारी सुधार किया है। अमेज़न, फ्लिपकार्ट जैसी कंपनियाँ रोबोटिक आर्म्स और स्वचालित कन्वेयर बेल्ट्स का उपयोग कर रही हैं, जिससे ऑर्डर पैकिंग और डिस्पैच में समय की भारी बचत होती है। भविष्य में ड्रोन के जरिए डिलीवरी और भी तेज़ होगी, और इसका सीधा असर

वेयरहाउस डिज़ाइन पर पड़ेगा। इसके अलावा कोल्ड स्टोरेज वेयरहाउस की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। ऑनलाइन ग्रॉसरी, फार्मास्यूटिकल्स और फूड डिलीवरी कंपनियों को तापमान नियंत्रित गोदामों की जरूरत है। भारत जैसे देश में जहां जलवायु विविध और कई जगह अत्यधिक गर्म है, वहां कोल्ड वेयरहाउसिंग का विस्तार एक बड़ा अवसर है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू है पर्यावरण अनुकूल वेयरहाउसिंग। ई-कॉमर्स की तेज़ डिलीवरी की दौड़ में कार्बन उत्सर्जन और पैकेजिंग कचरे जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं। अब कंपनियाँ ग्रीन वेयरहाउसिंग की दिशा में कदम बढ़ा रही हैं, जैसे सौर ऊर्जा का उपयोग, पुनः प्रयोज्य पैकेजिंग और ऊर्जा कुशल भवन डिज़ाइन। आने वाले समय में टिकाऊ विकास वेयरहाउसिंग सेक्टर का अभिन्न हिस्सा होगा। इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी तेजी से बढ़ रहे हैं। स्किल्ड वर्कफोर्स की जरूरत है जो ऑटोमेशन तकनीक को समझे और आधुनिक उपकरणों के साथ काम कर सके। सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउसिंग में स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चला रहे हैं। यह उन युवाओं के लिए भी सुनहरा अवसर है जो तकनीकी और प्रबंधन क्षेत्र में करियर बनाना चाहते हैं।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक सप्लाई चेन में भारत की भूमिका बढ़ रही है। इससे देश में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप वेयरहाउसिंग की मांग बढ़ेगी। ब्लॉकचेन तकनीक के माध्यम से डेटा सुरक्षा और पारदर्शिता सुनिश्चित करने की दिशा में भी काम हो रहा है। सीमा शुल्क और निर्यात प्रक्रियाओं में डिजिटलाइजेशन से अंतरराष्ट्रीय ई-कॉमर्स व्यापार को और गति मिलेगी। आने वाले समय में वेयरहाउस मैनेजमेंट केवल लॉजिस्टिक्स का हिस्सा नहीं रहेगा, बल्कि यह व्यापार रणनीति का केंद्र होगा। कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा इस बात पर निर्भर करेगी कि कौन अपनी सप्लाई चेन को सबसे तेज़, लचीला और लागत प्रभावी बना सकता है। उपभोक्ता अनुभव को बेहतर बनाने में वेयरहाउस की भूमिका निर्णायक होगी। कहा जा सकता है कि ई-कॉमर्स और वेयरहाउस मैनेजमेंट का रिश्ता एक दूसरे के पूरक के रूप में विकसित हो रहा है। चुनौतियाँ भले ही बड़ी हों—जैसे अवसंरचना की कमी, लागत का दबाव और पर्यावरणीय चिंताएँ— लेकिन अवसर उससे कहीं अधिक हैं। तकनीक, निवेश और नीति सुधारों के माध्यम से भारत का वेयरहाउसिंग सेक्टर न केवल घरेलू ई-कॉमर्स जरूरतों को पूरा करेगा, बल्कि वैश्विक व्यापार में भी अपनी मजबूत पहचान बनाएगा। जो कंपनियाँ समय रहते इस बदलाव को अपनाएँगी, वही आने वाले डिजिटल युग में अग्रणी बनेंगी।

# बढ़ती आत्महत्याओं की घटनाएं, एक वैश्विक चुनौती-रोकथाम की सख़्त आवश्यकता

## सभी देशों को आत्महत्या रोकथाम को अपनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का हिस्सा बनाना समय की माँग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर मानव सभ्यता की प्रगति के साथ -साथ मानसिक, सामाजिक और आर्थिक जटिलताएँ भी बढ़ती गई हैं। इन्हीं जटिलताओं से जुड़ा एक अत्यंत गंभीर विषय है, आत्महत्या। यह केवल किसी व्यक्ति का निजी निर्णय नहीं होता, बल्कि इसके पीछे सामाजिक मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का गहरा प्रभाव होता है। अंतरराष्ट्रीय स्तरपर आत्महत्या को सार्वजनिक स्वास्थ्य की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक माना जाता है ।विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार, हर साल लगभग 7 लाख लोग आत्महत्या करके अपनी जान गंवाते हैं, जिसका अर्थ है कि हर 40 सेकंड में एक व्यक्ति आत्महत्या करता हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इससे यह स्पष्ट होता है कि यह केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि वैश्विक संकट है। जिसका समाधान अब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सम्मिट बुलाकर करना समय की मांग है। बता दे भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम रणनीति की घोषणा की है। यह देश में अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है, जिसमें वर्ष 2030 तक आत्महत्या मृत्यु दर में 10 पर्सेंट की कमी लाने के लिये समयबद्ध कार्य योजना और बहु- क्षेत्रीय सहयोग शामिल है ।यह रणनीति आत्महत्या की रोकथाम के लिये विश्व स्वास्थ्य संगठन की दक्षिण-पूर्व एशिया क्षेत्र रणनीति के अनुरूप है।

साथियों बात अगर हम आत्महत्या क्या है और क्यों की जाती है ? किस देश में सबसे ज्यादा आत्महत्या होती है ?इसको समझने की करें तो, आत्महत्या का सामान्य अर्थ है, व्यक्ति द्वारा जानबूझकर अपनी जान लेना। यह निर्णय किसी क्षणिक आवेग का नहीं, बल्कि लंबे समय तक चले मानसिक और सामाजिक दबाव का परिणाम होता है। डब्लूएचओ की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, आत्महत्या करने वालों में से लगभग 77 पर्सेंट लोग निम्न और मध्यम आय वाले देशों से होते हैं, जहाँ मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ सीमित होती हैं और सामाजिक कलंक के कारण लोग मदद माँगने से कतराते हैं। आत्महत्या के मुख्य कारणों में डिप्रेशन, बाइपोलर डिसऑर्डर, सिज़ोफ्रेनिया, नशे की लत, तथा सामाजिक अलगाव प्रमुख हैं। इसके अलावा रिश्तों में असफलता, बेरोजगारी, आर्थिकw तंगी, घरेलू हिंसा और युवाओं पर शिक्षा व करियर का दबाव भी आत्महत्या के प्रमुख कारक हैं ।वैश्विक स्तर परआत्महत्या की दर हर देश में अलग-अलग है ।डब्ल्यूएचओ की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि लिथुआनिया दक्षिण कोरिया, रूस, गुयाना और जापान जैसे देशों में प्रति 1 लाख आबादी पर आत्महत्या दर सबसे अधिक दर्ज की गई है। उदाहरण के लिए, लिथुआनिया में यह दर लगभग 25.7 प्रति 1 लाख है, जबकि दक्षिण कोरिया में लगभग 20.2 प्रति 1 लाख। वहीं भारत और चीन जैसे देशों में कुल आत्महत्याओं की संख्या सबसे अधिक है, क्योंकि यहाँ जनसंख्या बहुत बड़ी है। भारत में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरब) 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, एक साल में 1.64 लाख से अधिक आत्महत्याएँ दर्ज की गईं, यानें हर दिन औसतन 450 से अधिक लोग आत्महत्या करते हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या दैनिक वेतन बोगियों, छात्रों और किसानों की है। जापान में आत्महत्या लंबे समय से सामाजिक समस्या रही है, जहाँ हर साल लगभग 20,000 से अधिक लोग जीवन समाप्त कर लेते हैं।

साथियों बात अगर हम आत्महत्या केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक चुनौती होने की करें तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह स्वीकार किया गया है कि आत्महत्या को केवल व्यक्तिगत समस्या मानना उचित नहीं है ।डब्ल्यूएचओ और अंतर्राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम संघ (आईएएसपी) के विशेषज्ञ मानते हैंकि आत्महत्या दरअसल मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का परिणाम है ।2021 में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा जारी एक रिपोर्ट में कहा गया कि आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं के पीछे गरीबी, सामाजिक असमानता, लैंगिक भेदभाव और शिक्षा का अभाव जैसी समस्याएँ भी प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं ।युवाओं मेंआत्महत्या की दर विशेष रूप से चिंताजनक है ।15-29 वर्ष आयु वर्ग में आत्महत्या मृत्यु का चौथा सबसे बड़ा कारण है। डिजिटल युग में साइबर बुलिंग, ऑनलाइन दबाव और सोशल मीडिया की अवास्तविक अपेक्षाएँ भी युवाओं को आत्महत्या की ओर धकेल रही हैं।

साथियों बात अगर हम आत्महत्या रोकने के उपायों की करें तो शोध और डेटा संग्रह आत्महत्या रोकथाम की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम है। डब्लूयुएचओ की ₹मेन्टल हेल्थ अटलस 2020₹ रिपोर्ट बताती है कि दुनियाँ के 80 पर्सेंट से अधिक देशों में आत्महत्या से संबंधित डेटा उपलब्ध नहीं है या अधूरा है। इससे नीतियों का निर्माण कठिन हो जाता है। आईएएसपी लगातार इस दिशा में अनुसंधान और प्रशिक्षण को बढ़ावा दे रहा है। अमेरिका और यूरोप के देशों ने आत्महत्या रोकथाम पर व्यापक शोध कियाe है, जिससे यह साबित हुआ है कि कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी (सीबीटी), साइकोसोशल सपोर्ट, हेल्पलाइन सेवाएँ और सामुदायिक सहयोग आत्महत्या रोकने में बहुत प्रभावी हैं ।पेशेवरों को प्रशिक्षित करना भी इस दिशा में अत्यंत आवश्यक है डब्ल्यूएचओ की

रिपोर्ट के अनुसार, दुनियाँ भर में प्रति 1 लाख लोगों पर औसतन केवल 13 मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर हैं, जबकि विकसित देशों में यह अनुपात बहुत अधिक है। इस असमानता के कारण निम्न और मध्यम आय वाले देशों में आत्महत्या रोकथाम चुनौतीपूर्ण बन जाती है। यदि डॉक्टर, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और पुलिसकर्मी आत्महत्या के संकेतों को पहचानने और सही समय पर हस्तक्षेप करने में प्रशिक्षित हों, तो कई जिंदगियाँ बचाई जा सकती हैं।

साथियों बात अगर हम आत्महत्याओं को रोकने के लिए शिक्षा और संवाद की आवश्यकता सबसे मजबूत हथियार होने की करें तो, आईएएसपी और डब्लूयुएचओ दोनों ही यह मानते हैं कि सार्वजनिक जागरूकता से आत्महत्या की प्रवृत्ति को काफी हद तक कम किया जा सकता है। डब्लूयुएचओ की 2022 की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि मानसिक स्वास्थ्य पर संवाद बढ़ाने से आत्महत्या दर में 20 पर्सेंट तक की कमी लाई जा सकती है ।आज भी अधिकांश समाजों में मानसिक स्वास्थ्य और आत्महत्या को लेकर सामाजिक कलंक मौजूद है। लोग इस विषय पर बात करने से कतराते हैं ।इसका परिणाम यह होता है कि पीड़ित व्यक्ति अकेलेपन और शर्मिंदगी का शिकार हो जाता है। युवाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना और उन्हें यह समझाना कि मदद माँगना कमजोरी नहीं बल्कि साहस है, अत्यंत आवश्यक है। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में काउंसलिंग सेवाएँ, हेल्पलाइन नंबर, मानसिक स्वास्थ्य कार्यशालाएँ शुरू करना उपयोगी साबित हो सकता है। उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरिया और जापान ने स्कूल स्तरपरमानसिक स्वास्थ्य शिक्षा लागू की है, जिससे आत्महत्या की दर कम करने में मदद मिली है।

साथियों बात अगर हम आत्महत्या की रोकथाम के वैज्ञानिक और सामाजिक उपायों की करें तो, आत्महत्या रोकथाम के लिए बहुआयामी उपाय आवश्यक हैं ।डब्लूयुएचओ की ₹लाइव लाइफ₹ रणनीति (2021) में चार प्रमुख उपाय सुझाए गए हैं (1) हानिकारक साधनों की उपलब्धता को कम करना (जैसे कीटनाशक, आग्नेयास्त्र, दवाइयाँ), (2) मीडिया रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार दिशानिर्देश बनाना, (3) किशोरों और युवाओं में सामाजिक व भावनात्मक कौशल विकसित करना, (4) जल्दी पहचान और सहायता उपलब्ध कराना ।इन उपायों से आत्महत्या की दर में उल्लेखनीय कमी लाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, श्रीलंका ने कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाकर आत्महत्या की दर को 70 पर्सेंट तक घटा दिया। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन ने हेल्पलाइन और काउंसलिंग सेवाओं का विस्तार करके आत्महत्या रोकथाम में सफलता प्राप्त की हैं।

साथियों बात अगर हम इसका रोकथाम दिवस मनाकर इसपर जबरदस्त नियंत्रण की करें तो, 10 सितंबर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस मनाया जाता है, आत्महत्या की समस्या वैश्विक है और इसका समाधान भी वैश्विक सहयोग से ही संभव है ।डब्लूएचओ, आईएएसपी और यूएन लगातार आत्महत्या रोकथाम पर काम कर रहे हैं। जिसका उद्देश्य जागरूकता फैलाना और सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा देना है ।भविष्य की दिशा यह होनी चाहिए कि सभी देश आत्महत्या रोकथाम को अपनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का हिस्सा बनाएँ। डिजिटल तकनीक का उपयोग करके एआई आधारित हेल्पलाइन, 24x7 ऑनलाइन काउंसलिंग, मोबाइल एप्स विकसित किए जाएँ, ताकि संकट की घड़ी में लोग तुरंत मदद पा सकें। इसके अलावा आत्महत्या के प्रयास करने वालों को अपराधी मानने की बजाय रोगी समझा जाए और उन्हें उचित चिकित्सा एवं परामर्श दिया जाए।

अतः अगर हम अपने पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि इस प्रकार, आँकड़ों और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के आधार पर यह स्पष्ट है कि आत्महत्या केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि एक जटिल सामाजिक और वैश्विक चुनौती है। इसके समाधान के लिए सरकारों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, समुदायों और परिवारों को मिलकर काम करना होगा।

# घर के प्रेत या पितर रुष्ट होने के लक्षण और उपाय......

पितृ गण हमारे पूर्वज हैं जिनका ऋण हमारे ऊपर है ,क्योंकि उन्होंने कोई ना कोई उपकार हमारे जीवन के लिए किया है मनुष्य लोक से ऊपर पितृ लोक है,पितृ लोक के ऊपर सूर्य लोक है एवं इस से भी ऊपर स्वर्ग लोक है।

आत्मा जब अपने शरीर को त्याग कर सबसे पहले ऊपर उठती है तो वह पितृ लोक में जाती है ,वहाँ हमारे पूर्वज मिलते हैं अगर उस आत्मा के अच्छे पुण्य हैं तो ये हमारे पूर्वज भी उसको प्रणाम कर अपने को धन्य मानते हैं की इस अमुक आत्मा ने हमारे कुल में जन्म लेकर हमें धन्य किया इसके आगे आत्मा अपने पुण्य के आधार पर सूर्य लोक की तरफ बढती है।

वहाँ से आगे ,यदि और अधिक पुण्य हैं, तो आत्मा सूर्य लोक को भेज कर स्वर्ग लोक की तरफ चली जाती है,लेकिन करोड़ों में एक आध आत्मा ही ऐसी होती है ,जो परमात्मा में समाहित होती है जिसे दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता मनुष्य लोक एवं पितृ लोक में बहुत सारी आत्माएं पुनः अपनी इच्छा वश ,मोह वश अपने कुल में जन्म लेती हैं।

**पितृ दोष क्या होता है ?**

हमारे ये ही पूर्वज सूक्ष्म व्यापक शरीर से अपने परिवार को जब देखते हैं ,और महसूस करते हैं कि हमारे परिवार के लोग ना तो हमारे प्रति श्रद्धा रखते हैं और न ही इन्हें कोई प्यार या स्नेह है और ना ही किसी भी अवसर पर ये हमको याद करते हैं,ना ही अपने ऋण चुकाने का प्रयास ही करते हैं तो ये आत्माएं दुखी होकर अपने वंशजों को श्राप दे देती हैं,जिसे ₹पितृ- दोष₹ कहा जाता है।

पितृ दोष एक अदृश्य बाधा है .ये बाधा पितरों द्वारा रुष्ट होने के कारण होती है पितरों के रुष्ट होने के बहुत से कारण हो सकते हैं ,आपके आचरण से,किसी परिजन द्वारा की गयी गलती से ,श्राद्ध आदि कर्म ना करने से ,अंत्येष्टि कर्म आदि में हुई किसी त्रुटि के कारण भी हो सकता है।

इसके अलावा मानसिक अवसाद, व्यापार में नुक्सान ,परिश्रम के अनुसार फल न मिलना, विवाह या वैवाहिक जीवन में समस्याएं,कैरिअर में समस्याएं या संक्षिप्त में कहें तो जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति और उसके परिवार को बाधाओं का सामना करना पड़ता है पितृ दोष होने पर अनुकूल ग्रहों की स्थिति , गोचर,दशाएं होने पर भी शुभ फल नहीं मिल पाते,कितना भी पूजा पाठ ,देवी ,देवताओं की अर्चना की जाए ,उसका शुभ फल नहीं मिल पाता।

**पितृ दोष दो प्रकार से प्रभावित करता है**

1.अधोगति वाले पितरों के कारण

2.उर्ध्वगति वाले पितरों के कारण

अधोगति वाले पितरों के दोषों का मुख्य कारण परिजनों द्वारा किया गया गलत आचरण,की अतृप्त इच्छाएं, जायदाद के प्रति मोह और उसका गलत लोगों द्वारा उपभोग होने पर, परिवार के किसी प्रियजन को अकारण कष्ट देने पर पितर क्रुद्ध हो जाते हैं ,परिवार जनों को श्राप दे देते हैं और अपनी शक्ति से नकारात्मक फल प्रदान करते हैं।

उर्ध्व गति वाले पितर सामान्यतः पितृदोष उत्पन्न नहीं करते ,परन्तु उनका किसी भी रूप में अपमान होने पर अथवा परिवार के पारंपरिक रीति-रिवाजों का निर्वहन नहीं करने पर वह पितृदोष उत्पन्न करते हैं।

इनके द्वारा उत्पन्न पितृदोष से व्यक्ति की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति बिलकुल बाधित हो जाती है ,फिर चाहे कितने भी प्रयास क्यों ना किये जाएँ ,कितने भी पूजा पाठ क्यों ना किये जाएँ,उनका कोई भी कार्य ये पितृदोष सफल नहीं होने देता।पितृ दोष निवारण के लिए सबसे पहले ये जानना ज़रूरी होता है कि किस ग्रह के कारण और किस प्रकार का पितृ दोष उत्पन्न हो रहा है ?

जन्म पत्रिका और पितृ दोष जन्म पत्रिका में लग्न ,पंचम ,अष्टम और द्वादश भाव से पितृदोष का विचार किया जाता है।पितृ दोष में ग्रहों में मुख्य रूप से सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शनि और राहू -केतु की स्थितियों से पितृ दोष का विचार किया जाता है।

इनमें से भी गुरु ,शनि और राहु की भूमिका प्रत्येक पितृ दोष में महत्वपूर्ण होती है इनमें सूर्य से पिता यापितामह, चन्द्रमा से माता या मातामह ,मंगल से भ्राता या भगिनी और शुक्र से पत्नी का विचार किया जाता है।

अधिकाँश लोगों की जन्म पत्रिका में मुख्य रूप से क्योंकि गुरु ,शनि और राहु से पीड़ित होने पर ही पितृ दोष उत्पन्न होता है ,इसलिए विभिन्न उपायों को करने के साथ साथ व्यक्ति यदि पंचमुखी ,सातमुखी और आठ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर ले , तो पितृ दोष का निवारण शीघ्र हो जाता है।

**विभिन्न ऋण और पितृ दोष......**

हमारे ऊपर मुख्य रूप से 5 ऋण होते हैं जिनका कर्म न करने( ऋण न चुकाने पर ) हमें निश्चित रूप से श्राप मिलता है ,ये ऋण हैं : मातृ ऋण , पितृ ऋण ,मनुष्य ऋण ,देव ऋण और ऋषि ऋण।

**मातृ ऋण.....**

माता एवं माता पक्ष के सभी लोग जिनमेंमा, मामी , नाना, नानी ,मौसा ,मौसी और इनके तीन पीढ़ी के पूर्वज होते हैं ,क्योंकि माँ का स्थान परमात्मा से भी ऊंचा माना गया है अतः यदि माता के प्रति कोई गलत शब्द बोलता है ,अथवा माता के पक्ष को कोई कष्ट देता रहता है,तो इसके फलस्वरूप उसको नाना प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं।इतना ही नहीं ,इसके बाद भी कलह और कष्टों का दौर भी परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी चलता ही रहता है।

पितृ ऋण☞ पिता पक्ष के लोगों जैसे बाबा ,ताऊ ,चाचा, दादा-दादी और इसके पूर्व की तीन पीढ़ी का श्राप हमारे जीवन को प्रभावित करता है पिता हमें आकाश की तरह छत्रछाया देता है,हमारा जिंदगी भर पालन -पोषण करता है ,और अंतिम समय तक हमारे सारे दुखों को खुद झेलता रहता है।

पर आज के के इस भौतिक युग में पिता का सम्मान क्या नयी पीढ़ी कर रही है ?पितृ -भक्ति करना मनुष्य का धर्म है,इस धर्म का पालन न करने पर उनका श्राप नयी पीढ़ी को झेलना ही पड़ता है , इसमें घर में आर्थिक अभाव,दरिद्रता ,संतानहीनता ,संतान को विभिन्न प्रकार के कष्ट आना या संतान अपंग रह जाने से जीवन भर कष्ट की प्राप्ति आदि।

देव ऋण☞ माता-पिता प्रथम देवता हैं,जिसके कारण भगवान गणेश महान बने इसके बाद हमारे इष्ट भगवान शंकर जी ,दुर्गा माँ ,भगवान विष्णु आदि आते हैं ,जिनको हमारा कुल मानता आ रहा है ,हमारे पूर्वज भी अपने अपने कुल देवताओं को मानते थे , लेकिन नयी पीढ़ी ने बिलकुल छोड़ दिया है इसी कारण भगवान /कुलदेवी /कुलदेवता उन्हें नाना प्रकार के कष्ट /श्राप देकर उन्हें अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं।

ऋषि ऋण☞ जिस ऋषि के गोत्र में पैदा हुए ,वंश वृद्धि की ,उन ऋषियों का नाम अपने नाम के साथ जोड़ने में नयी पीढ़ी कतराती है ,उनके ऋषि तर्पण आदि नहीं करती है इस कारण उनके घरों में कोई मांगलिक कार्य नहीं होते हैं,इसलिए उनका श्राप पीडी दर पीढ़ी प्राप्त होता रहता है।

मनुष्य ऋण☞ माता -पिता के अतिरिक्त जिन अन्य मनुष्यों ने हमें प्यार दिया ,दुलार दिया ,हमारा ख्याल रखा ,समय समय पर मदद की गाय आदि पशुओं का दूध पिया जिन अनेक मनुष्यों ,पशुओं ,पक्षियों ने हमारी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मदद की ,उनका ऋण भी हमारे ऊपर हो गया।

लेकिन लोग आजकल गरीब बेबस लाचार लोगों की धन संपत्ति हरण करके अपने को ज्यादा गौरवान्वित महसूस करते हैं।इसी कारण देखने में आया है कि ऐसे लोगों का पूरा परिवार जीवन भर नहीं बस पाता है, वंश हीनता ,संतानों का गलत संगति में पड़ जाना,परिवार के सदस्यों का आपस में सामंजस्य न बन पाना , परिवार कि सदस्यों का किसी असाध्य रोग से ग्रस्त रहना इत्यादि दोष उस परिवार में उत्पन्न हो जाते हैं।

ऐसे परिवार को पितृ दोष युक्त या शापित परिवार कहा जाता है रामायण में श्रवण कुमार के माता -पिता के श्राप के कारण दशरथ के परिवार को हमेशा कष्ट झेलना पड़ा,ये जग -ज़ाहिर है इसलिए परिवार कि सर्वोन्नती के पितृ दोषों का निवारण करना बहुत आवश्यक है।

**पितृों के रूष्ट होने के लक्षण......**

पितरों के रुष्ट होने के कुछ असामान्य लक्षण जो मैंने अपने निजी अनुभव के आधार एकत्रित किए है वे क्रमशः इस प्रकार हो सकते है।

**खाने में से बाल निकलना .....**

अक्सर खाना खाते समय यदि आपके भोजन में से बाल निकलता है तो इसे नजरअंदाज न करें।

**बदबू या दुर्गंध .......**

कुछ लोगों की समस्या रहती है कि उनके घर से दुर्गंध आती है, यह भी नहीं पता चलता कि दुर्गंध कहां से आ रही है। कई बार इस दुर्गंध के इतने अभ्यस्त हो जाते है कि उन्हें यह दुर्गंध महसूस भी नहीं होती लेकिन बाहर के लोग उन्हें बताते हैं कि ऐसा हो रहा है अब जबकि परेशानी का स्रोत पता ना चले तो उसका इलाज कैसे संभव है

**पूर्वजों का स्वप्न में बार बार आना**

मेरे एक मित्र ने बताया कि उनका अपने पिता के साथ झगड़ा हो गया है और वह झगड़ा काफी सालों तक चला पिता ने मरते समय अपने पुत्र से मिलने की इच्छा जाहिर की परंतु पुत्र मिलने नहीं आया, पिता का स्वर्गवास हो गया हुआ। कुछ समय पश्चात मेरे मित्र मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि उन्होंने अपने पिता को बिना कपड़ों के देखा है ऐसा स्वप्न पहले भी कई बार आ चुका है।

**शुभ कार्य में अड़चन .....**

कभी-कभी ऐसा होता है कि आप कोई त्यौहार मना रहे हैं या कोई उत्सव आपके घर पर हो रहा है ठीक उसी समय पर कुछ ना कुछ ऐसा घटित हो जाता है कि जिससे रंग में भंग डल जाता है। ऐसी घटना घटित होती है कि खुशी का माहौल बदल जाता है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि शुभ अवसर पर कुछ अशुभ घटित होना पितरों की असंतुष्टि का संकेत है।

**घर के किसी एक सदस्य का कुंवारा रह जाना .....**

बहुत अच्छा युवक है, कहीं कोई कमी नहीं है लेकिन फिर भी शादी नहीं हो रही है। एक लंबी उम्र निकल जाने के पश्चात भी शादी नहीं हो पाना कोई अच्छा संकेत नहीं है। यदि घर में पहले ही किसी कुंवारे व्यक्ति की मृत्यु हो चुकी है तो उपरोक्त स्थिति बनने के आसार बढ़ जाते हैं। इस समस्या के कारण का भी पता नहीं चलता।

**मकान या प्रॉपर्टी की खरीद-फरोख्त में दिक्कत आना ......**

आपने देखा होगा कि कि एक बहुत अच्छी प्रॉपर्टी, मकान, दुकान या जमीन का एक हिस्सा किन्ही कारणों से बिक नहीं पा रहा यदि कोई खरीदार मिलता भी है तो बात नहीं बनती। यदि कोई खरीदार मिल भी जाता है और सब कुछ हो जाता है तो अंतिम समय पर सौदा कैंसिल हो जाता है। इस तरह की स्थिति यदि लंबे समय से चली आ रही है तो यह मान लेना चाहिए कि इसके पीछे अवश्य ही कोई ऐसी कोई अतृप्त आत्मा है जिसका उस भूमि या जमीन के टुकड़े से कोई संबंध रहा हो।

**संतान ना होना**

मेडिकल रिपोर्ट में सब कुछ सामान्य होने के बावजूद संतान सुख से वंचित है हालांकि आपके पूर्वजों का इस से संबंध होना लाजमी नहीं है परंतु ऐसा होना बहुत हद तक संभव है जो भूमि किसी निसंतान व्यक्ति से खरीदी गई हो वह भूमि अपने नए मालिक को संतानहीन बना देती है।

**पितृ-दोष कि शांति के उपाय**

1 सामान्य उपायों में षोडश पिंड दान ,सर्प पूजा ,ब्राह्मण को गौ -दान ,कन्या -दान, कुआं , बावड़ी , तालाब आदि बनवाना ,मंदिर प्रांगण में पीपल ,बड़( बरगद ) आदि देव वृक्ष लगवाना एवं विष्णु मन्त्रों का जाप आदि करना ,प्रेत श्राप को दूर करने के लिए श्रीमद्भागवत का पाठ करना चाहिए।

2 वेदों और पुराणों में पितरों की संतुष्टि के लिए मंत्र ,स्तोत्र एवं सूक्तों का वर्णन है जिसके नित्य पठन से किसी भी प्रकार की पितृ बाधा क्यों ना हो ,शांत हो जाती है। अगर नित्य पठन संभव ना हो , तो कम से कम प्रत्येक माह की अमावस्या और आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या अर्थात पितृपक्ष में अवश्य करना चाहिए।

वैसे तो कुंडली में किस प्रकार का पितृ दोष है उस पितृ दोष के प्रकार के हिसाब से पितृदोष शांति करवाना अच्छा होता है।

3 भगवान भोलेनाथ की तस्वीर या प्रतिमा के समक्ष बैठ कर या घर में ही भगवान भोलेनाथ का ध्यान कर निम्न मंत्र की एक माला नित्य जाप करने से समस्त प्रकार के पितृ- दोष संकट बाधा आदि शांत होकर शुभत्व की प्राप्ति होती है ।मंत्र जाप प्रातः या सायंकाल कभी भी कर सकते हैं :

मंत्र : ₹ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय च धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।

4 अमावस्या को पितरों के निमित्त पवित्रता पूर्वक बनाया गया भोजन तथा चावल बूरा ,घी एवं एक रोटी गाय को खिलाने से पितृ दोष शांत होता है।

5 अपने माता -पिता ,बुजुर्गों का सम्मान,सभी स्त्री कुल का आदर /सम्मान करने और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहने से पितर हमेशा प्रसन्न रहते हैं।

6 पितृ दोष जनित संतान कष्ट को दूर करने के लिए ₹हरिवंश पुराण ₹ का श्रवण करें या स्वयं नियमित रूप से पाठ करें।

7 प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती या सुन्दर काण्ड का पाठ करने से भी इस दोष में कमी आती है।

8 सूर्य पिता है अतः ताम्बे के लोटे में जल भर कर ,उसमें लाल फूल ,लाल चन्दन का चूरा ,रोली आदि डाल कर सूर्य देव को अर्घ्य देकर ११ बार ₹ॐ घृणि सूर्याय नमः ₹ मंत्र का जाप करने से पितरों की प्रसन्नता एवं उनकी ऊर्ध्व गति होती है।

9 अमावस्या वाले दिन अवश्य अपने पूर्वजों के नाम दुग्ध ,चीनी ,सफ़ेद कपडा ,दक्षिणा आदि किसी मंदिर में अथवा किसी योग्य ब्राह्मण को दान करना चाहिए।

10 पितृ पक्ष में पीपल की परिक्रमा अवश्य करें अगर १०८ परिक्रमा लगाई जाएँ ,तो पितृ दोष अवश्य दूर होगा।

**विशिष्ट उपाय :.....**

1 किसी मंदिर के परिसर में पीपल अथवा बड़ का वृक्ष लगाएं और रोज़ उसमें जल डालें ,उसकी देख -भाल करें ,जैसे-जैसे वृक्ष फलता -फूलता जाएगा,पितृ -दोष दूर होता जाएगा,क्योकि इन वृक्षों पर ही सारे देवी -देवता ,इतर -योनियाँ ,पितर आदि निवास करते हैं।

2 यदि आपने किसी का हक छीना है,या किसी मजबूर व्यक्ति की धन संपत्ति का हरण किया है,तो उसका हक या संपत्ति उसको अवश्य लौटा दें।

3 पितृ दोष से पीड़ित व्यक्ति को किसी भी एक अमावस्या से लेकर दूसरी अमावस्या तक अर्थात एक माह तक किसी पीपल के वृक्ष के नीचे सूर्योदय काल में एक शुद्ध घी का दीपक लगाना चाहिए,ये क्रम टूटना नहीं चाहिए।

**एक माह बीतने पर जो अमावस्या आये उस दिन एक प्रयोग और करें**

इसके लिए किसी देसी गाय या दूध देने वाली गाय का थोडा सा गौ -मूत्र प्राप्त करें उसे थोड़े जल में मिलाकर इस जल को पीपल वृक्ष की जड़ों में डाल दें इसके बाद पीपल वृक्ष के नीचे धूपबत्ती ,एक नारियल और शुद्ध घी का दीपक लगाकर अपने पूर्वजों से श्रद्धा पूर्वक अपने कल्याण की कामना करें,और घर आकर उसी दिन दोपहर में कुछ गरीबों को भोजन करा दें ऐसा करने पर पितृ दोष शांत हो जायेगा।

4 घर में कुआं हो या पीने का पानी रखने की जगह हो ,उस जगह की शुद्धता का विशेष ध्यान रखें,क्योंके ये पितृ स्थान माना जाता है इसके अलावा पशुओं के लिए पीने का पानी भरवाने तथा प्याऊ लगवाने अथवा आवारा कुत्तों को जलेबी खिलाने से भी पितृ दोष शांत होता है।

5 अगर पितृ दोष के कारण... अत्यधिक परेशानी हो,संतान हानि हो या संतान को कष्ट हो तो किसी शुभ समय अपने पितरों को प्रणाम कर उनसे प्रण होने की प्रार्थना करें और अपने द्वारा जाने-अनजाने में किये गए अपराध / उपेक्षा के लिए क्षमा याचना करें ,फिर घर अथवा शिवालय में पितृ गायत्री मंत्र का सवा लाख विधि से जाप कराएं जाप के उपरांत दशांश हवन के बाद संकल्प ले की इसका पूर्ण फल पितरों को प्राप्त हो ऐसा करने से पितर अत्यंत प्रसन्न होते हैं ,क्योंके उनकी मुक्ति का मार्ग आपने प्रशस्त किया होता है।

6 पितृ दोष की शांति हेतु ये उपाय बहुत ही अनुभूत और अचूक फल देने वाला देखा गया है,वोह ये कि- किसी गरीब की कन्या के विवाह में गुप्त रूप से अथवा प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक सहयोग करना ।( लेकिन ये सहयोग पूरे दिल से होना चाहिए ,केवल दिखावे या अपनी बढ़ाई कराने के लिए नहीं )।इस से पितर अत्यंत प्रसन्न होते हैं ,क्योंकि इसके परिणाम स्वरुप मिलने वाले पुण्य फल से पितरों को बल और तेज़ मिलता है ,जिस से वह ऊर्ध्व लोकों की ओरगति करते हुए पुण्य लोकों को प्राप्त होते हैं.।

7 अगर किसी विशेष कामना को लेकर किसी परिजन की आत्मा पितृ दोष उत्पन्न करती है तो तो ऐसी स्थिति में मोह को त्याग कर उसकी सदगति के लिए ₹गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र ₹ का पाठ करना चाहिए।

8 पितृ दोष दूर करने का अत्यंत सरल उपाय : इसके लिए सम्बंधित व्यक्ति को अपने घर के वायव्य कोण ( N -W )में नित्य सरसों का तेल में बराबर मात्रा में अगर का तेल मिलाकर दीपक पूरे पितृ पक्ष में नित्य लगाना चाहिए+दिया पीतल का हो तो ज्यादा अच्छा है ,दीपक कम से कम 10 मिनट नित्य जलना आवश्यक है।

इन उपायों के अतिरिक्त वर्ष की प्रत्येक अमावस्या को दोपहर के समय गूगल की धूनी पूरे घर में सब जगह घुमाएं ,शाम को आंध होने के बाद पितरों के निमित्त शुद्ध भोजन बनाकर एक दोने में साड़ी सामग्री रख कर किसी बबूल के वृक्ष अथवा पीपल या बड़ किजद में रख कर आ जाएँ,पीछे मुड़कर न देखें। नित्य प्रति घर में देसी कपूर जाया करें। ये कुछ ऐसे उपाय हैं,जो सरल भी हैं और प्रभावी भी,और हर कोई सरलता से इन्हें कर पितृ दोषों से मुक्ति पा सकता है। लेकिन किसी भी प्रयोग की सफलता आपकी पितरों के प्रति श्रद्धा के ऊपर निर्भर करती है।

**पितृदोष निवारण के लिए करें विशेष उपाय (नारायणबलि-नागबलि)**

अक्सर हम देखते हैं कि कई लोगों के जीवन में परेशानियां समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। वे चाहे जितना भी समय और धन खर्च कर लें लेकिन काम सफल नहीं होता। ऐसे लोगों की कुंडली में निश्चित रूप से पितृदोष होता है।

यह दोषी पीढ़ी दर पीढ़ी कष्ट पहुंचाता रहता है, जब तक कि इसका विधि-विधानपूर्वक निवारण न किया जाए। आने वाली पीढ़ीयों को भी कष्ट देता है। इस दोष के निवारण के लिए कुछ विशेष दिन और समय तय हैं जिनमें इसका पूर्ण निवारण होता है। श्राद्ध पक्ष यही अवसर है जब पितृदोष से मुक्ति पाई जा सकती है। इस दोष के निवारण के लिए शास्त्रों में नारायणबलि का विधान बताया गया है। इसी तरह नागबलि भी होती है।

# रांची मे शराब पी रहे जमीन कारोबारी पर चली गोलियां, रवि साहु मृत, जमीन कारोबार से उपजा था विवाद

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**

**रांची** , झारखंड इन दिनों जमीन की वैध अवैध कारोबार से उपजे विवादों का पर्याय बना हुआ है । झारखंड के अनेकों इलाके में आये दिनों झगड़े, मारपीट , हत्या होते रहते हैं ।इसी क्रम में रांची के रातू थाना क्षेत्र में रविवार को आपसी रंजिश जानलेवा साबित हुआ ।जमीन कारोबारी कुणाल ने पुराने विवाद और पारिवारिक अपमान का बदला लेते हुए दो जमीन कारोबारी रवि कुमार साहू और बलमा पर गोलियां बरसा दीं।

इस हमले में रवि साहू की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि बलमा गंभीर रूप से घायल हो गया। इस मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने मुख्य आरोपित कुणाल को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि फरार साथियों की तलाश में छापेमारी जारी है।

एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बताया कि आठ माह पहले जमीन के एक सौदे को लेकर बलमा ने कुणाल के पिता के साथ मारपीट की थी। मामला यहीं नहीं रुका 10 दिन पहले कुणाल ने एक व्यक्ति से 10 हजार रुपये उधार लिए थे, जिस पर बलमा ने ताना मारते हुए उस व्यक्ति से कहा कि अगर हिम्मत है तो पैसे वापस लेकर दिखाओ।

इसी बात को लेकर बलमा और कुणाल की पत्नी के बीच कहासुनी हो गई। इसके बाद से ही कुणाल ने बलमा को सबक सिखाने की ठान ली थी।

जानकारी के अनुसार रविवार को कुणाल अपने एक साथी के साथ बाइक पर सवार होकर बलमा की तलाश में निकला।

जानकारी के मुताबिक, बलमा अपनी पड़ोसी सरिता देवी के घर के बाहर, अपने साथी रवि के साथ शराब पी रहा था। मौका पाकर उसने कुणाल ने वहां पहुंचकर ताबड़तोड़ गोलियां चलाईं। बलमा तो घायल हो गया, लेकिन रवि जो उस वक्त शराब पी रहा था, गोली लगने से मौके पर ही मारा गया।

# जमशेदपुर के मानगो मे बनेगा पुलिस अनुमंडल , उच्चस्तरीय बैठक में मिली स्वीकृति

## मुख्यसचिव अलका तिवारी की अध्यक्षता में हुई बैठक

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**

**रांची ।** जमशेदपुर में हुई वारदात , नजदीक नार्कोटिक्स द्रव्यों का विपणन केंद्र आदि बनने के बाद सरकार के गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग के प्रस्ताव पर जमशेदपुर के मानगो को नया पुलिस अनुमंडल बनाने के लिए सोमवार को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समिति ने स्वीकृति प्रदान की। वहीं मुख्य सचिव ने डीजीपी को निर्देश दिया कि विधि व्यवस्था के कुशल संधारण के लिए राज्य के तमाम जिलों की जरूरतों का आकलन कराएं। उन्होंने कहा कि इससे हमारे पास जिलों के अपराध ग्राफ, उसके ट्रेंड आदि के साथ वर्तमान संसाधन और क्या करने की आवश्यकता है, इसका समुचित डाटा मिलेगा। वहीं अपराधों की रोकथाम के लिए बेहतर ढंग से संसाधनों का बंटवारा भी सुनिश्चित हो सकेगा।

मालूम हो कि पूर्वी सिंहभूम में पहले से जमशेदपुर ( मुख्यालय ) और पटमदा पुलिस अनुमंडल वजूद में हैं। लेकिन, उत्क्रमित थाना, मानगो एवं आजादनगर तथा ओलीडीह ओपी का क्षेत्रफल, जनसंख्या और उसके घनत्व के साथ विविध प्रकृति के अपराधों में वृद्धि देखने को मिल रही थी।

गृह सचिव श्रीमती वंदना डाडेल ने बताया कि मानगो में आर्थिक अपराध, नारकोटिक्स से जुड़े मामले तथा अन्य प्रकृति के कांडों पर नकेल कसने के लिए उसे पुलिस अनुमंडल बनाने की जरूरत महसूस की जा रही है। राज्य के डीजीपी अनुराग गुप्ता ने बताया कि पुलिस अनुमंडल जमशेदपुर ( मुख्यालय ) और पटमदा से जुड़े उत्क्रमित थाना, मानगो एवं आजादनगर तथा ओलीडीह ओपी को काट कर मानगो पुलिस अनुमंडल अस्तित्व में आयेगा। मानगो पुलिस अनुमंडल निर्माण को लेकर वित्त सचिव प्रशांत कुमार और कार्मिक सचिव प्रवीण टोप्पो ने अपने-अपने विभाग से जुड़े मसलों को रखा और उच्चस्तरीय समिति से अनुमोदन प्राप्त किया।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में संपन्न उच्चस्तरीय समिति की बैठक में राजस्व, निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग के सचिव चंद्रशेखर, ग्रामीण विकास सचिव के श्रीनिवासन और आईजी नरेन्द्र कुमार सिंह उपस्थित थे।

# झारखंड डीएमएफटी फंड में बड़ा घोटाला : बाबूलाल,नेता प्रतिपक्ष

## बोकारो में डीएमएफटी बना मुख्यमंत्री ,अधिकारियों का निजी एटीएम

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड**

**रांची** ,झारखंड के नेता प्रतिपक्ष सह प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने राज्य में जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट ( डीएमएफटी ) फंड में बड़े पैमाने पर घोटाले के संगीन आरोप मौजूदा सरकार पर लगाए है। रांची पार्टी कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर योजनाओं का ब्योरा देते हुए दावा किया कि इसमें करोड़ों रुपए की हेराफेरी की गई है और इसके लिए सीधे तौर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जिम्मेदार हैं।बाबूलाल मरांडी ने कहा, मुख्यमंत्री ने डीएमएफटी फंड को अपना निजी एटीएम समझ लिया है। अधिकारी उनके इशारे पर पैसे निकाल रहे हैं। अगर मुख्यमंत्री की संलिप्तता नहीं है, तो वे इसकी जांच सीबीआई से कराने की अनुशंसा करें।उन्होंने कहा कि फिलहाल वे बोकारो जिले में हुए घोटाले का खुलासा कर रहे हैं, लेकिन इस तरह की लूट पूरे प्रदेश में हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खनिज क्षेत्रों के विकास के लिए डीएमएफटी फंड की व्यवस्था की थी ताकि सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित हो सकें। लेकिन, झारखंड में इसका दुरुपयोग योजनाओं में लूट के लिए किया जा रहा है।मरांडी ने आरोप लगाया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 और 2025-26 में बोकारो जिले को डीएमएफटी से 631 करोड़ रुपए मिले। इस फंड से 46 पंचायतों में जेनरेटर, 1666 आंगनबाड़ी केंद्रों में

डिजिटल मेट्स, स्कूलों में लैब, शहर में 187 हाई मास्ट लाइट, एलईडी वैन, सरकारी भवनों में तड़ित चालक, बाला पेंटिंग, सौर ऊर्जा पंपसेट, स्कूलों में मॉड्यूलर किचन, स्मार्ट मॉडल स्कूल का उन्नयन, छात्रों के लिए कोचिंग, कौशल विकास और प्लेसमेंट जैसी योजनाओं में खर्च दिखाया गया। लेकिन, इन सभी योजनाओं में टेंडर स्तर से गड़बड़ी की गई और बाजार दर से दस गुना ज्यादा कीमत पर आपूर्ति दिखाकर भुगतान कर दिया गया।उन्होंने कहा कि यह घोटाला मुख्यमंत्री की जानकारी और इशारे के बिना संभव नहीं है। राज्य सरकार की किसी एजेंसी से जांच कराए जाने से सच सामने नहीं आएगा, इसलिए इसकी जांच सीबीआई से होनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि योजनाओं की जानकारी मांगने वाले सामाजिक संगठनों को धमकाया जा रहा है। भाजपा ऐसे लोगों के साथ खड़ी है और सड़क से सदन तक इस मुद्दे को उठाएगी।

# झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डा० इरफान को पुन: धमकी भरा कॉल

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**

**रांची** , झारखंड की राजनीति में पुनः गर्म हवा बहने लगी है , अबकी बार प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी को फिर मोबाइल फोन पर जान से मारने की धमकी दी गई है । मंत्री ने बताया कि एक अज्ञात युवक ने कॉल कर कड़े शब्दों में धमकाया और कहा– "तुम बस इंतजार करो, बहुत जल्द तुम्हें उड़ा देंगे।" यह घटना उस वक्त हुई जब मंत्री रविवार रात को बोकारो में मौजूद थे। सूचना मिलते ही पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में आ गईं। मामले की गंभीरता को देखते हुए उच्चाधिकारियों को तुरंत जानकारी दी गई और मंत्री की सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया गया। धमकी देने वाले युवक की पहचान की कोशिश की जा रही है। पुलिस ने कॉल डिटेल्स की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, धमकी जिस नंबर से आई है, वह 7005758247 है। इस घटना को लेकर मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि सोमवार सुबह वे इस

संबंध में औपचारिक शिकायत दर्ज कराएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि पिछले कुछ दिनों से लगातार उन्हें धमकी भरे कॉल आ रहे हैं। गौरतलब है कि इससे पहले भी मंत्री को कई बार इस तरह की धमकियां मिल चुकी हैं। फिलहाल पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच तेज कर दी है।

# भारत की युवा पीढ़ी डिजिटल दबाव के बावजूद मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बदल रही है

विजय गर्ग

25 वर्ष से कम आयु के आधे से अधिक देश के साथ, युवा भारतीय एक संस्कृति बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। इंडिया टुडे ने पाया कि सहकर्मी के नेतृत्व वाले अभियान, जमीनी स्तर पर कार्यक्रम और ऑनलाइन वकालत संस्थानों को जवाब देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। देसाई कहते हैं, ₹हर खुली बातचीत मायने रखती है.₹ ₹यह लहर पैदा करता है जो स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों को भलाई को प्राथमिकता देने के लिए धक्का देता है

भारत के युवा मानसिक स्वास्थ्य की कहानी फिर से लिख रहे हैं।

पिछली पीढ़ियों के विपरीत, वे एक डिजिटल-पहली दुनिया में बड़े हो रहे हैं" जहां सोशल मीडिया, तत्काल सत्यापन और हाइलाइट रीलों रोजमर्रा की जिंदगी पर हावी हैं।

बाहरी सत्यापन, पसंद और त्वरित संतुष्टि कई युवा भारतीयों के लिए आत्म-मूल्य के मूक उपाय बन गए हैं,₹। इस निरंतर तुलना संस्कृति ने एक ऐसा वातावरण बनाया है जहां सफलता का महिमामंडन किया जाता है जबकि विफलता विनाशकारी, ट्रिगर चिंता और पुराने तनाव को महसूस करती है।

सामाजिक मीडिया दबाव और मानसिक स्वास्थ्य कैसे प्रभावित और ऑनलाइन रुझान युवा लोगों को आकार देते हैं ₹सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का नशे की लत डिजाइन युवाओं को अंतहीन स्क्रॉल करता रहता है, जो न केवल उनकी नींद और ध्यान में खाता है, बल्कि अलगाव और आत्म-संदेह को भी बढ़ाता है

अध्ययन इस चिंता का समर्थन करते हैं: तीन में से लगभग एक युवा भारतीय चिंता के लक्षणों का अनुभव करते हैं, जबकि आधे तनाव के उच्च स्तर की रिपोर्ट करते हैं। ध्यान घाटा, खराब एकाग्रता, और बर्नआउट भी बढ़ रहे हैं, अनिवार्य डिजिटल खपत से जुड़े मुद्दे।

चेंज-मेकर्स के रूप में युवा फिर भी, यह पीढ़ी केवल उस प्रणाली का शिकार नहीं है जो वे बदलाव करने वाले भी हैं। पूरे भारत में, युवा आवाजें कलंक को चुनौती दे रही हैं, सहकर्मी-समर्थन समूह बना रही हैं, और मानसिक स्वास्थ्य के आसपास खुली बातचीत करने के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग कर रही हैं।

"भारत के युवा अभूतपूर्व तरीके से आगे बढ़ रहे हैं," "वे अब टॉप-डाउन समाधान की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं। वे जमीन से बदलाव जुटा रहे हैं

**संवाद के साथ परिवर्तन को सक्षम करना विज्ञापन**

25 वर्ष से कम आयु के आधे से अधिक देश के साथ, युवा भारतीय एक संस्कृति बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। इंडिया टुडे ने पाया कि सहकर्मी के नेतृत्व वाले अभियान, जमीनी स्तर पर कार्यक्रम और ऑनलाइन वकालत संस्थानों को जवाब देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

देसाई कहते हैं, ₹हर खुली बातचीत मायने रखती है.₹ ₹यह लहर पैदा करता है जो स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों को भलाई को प्राथमिकता देने के लिए धक्का देता है कार्रवाई के लिए जागरूकता से चलती है जागरूकता धीरे-धीरे मूर्त परिवर्तन में परिवर्तित हो रही है। एक YourDost-NIMHANS सर्वेक्षण से पता चला है कि युवाओं के बीच चिकित्सा और उपचार की स्वीकृति 2018 में 54% से बढ़कर 2024 में 94% हो गई है।

हम कलंक से स्वीकृति की ओर बढ़ रहे हैं। निगम अब भलाई के डिब्बों के साथ सहयोग कर रहे हैं, स्कूल प्रारंभिक शिक्षा मॉड्यूल शुरू कर रहे हैं, और युवा नेता मानसिक स्वास्थ्य बातचीत को सामान्य कर रहे हैं

ग्रासरूट आंदोलनों ने सरकारों को मानसिक स्वास्थ्य को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा में एकीकृत करने के लिए प्रेरित किया है। आयुष्मान भारत स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र, जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, और टेली-मानस हेल्पलाइन जैसी पहल बताती है कि कैसे मानसिक कल्याण एक नीतिगत प्राथमिकता बन रहा है।

सरकारी प्रतिक्रिया चलाने में वकालत की भूमिका को उजागर करते हुए, ₹ये उपाय भारत की दीर्घकालिक परिवर्तन की जरूरतों का प्रतिनिधित्व करते हैं।₹

सामाजिक मीडिया के डबल-एडेड रोल जबकि सोशल मीडिया दबाव जोड़ता है, यह परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण भी बन गया है। अभियान, हैशटैग और वायरल कहानियां कलंक को तोड़ रही हैं और पैमाने पर समर्थन जुटा रही हैं।

"सोशल मीडिया एक विरोधाभास है,₹ एक तरफ, यह चिंता को गहरा करता है। दूसरी ओर, यह जागरूकता को तेज करता है और युवाओं को पेशेवरों, सहकर्मी समूहों और संसाधनों से जोड़ता है। यह चुनौती और समाधान दोनों है

प्रगति के बावजूद, अंतराल बने हुए हैं। स्कूलों और समुदायों में अक्सर संरचित कार्यक्रमों की कमी होती है, और शहरी और ग्रामीण भारत में मानसिक स्वास्थ्य सहायता तक पहुंच असमान है।

विशेषज्ञों का तर्क है कि शैक्षणिक पाठ्यक्रम के भीतर मानसिक कल्याण शिक्षा को एम्बेड करना अगला कदम है। आत्म-जागरूकता, लचीलापन और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को जल्दी शुरू करने से भविष्य की पीढ़ियों को तनाव, असफलताओं और अधिक ताकत के साथ अनिश्चितता को संभालने के लिए तैयार किया जाएगा।

"पाठ्यक्रम में मानसिक भलाई को एम्बेड करना अब दूर की कौड़ी का विचार नहीं है, यह एक स्वस्थ, अधिक लचीला पीढ़ी की नींव है

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब***

## शिक्षा की रोशनी

विजय गर्ग

समाज में लैंगिक समानता और बेहतर समाज के निर्माण के लिए लड़कियों का शिक्षित होना जरूरी है। एक लड़की का शिक्षित होना उसे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने तथा परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान देने में सक्षम बनाता है। शिक्षा से वंचित लड़कियां न तो अपने अधिकारों को समझ पाती हैं और न ही उनके सामाजिक जीवन का स्तर ऊपर उठ पाता है । वे घरेलू कामकाज के दायरे में ही सिमट कर रह जाती हैं । बालिका शिक्षा को लेकर सरकार की ओर से कई योजनाएं लागू की गई हैं, लेकिन धरातल पर उनका प्रभाव व्यापक स्तर पर नजर नहीं आता है। मगर, इसकी पूरी जिम्मेदारी सिर्फ सरकार पर डालना भी उचित नहीं होगा। इसके लिए सामाजिक स्तर पर भी सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए । भारतीय गैर-सरकारी संस्था 'एजुकेट गर्ल्स' ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया, जिसके लिए उसे एशिया का नोबेल माने जाने वाले रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से नवाजा गया है। इस संस्था की यह उपलब्धि सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य संगठनों के लिए भी प्रेरणास्रोत है। यह बात सच है कि आज के आधुनिक दौर में भी हमारे समाज में ऐसी रूढ़िवादी सोच पल रही है, जो लड़कियों की शिक्षा को तवज्जो देने से रोकती है। खासकर ग्रामीण इलाकों में इस धारणा की बेड़ियों को तोड़कर लड़कियों को निरक्षरता के अंधेरे से बाहर निकालने और उनका

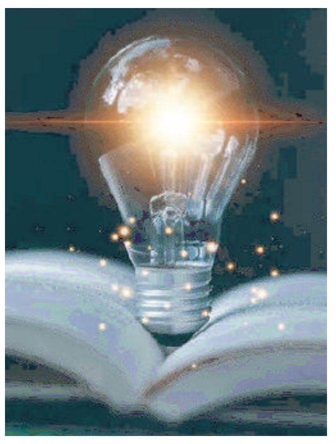

शिक्षा के उजाले से साक्षात्कार कराने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जाने की जरूरत है। 'एजुकेट गर्ल्स' संस्था ने इस तरह के सफल प्रयासों की एक नई मिसाल पेश की है। इस संस्था ने राजस्थान से शुरुआत करते हुए देशभर में सबसे जरूरतमंद समुदायों की पहचान की, स्कूल न जाने वाली लाखों लड़कियों को कक्षा में पहुंचाया और उन्हें उच्च शिक्षा एवं रोजगार पाने के लिए सक्षम बनाया। ऐसे ही अन्य सामाजिक संस्थाओं और संगठनों को भी आगे आना चाहिए। सरकार को भी चाहिए कि बालिका शिक्षा को लेकर परिणामोन्मुख योजनाएं बनाई जाएं और उन्हें सही मायने में लागू किया जाए। क्योंकि, शिक्षा न केवल महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि एक बेहतर परिवार एवं समाज और राष्ट्र निर्माण में भी उनकी भूमिका सुनिश्चित करती है ।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब***

## "जनता बीमार, प्रशासन लाचार : डेंगू का वार"
## "स्वास्थ्य तंत्र की पोल खोलती फॉगिंग मशीनों की कमी"

हरियाणा में डेंगू का प्रकोप तेज़ है, लेकिन नगर निकायों के पास फॉगिंग मशीनों की भारी कमी है। प्रदेश के 87 निकायों में केवल 426 मशीनें उपलब्ध हैं, जो आवश्यकतानुसार बेहद कम हैं। मशीनों की कमी के कारण न तो शहरों में और न ही ग्रामीण इलाकों में नियमित फॉगिंग अभियान चल पाए हैं। 1200 से अधिक गाँव जलभराव से जूझ रहे हैं, जिससे खतरा और बढ़ गया है। स्वास्थ्य विभाग और निकायों की लापरवाही से जनता पर बीमारी का संकट गहराता जा रहा है। ठोस कार्ययोजना और पर्याप्त संसाधन ही डेंगू से सुरक्षा का रास्ता हैं।

*- डॉ. सत्यवान सौरभ*

डेंगू का नाम सुनते ही लोगों के मन में डर बैठ जाता है। हर साल मानसून के बाद बरसात के दिनों में जब मच्छरों का प्रकोप बढ़ता है, तो डेंगू के मामले तेजी से सामने आने लगते हैं। बुखार, सिरदर्द, शरीर में दर्द और प्लेटलेट्स की कमी से पीड़ित मरीजों की संख्या अस्पतालों में बढ़ने लगती है। सरकारें हर वर्ष दावा करती हैं कि मच्छरों की रोकथाम और फॉगिंग के इंतज़ाम पूरे हैं, लेकिन जमीनी हकीकत बिल्कुल उलट होती है। हाल ही में सामने आई रिपोर्ट ने हरियाणा के स्वास्थ्य तंत्र और स्थानीय निकायों की तैयारियों पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। प्रदेश के 87 नगर निकायों में डेंगू और मच्छर जनित बीमारियों से निपटने के लिए मात्र 426 फॉगिंग मशीनें ही उपलब्ध हैं। यानी लगभग हर निकाय के हिस्से में औसतन पाँच मशीनें भी नहीं आतीं। जबकि स्थिति यह है कि एक मध्यम आकार के शहर में ही डेंगू पर काबू पाने के लिए 20–25 मशीनें आवश्यक मानी जाती हैं। ऐसे में पूरे प्रदेश के स्तर पर मशीनों की यह कमी सीधा संदेश देती है कि प्रशासनिक लापरवाही किस हद तक हावी है।

डेंगू एक ऐसी बीमारी है जिसका सीधा इलाज एंटीबायोटिक दवाइयों से संभव नहीं है। यह मच्छरों से फैलने वाला वायरल संक्रमण है और रोगी के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर ही उपचार टिका होता है। अधिकतर मामलों में डेंगू का वायरस शरीर की प्लेटलेट्स तेजी से घटा देता है। समय पर इलाज न मिलने पर यह स्थिति जानलेवा हो सकती है। भारत में हर साल लाखों लोग डेंगू से प्रभावित होते हैं और हजारों मौतें भी होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी डेंगू को दुनिया के सबसे तेजी से फैलने वाले वायरल रोगों में गिनता है। इसलिए रोकथाम ही सबसे बड़ा हथियार है। मच्छरों को पनपने से रोकना, जलभराव हटाना और समय-समय पर फॉगिंग करना — यही डेंगू पर नियंत्रण के सबसे कारगर उपाय हैं। लेकिन जब यही इंतज़ाम कमजोर पड़ जाएं, तो बीमारी का फैलाव तेज़ी से होता है।

हरियाणा के नगर निकायों के पास फॉगिंग मशीनों की संख्या न सिर्फ कम है बल्कि जिन मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है, उनमें से कई पुराने और खराब हालत में हैं। यह स्थिति स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति राज्य सरकार और निकायों की उदासीनता को उजागर करती है। फॉगिंग का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि यह मच्छरों के जीवन चक्र को तोड़ती है। मच्छर के अंडे से निकलने और उनके वयस्क होने की प्रक्रिया पर फॉगिंग सीधा असर डालती है। यदि यह नियमित अंतराल पर हो तो मच्छरों की संख्या तेजी से कम हो सकती है। लेकिन जब मशीनें ही उपलब्ध न हों, तो फॉगिंग का अभियान केवल कागजों में रह जाता है।

यह समस्या सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं है। प्रदेश के 1200 से अधिक गाँव जलभराव की समस्या से जूझ रहे हैं। गाँवों में नालियों की सफाई और कचरे के निस्तारण की व्यवस्था कमजोर है। पंचायतों के पास न तो पर्याप्त बजट है और न ही तकनीकी संसाधन। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों में डेंगू और मलेरिया का प्रकोप और भी खतरनाक हो सकता है। सरकारी नीतियों में बार-बार शहरी क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएँ और रोकथाम अभियान बिल्कुल नाममात्र के रह जाते हैं।

इस स्थिति की सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वास्थ्य विभाग और स्थानीय निकायों पर आती है। हर साल डेंगू का मौसम आता है और हर बार प्रशासन अचानक हाथ-पैर मारता है। जबकि यह समस्या नई नहीं है। फॉगिंग मशीनें सालभर सक्रिय रहनी चाहिए और नियमित अंतराल पर उनका रखरखाव होना चाहिए। लेकिन निकायों के पास अक्सर यह तर्क होता है कि बजट की कमी है। सवाल यह उठता है कि जब स्वास्थ्य सेवाओं पर ही खर्च नहीं होगा तो विकास का दावा किस आधार पर किया जाएगा?

मशीनों की कमी और लापरवाही का सीधा असर आम जनता पर पड़ता है। हर साल हजारों परिवार डेंगू से प्रभावित होते हैं। एक बार किसी घर का सदस्य डेंगू से बीमार हो जाए तो उस परिवार पर मानसिक, शारीरिक और आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। अस्पतालों में भर्ती का खर्च, दवाइयों और प्लेटलेट्स की कमी का संकट, लंबे समय तक काम और पढ़ाई से दूरी, बीमारी का डर और असुरक्षा—ये सभी पहलू जनता को झकझोरते हैं। खासकर गरीब और मध्यम वर्ग के परिवार सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं क्योंकि उनके पास महंगे इलाज का साधन नहीं होता।

## निवेश का नया दौर : भारत और चीन के बीच संभावनाओं की दिशा

शम्भू शरण सत्यार्थी

आज की दुनिया उस मोड़ पर खड़ी है जहाँ कोई भी देश अपने दम पर लंबे समय तक आर्थिक विकास नहीं कर सकता। संसाधन कहीं और हैं, तकनीक कहीं और है और बाजार कहीं और। इस आपसी निर्भरता ने वैश्विक निवेश और साझेदारी को मजबूरी ही नहीं बल्कि आवश्यकता भी बना दिया है। भारत, जो दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन चुका है, इसी प्रक्रिया का एक बड़ा केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यही कारण है कि हाल के वर्षों में जब चीन की 200 से अधिक कंपनियों ने भारत में निवेश करने की इच्छा जताई तो इस खबर ने आर्थिक गलियारों से लेकर राजनीतिक मंचों तक गहरी हलचल पैदा कर दी। यह महज पूँजी का मामला नहीं है बल्कि इसमें भविष्य की दिशा, भू-राजनीति और आत्मनिर्भरता का सवाल भी छिपा है।

अगर हम इतिहास की ओर देखें तो भारत और चीन दोनों ही प्राचीन सभ्यताएँ रही हैं और व्यापारिक दृष्टि से एक-दूसरे के साथ लंबे समय तक जुड़े रहे हैं। रेशम मार्ग इसका सबसे बड़ा उदाहरण है जिसने न केवल वस्तुओं बल्कि विचारों और संस्कृतियों का भी आदान-प्रदान करवाया किंतु आधुनिक काल में जब 1962 का युद्ध हुआ, तो दोनों देशों के बीच गहरे अविश्वास की दीवार खड़ी हो गई। इसके बावजूद आर्थिक वास्तविकताओं ने धीरे-धीरे इस दीवार में दरारें डालीं। 1990 के दशक में भारत ने उदारीकरण की राह पकड़ी और चीन पहले से ही वैश्विक व्यापार में अपनी स्थिति मजबूत कर चुका था। परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों में तेजी आई और आज स्थिति यह है कि चीन भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन चुका है। लेकिन तस्वीर इतनी सरल भी नहीं है। चीन ने पिछले चार दशकों में जिस चमत्कारी विकास को हासिल किया था, वह अब कई कारणों से थमने लगा है। चीन का घरेलू बाजार मंदी से गुजर रहा है, बेरोजगारी बढ़ रही है और पश्चिमी देशों के साथ उसके संबंध लगातार तनावपूर्ण बने हुए हैं। अमेरिका और यूरोप ने चीन की कई कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए हैं, तकनीकी क्षेत्रों में उसे अलग-थलग करने की कोशिश की है और "चाइना प्लस वन" रणनीति के तहत कंपनियाँ अब केवल चीन पर निर्भर नहीं रहना चाहतीं। उत्पादन लागत भी वहाँ बढ़ चुकी है। इन सब कारणों से चीन की कंपनियों को नए बाजारों और नए ठिकानों की तलाश है। भारत उनके लिए सबसे स्वाभाविक विकल्प बनकर उभर रहा है, क्योंकि यहाँ विशाल उपभोक्ता बाजार है, श्रमशक्ति प्रचुर मात्रा में है और राजनीतिक स्थिरता भी अपेक्षाकृत बेहतर है।

भारत की स्थिति भी निवेश की दृष्टि से कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। यहाँ हर साल लाखों युवा शिक्षा पूरी करके नौकरी की तलाश में निकलते हैं लेकिन विनिर्माण क्षेत्र में पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। हमारी अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा सेवा क्षेत्र पर टिका हुआ है, लेकिन विनिर्माण क्षेत्र अभी भी अपनी क्षमता के अनुसार योगदान नहीं दे पा रहा। "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे अभियानों का उद्देश्य यही है कि भारत एक मजबूत औद्योगिक शक्ति बने परंतु विदेशी निवेश के बिना यह लक्ष्य पूरा करना कठिन है। ऐसे में अगर चीन की कंपनियाँ भारत में कारखाने लगाती हैं, उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करती हैं तो यह भारत के लिए एक अवसर साबित हो सकता है।

अगर हम संभावित फायदों पर नज़र डालें तो सबसे पहला लाभ रोजगार के रूप में दिखाई देता है। लाखों युवाओं को सीधे-सीधे नौकरी मिलेगी और अप्रत्यक्ष रूप से भी अनेक अवसर पैदा होंगे। दूसरा लाभ तकनीकी हस्तांतरण का है। चीन ने मोबाइल निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और फार्मा जैसे क्षेत्रों में बड़ी प्रगति की है। अगर यह तकनीक भारत आएगी तो हमारी घरेलू कंपनियाँ भी इसे सीखेंगी और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाएँगी। तीसरा लाभ निर्यात क्षमता के रूप में सामने आएगा। भारत न केवल अपने उपभोक्ता बाजार को पूरा करेगा बल्कि इन कंपनियों के माध्यम से विदेशों में भी सामान निर्यात कर पाएगा। चौथा लाभ बुनियादी ढाँचे के विकास का होगा, क्योंकि जब निवेश आएगा तो सड़क, बिजली, पानी और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में भी सुधार होंगे। और अंततः यह संभावना बनेगी कि भारत "दुनिया की फैक्ट्री" कहलाने वाले चीन की जगह खुद एक मैन्युफैक्चरिंग हब बन सके। लेकिन इन सबके बीच चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। सबसे बड़ा सवाल राष्ट्रीय सुरक्षा का है। चीन की कंपनियों पर कई बार डेटा चोरी और जासूसी के आरोप लगे हैं। ऐसे में भारत को सतर्क रहना होगा कि कहीं आर्थिक सहयोग सुरक्षा के लिए खतरा न बन जाए। दूसरा खतरा घरेलू उद्योगों पर असर का है। बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाली चीनी कंपनियाँ भारतीय लघु और मध्यम उद्योगों को कमजोर कर सकती हैं जिससे आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्रभावित होगा। तीसरा खतरा आर्थिक निर्भरता का है। अगर भारत बहुत अधिक चीन पर निर्भर हो गया और भविष्य में दोनों देशों के बीच कोई राजनीतिक विवाद हुआ तो भारत की स्थिति कमजोर हो सकती है। चौथा खतरा नीति और भ्रष्टाचार से जुड़ा है। विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए भारत को नीतियाँ स्पष्ट करनी होंगी और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना होगा अन्यथा निवेशक असुरक्षित महसूस करेंगे।

दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों से भारत की तुलना की जाए तो तस्वीर और स्पष्ट हो जाती है। वियतनाम, बांग्लादेश, इंडोनेशिया और ताइवान सभी इस दौड़ में हैं। वियतनाम की नीतियाँ और व्यापारिक सुगमता भारत से बेहतर मानी जाती हैं, बांग्लादेश वस्त्र उद्योग में बड़ा खिलाड़ी बन चुका है, ताइवान तकनीक में आगे है और चीन से दूरी बनाए रखना चाहता है परंतु भारत की सबसे बड़ी ताकत उसका विशाल घरेलू बाजार है, जो इन देशों के पास नहीं है। यही कारण है कि चीन की कंपनियाँ भारत को प्राथमिकता दे रही हैं। अब प्रश्न उठता है कि भारत को किस तरह आगे बढ़ना चाहिए। सबसे पहली आवश्यकता है कि भारत निवेश का स्वागत तो करे, लेकिन शर्तों के साथ। रक्षा, संचार और डेटा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में चीन की कंपनियों को सीमित किया जाए। हर निवेश अनुबंध में तकनीकी हस्तांतरण की शर्त रखी जाए ताकि भारतीय उद्योग भी सीख सकें। छोटे उद्योगों को सुरक्षा कवच दिया जाए ताकि वे प्रतिस्पर्धा में टिक सकें। विदेशी निवेश की निगरानी के लिए स्वतंत्र एजेंसी बनाई जाए ताकि पारदर्शिता बनी रहे।

अगर भारत इन शर्तों के साथ निवेश स्वीकार करता है तो आने वाले दस-पंद्रह वर्षों में उसका चेहरा पूरी तरह बदल सकता है। पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का सपना साकार हो सकता है, भारत मैन्युफैक्चरिंग हब बन सकता है और रोजगार का महास्रोत खुल सकता है। परंतु अगर हमने बिना सोचे-समझे आँख मूँदकर निवेश स्वीकार कर लिया तो भविष्य में हम वही गलती दोहरा सकते हैं जो कई छोटे देशों ने की जहाँ विदेशी कंपनियों ने स्थानीय उद्योगों को समाप्त कर दिया और अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण जमा लिया।

## शीतनिद्रा की मदद से मनुष्य की उम्र बढ़ाने और डायबिटीज पर भी काबू पा सकते हैं

विजय गर्ग

वैज्ञानिक काफी लंबे समय से जानवरों में शीतनिद्रा की खूबियों का अध्ययन कर रहे हैं।

उन्होंने पता लगाया है कि शीतनिद्रा के जीन मनुष्यों में भी छिपे हुए हैं। ध्यान रहे कि भालू और चमगादड़ जैसे कुछ जीव-जंतु सर्दियों में दीर्घकालीन गहरी निद्रा में चले जाते हैं। इस अवस्था में उनकी शारीरिक क्रियाएं न्यूनतम स्तर पर होती हैं। ये कई महीनों तक बिना भोजन या पानी के जीवित रहते हैं। उनकी मांसपेशियां मजबूत रहती हैं। उनके शरीर का तापमान लगभग शून्य हो जाता है। ये जानवर अपनी दिल की धड़कन को कम कम कर सकते हैं। ऊर्जा के लिए वे अपने शरीर के जमा वसा के भंडारों का उपयोग करते हैं। इस अवस्था को शीतनिद्रा अथवा हाइबरनेशन कहा जाता है।

तकनीकी दृष्टि से शीतनिद्रा एक ऐसी अवस्था है जब शरीर का चयापचय (मेटाबॉलिज्म) धीमा हो जाता है। दूसरे शब्दों में शरीर को जीवित रखने वाली तमाम आंतरिक रासायनिक क्रियाएं धीमी हो जाती हैं। कोई जानवर कब धीमी शारीरिक गतिविधि की अवस्था में प्रवेश करेगा और कितने समय तक उस अवस्था में रहेगा, यह अलग-अलग जानवरों की जरूरतों पर निर्भर है। कुछ जानवर साल के कई महीनों तक शिथिल अवस्था में रहते हैं जबकि कुछ अन्य जानवर कुछ महीनों की अवधि में सिर्फ कुछ घंटों के लिए इस अवस्था में प्रवेश करते हैं। इन परिवर्तनों के बावजूद शीतनिद्रा में लीन जानवर स्वस्थ रहते हैं। वे उन स्थितियों से उबर जाते हैं जो अल्जाइमर, स्ट्रोक या डायबिटीज जैसी मनुष्य की बीमारियों से मेल खाती हैं।

अब शोधकर्ताओं का मानना है कि मनुष्यों में भी यह क्षमता हो सकती है। उनका कहना है कि शीतनिद्रा को बढ़ावा देने वाले जीन मानव डीएनए में मौजूद हो सकते हैं। ये आनुवंशिक लक्षण, जिन्हें शीतनिद्रा में रहने वाले जानवरों के लिए विशिष्ट माना जाता है, हमारे भीतर निष्क्रिय अवस्था में हो सकते हैं। साइंस पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार इन जीनों को समझने और उन्हें जानने से चयापचय संबंधी रोगों और स्नायु विकारों का उपचार हो सकता है। शीतनिद्रा में रहने वाले जंतु विशेष जीन का उपयोग कैसे करते हैं, यह पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने वसा द्रव्यमान और मोटापे से जुड़े एक जीन समूह पर ध्यान केंद्रित किया। शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर सर्दियों के दौरान वसा भंडारण और ऊर्जा को नियंत्रित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं।

यूटा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक के डॉ. क्रिस ग्रेग ने बताया कि इस जीन समूह की सबसे खास बात यह है कि यह आनुवंशिक दृष्टि से मानव मोटापे का सबसे प्रबल रिस्क फैक्टर है। शोधकर्ताओं को आसपास के डीएनए क्षेत्र मिले जिनका उपयोग शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर जीन की गतिविधि को चालू या बंद करने के लिए करते हैं। ये नियंत्रण स्वयं जीन को नहीं बदलते। बल्कि ये जीन के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे किसी ऑर्केस्ट्रा में ध्वनि को नियंत्रित किया जाता है।

ये क्षेत्र शीतनिद्रा में रहने वालों को सर्दियों से पहले वजन बढ़ाने और सोते समय वसा को कुशलतापूर्वक जलाने में मदद करते हैं। शोधकर्ताओं ने इन डीएनए क्षेत्रों को चूहों में प्रविष्ट किया। परिणाम स्पष्ट थे। कुछ चूहों का वजन आहार के आधार पर बढ़ा या घटा। अन्य चूहों के शरीर के समग्र चयापचय में परिवर्तन देखा गया। अध्ययन से जुड़ी शोधकर्ता सुसन स्टीनवांड ने बताया, जब आप इनमें से किसी एक तत्व को नष्ट कर देते हैं, तो सैकड़ों जीनों की गतिविधि बदल जाती है। शीतनिद्रा में रहने वाले जीन वसा और ऊर्जा को नियंत्रित करते हैं। ये डीएनए नियामक नए जीन नहीं बनाते। इसके बजाय, वे उन अवरोधों को हटाते हैं जो चयापचय में लचीलेपन को सीमित करते हैं। शीतनिद्रा में रहने वाले जानवर शायद कुछ बाधाओं को दूर करने के लिए विकसित हुए होंगे। इससे वे सक्रिय और निष्क्रिय अवस्थाओं के बीच आसानी से बदलाव कर सकते हैं।

वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर हम अपने जीन को शीतनिद्रा में रहने वालों की तरह थोड़ा और नियंत्रित कर सकें, तो शायद हम टाइप 2 डायबिटीज पर उसी तरह काबू पा सकते हैं जिस तरह शीतनिद्रा में रहने वाला जानवर शीतनिद्रा से सामान्य चयापचय अवस्था में वापस लौटता है। हमारे और शीतनिद्रा में रहने वाले जानवरों के बीच मुख्य अंतर शायद यह है कि हम एक ही जीन समूह को कैसे नियंत्रित करते हैं। यह अंतर्दृष्टि इस संभावना को जन्म देती है कि मनुष्य किसी दिन अपने चयापचय को इसी तरह समायोजित कर सकते हैं। शीतनिद्रा ने समय के साथ जीनों को बदल दिया है। इन आनुवंशिक सुरागों को खोजने के लिए शोधकर्ताओं ने कई उन्नत विधियों का उपयोग किया। उन्होंने सबसे पहले उन डीएनए क्षेत्रों की खोज की जो अधिकांश स्तनधारियों में 10 करोड़ से अधिक वर्षों तक स्थिर रहे, लेकिन शीतनिद्रा में रहने वाली प्रजातियों ने हाल ही में नाटकीय परिवर्तन दिखाए। लंबे समय से संरक्षित डीएनए में इस तरह के अचानक बदलाव शीतनिद्रा व्यवहार के विशिष्ट अनुकूलन का संकेत देते हैं। इसके बाद शोधकर्ताओं ने उपवास करने वाले चूहों का अध्ययन किया। उपवास शीतनिद्रा में देखी जाने वाली कुछ जैविक स्थितियों को दर्शाता है, जिनमें कम ऊर्जा सेवन और धीमा चयापचय शामिल है। यह जीन गतिविधि के एक जटिल क्रम को सक्रिय करता है। टीम ने पता लगाया कि इस अवधि के दौरान कौन से जीन चालू या बंद हुए। उन्होंने व्यापक जीन नेटवर्क को नियंत्रित करने वाले 'हब' जीन की पहचान की।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब***

# मोदी का 'अर्थपूर्ण' राजनैतिक बम

**डॉ घनश्याम बादल**

'मोदी है तो मुमकिन है' का नारा सत्तारूढ़ दल ऐसे ही नहीं देता बल्कि उसके पीछे मोदी के प्रभामंडल को रेखांकित करना तो होता ही है, साथ ही साथ इस बात का भी इशारा होता है कि उनके पास एक ऐसा नेता है जिसके लिए कुछ भी करना असंभव नहीं है ।

दूसरे शब्दों में बिना कहे ही कहा जाता है कि विपक्ष के पास नरेंद्र मोदी की तोड़ का दूसरा नेता है ही नहीं। पिछले 11 वर्षों से केंद्र की राजनीति को देखा जाए तो निश्चित रूप से यह राजनीति एक ही व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती दिखती है और उस व्यक्ति का नाम है नरेंद्र मोदी।

इंदिरा गांधी के बाद वे ऐसे अकेले नेता है जो यह जानते हैं कि राजनीति के केंद्र में कैसे रहा जाए. उनके पास हर परिस्थिति के लिए एक मास्टरस्ट्रोक होता है। पहलगाम हमले का जवाब वें ऑपरेशन सिंदूर से देते हैं तो टैरिफ ट्रंप की हवा निकालने के लिए रूस और चीन से आगे बढ़कर हाथ मिला लेते हैं और भारत के निर्यात को बहुमुखी बनाने के लक्ष्य को साधते हुए यूरोपियन यूनियन संघ,ऑस्ट्रेलिया अफ्रीका और यूरेशिया महाद्वीपों को साधने में जुट जाते हैं और जब विपक्ष बिहार में वोट के अधिकार की रैलियों में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ दहाड़ते देखते हैं तभी अचानक अपनी मां को गाली दिए जाने के भावुक मुद्दे के साथ उसके असर को कम करने आ जाते हैं । जब टैरिफ की वजह से भारतीय निर्यातकों का नुकसान होते हुए देखते हैं या देश में महंगाई की मार से हवा का रुख पलटते हुए भांपते हैं, तब जीएसटी की दरें कम करने का ब्रह्मास्त्र चला देते हैं।

अब आम आदमी या राजनीतिक दल इसे किसी भी तरीके से देखें लेकिन इसके पीछे जो अर्थशास्त्रीय एवं राजनीतिक विश्लेषण अचंभित करने वाला है । जीएसटी दरों में कमी के ब्रह्मास्त्र से नरेंद्र मोदी ने एनडीए के लिए बहुत कुछ साधने की चाल चली है।

यदि विश्लेषण करें तो वे जनता को यह संदेश दे रहे हैं कि आम आदमी के कल्याण के लिए उसे राहत देते हुए उनकी वित्त मंत्री सीतारमन ने जीएसटी की दरों को कम किया है ।

अभी तक देश में जीएसटी की चार दरें थी 5% 12% 18% एवं 30% तथा 'सिन प्रोडक्ट' माने जाने पदार्थों पर यह दरें और भी ऊंची थी. जब अमेरिकी राष्ट्रपति देश की अर्थव्यवस्था को डैड बता रहे थे और विपक्ष के नेता प्रधानमंत्री और सरकार पर ताबड़तोड़ वार कर रहे थे तब नरेंद्र मोदी की टीम अलग ही विश्लेषण करने में जुटी थी और अचानक ही वित्त मंत्री ने मीडिया में आकर जीएसटी की 12% एवं 30% की दरें समाप्त कर दी यानी अब देश में जीएसटी की केवल दो दरें रहेंगी 5% एवं 18% जो 22 सितंबर से लागू हो जाएंगी।

यदि गहन अध्ययन करें तो पता चलता है कि जीएसटी दरों में कमी एक जटिल मुद्दा है जिसके राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक पहलू हैं। राजनीतिक रूप से यह कदम सरकार की लोकप्रियता बढ़ाने या चुनावी लाभ प्राप्त करने की रणनीति भी हो सकती है।

सरकार की मानें तो जीएसटी दरों में कमी से मुद्रास्फीति कम होगी, व्यापार में वृद्धि और रोजगार के अवसर बढ़ेंगें, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह भारत को आकर्षक निवेश वाला देश बना बनाएगी और इससे निर्यात को बढ़ावा मिलेगा।

आम आदमी के जीवन पर जीएसटी दरों में कमी का सीधा प्रभाव वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में कमी के रूप में दिखाई देने की प्रबल संभावना है । इससे आम उपभोक्ता की क्रय शक्ति बढ़ेगी और जीवन स्तर में सुधार होगा हालांकि दीर्घकालिक प्रभाव सरकार के राजस्व और सार्वजनिक सेवाओं पर निर्भर करेगा।

एक ओर जीएसटी दरों में कमी के आर्थिक प्रभाव होंगे। इससे अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक व सकारात्मक दोनों प्रभाव देखने को मिलेंगे. जीएसटी दरों में कमी का अर्थ है सरकार को अब कर के रूप में करीब 2000 करोड रुपए कम मिलेंगे लेकिन इसकी भरपाई काफी हद तक होने की संभावना जल्दी ही बनती है क्योंकि कीमतें कम होने से उपभोक्ताओं की मांग बढ़ जाएगी जिससे उत्पादन एवं बाजार दोनों नई ऊंचाइयां प्राप्त करेंगे और जब देश में जीएसटी की दर कम होगी तो विदेशी निवेशक भी भारत की ओर एक बार फिर से रुख करना शुरू कर देंगे यानी विदेश का पैसा देश में आएगा जिससे अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा।

लेकिन जीएसटी की दरों को जिस समय कम करने की घोषणा की गई है, राजनीतिक दृष्टि से उसके भी अलग मायने हैं. बिहार और बंगाल के साथ दूसरे राज्यों के विधानसभा चुनाव सिर पर हैं और ऐसे में सरकार का लोकप्रिय कदम मतदाताओं को उसकी ओर खींचेगा, इसीलिए जीएसटी की दरों में कमी को चुंबक की तरह हवा में उछाल दिया गया है ।

जीएसटी दरें कम करने के पीछे सत्ताधारी दल जो कारण गिना रहा है, उनमें महंगाई नियंत्रण, मुद्रास्फीति पर अंकुश, उपभोग को बढ़ावा और अर्थव्यवस्था में गतिशीलता के साथ,व्यापार को प्रोत्साहन और छोटे उद्योगों को राहत मिलना है. साथ ही टैक्स अनुपालन बढ़ाना व कर चोरी की प्रवृत्ति को रोकने की मंशा भी बताई जा रही है वहीं विपक्ष के अनुसार इसकी असली वज़ह राजनीतिक है और चुनावी समय में जनता में लाभ लेने के लिए सरकार ने यह चाल चली है जबकि असलियत में इसका लाभ मुख्य रूप से उद्योगपति उठाएंगे और आम जनता तक इसका लाभ नहीं पहुंच पाएगा।

लेकिन वित्त मंत्री ने यह कहकर आम आदमी को आश्वस्त करने की कोशिश की है कि वह इस बात को सुनिश्चित करेंगी कि जीएसटी की घटी हुई दरों का लाभ आम आदमी तक पहुंचे न कि केवल कंपनियां इससे लाभान्वित हों।

उनके अनुसार रोज़मर्रा की वस्तुएँ जैसे दवाइयाँ, कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक वस्तएं सस्ती हो जाएंगी. परिवारों का खर्च कम होने से से उनकी बचत बढ़ेगी और महंगाई का दबाव घटने से जीवन स्तर में सुधार होगा । वें तो इससे इतनी उत्साहित हैं कि देश की अर्थव्यवस्था को अगले कुछ महीनो में ही तीसरे पायदान पर पहुंच जाने की बात कह रही हैं।

निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि जीएसटी दरों में कमी से अल्पकाल में सरकार के राजस्व पर दबाव पड़ सकता है लेकिन दीर्घकाल में यह मांग, उत्पादन, रोजगार और विकास को बढ़ावा मिलेगा और सरकार को आने वाले विधानसभा चुनाव में इसका राजनीतिक लाभ भी यदि मिले तो इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

# आत्महत्या किसी भी सामान्य जीव की नैसर्गिक प्रवृत्ति है ही नहीं

**डॉ. एच.एस. राठौर**

पृथ्वी पर जीवन विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी एवं सूक्ष्म जीवों के रूपों में प्रकट होता है और एक समय पर इनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है जिसे मृत्यु कहते है। मनुष्य जीवों में सर्वश्रेष्ठ है एवं विकासवाद के क्रम में सर्वोच्च स्थान पर है। सबसे परिष्कृत मस्तिष्क एवं किसी भी ऋतु में सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता सिर्फ मनुष्यों में ही विकसित हुई है। जीवों का जन्मजात (नैसर्गिक) व्यवहार उनकी प्रवृत्ति (इंसटिंक्ट) के अनुसार ही होता है। यह उनके मस्तिष्क एवं ग्राह्य अंगों से नियंत्रित होता है। विकासवाद के अनुसार जैसे-जैसे तंत्रिका तंत्र विकसित हुआ, वैसे जीवों की प्रवृत्ति (व्यवहार) भी बदलती गई। प्राणियों में सीखने की प्रवृत्ति भी विकसित हुई एवं वानरों तक विकास होते होते एक प्रवृत्ति और विकसित हो गई जिसे लरनिंग-रिसनिंग नाम दिया गया जिसका अर्थ है सीखना-सोचना एवं सीख के अनुभव की याद के आधार पर नयी समस्या हल करने की क्षमता। मानव के मस्तिष्क में सोचने, समझने, विचार करने एवं समस्याओं के निदान की अद्भुत क्षमता होती है। इस अवस्था में मनुष्य में पशुओं वाली (पाशविक) प्रवृत्तियाँ न्यूनतम स्तर पर होती है एवं नियंत्रित भी होती है (भूख, प्यास, नींद, क्रोध, सहवास आदि)। सही मायनों में प्रवृत्तियों का नियंत्रित प्रवाह ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है। कुछ मनुष्यों में मस्तिष्क की अवस्था बाल्यकाल से, कुछ में विशेष वातावरण से एवं कुछ में अभ्यास से मनन में भी उच्चतर स्थित में पहुँच जाती है जिसे प्रज्ञा कहते हैं। ऐसे व्यक्ति की गणना समझदार या ज्ञानियों में होती है। आमजनों में भी ऐसे व्यक्ति को सुलझे हुए व्यक्तित्व वाला समझा जाता है।

हर युग में मनुष्यों के जीवन के पुराने परम्परागत तरीकों से हट कर कुछ नये अवसर आते हैं जिनके लिए युवाओं में एवं बच्चों में भी आकर्षण होता है। इससे प्रतिस्पर्धाएँ निरन्तर बढ़ती है एवं सफलता- असफताओं का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है। असफल युवा कुछ प्रयासों के बाद अपनी पसन्द बदलते हुए अन्य मुकाम पर पहुँच जाते हैं । इस स्थिति में भी अधिकांश लोग जो भी प्राप्त हो गया, उससे संतुष्ट होकर विवाह करके जीवन यात्रा प्रारम्भ कर देते है। कुछ वर्तमान नौकरी के साथ कोई बेहतर विकल्प तलाशते हैं, उसकी तैयारी भी करते है एवं सफल भी होते हैं। कुछ युवा भारी मन से जो मिल गया, उसे कुंठा के साथ निर्वाह करते हैं एवं मन में मलाल पाल लेते हैं कि उन्हें उनकी काबिलियत से कम प्राप्त हुआ है। कुछ तो अवसाद की अवस्था में पहुँच जाते है।

असंतोष - असफलता का नतीजा आत्महत्या जैसे सामाजिक अपराध में होता है। पिछले कुछ वर्षों में आत्महत्या के मामलों के आँकड़े बढ़े है जो गंभीर चिन्ता का विषय है। सभी आयु, लिंग, धर्म एवं व्यवसाय के लोगों में आत्महत्या करने के मामले जानकारी में आते रहते है। इस मुद्दे पर कुछ कहने-सुनने-लिखने पढ़ने से पहले कुछ तथ्यों पर गौर करना आवश्यक होगा। विकासवाद के सिद्धान्तों के अनुसार प्राणी मात्र में हर हाल (परस्थिति) में जिन्दा रहने की तमन्ना के साथ बेहतर जीवन जीने की एवं अधिकतम सन्तान उत्पन्न की नैसर्गिक प्रवृत्ति होती ही है। ऐसा नहीं होने की दशा में जीवों का विकास सम्भव ही नहीं था अतः जीव सदैव जिन्दा रहना चाहता है, चाहता रहेगा जब तक शरीर प्राकृतिक या दुर्घटनावश मृत्यु को प्राप्त नहीं हो जाता।

जाहिर है कि जीवों (प्राणियों) में आत्महत्या जैसा व्यवहार होना अपेक्षित ही नहीं हालांकि कुछ जीवों में ऐसा व्यवहार देखा गया जिससे ऐसा भ्रम एवं असमंजस्य ही रहा कि विकासवाद के समय आत्महत्या की प्रवृत्ति तो नहीं पनप रही थी। इसी संदर्भ में यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं जिनका आधार उपलब्ध प्रकाशित शोधपत्र एवं विकीपीडिया हैं जो इस धारणा को पूरी तरह से नकारने में सहायक होंगे कि आत्महत्या कोई नैसर्गिक प्रवृत्ति रही है।

कई पक्षियों के नर-मादा के जोडे.में से किसी एक की मृत्यु के बाद साथी धीरे-धीरे भोजन-पानी छोड़ देता है जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। कुछ कुत्ते एवं घोड़े घर के हर सदस्य द्वारा दिया गया भोजन ग्रहण नहीं करते हैं एवं जिस सदस्य ने कुत्ते या घोड़े को प्रारम्भ से ही लालन-पालन किया हो, उसकी मृत्यु के पश्चात भोजन-पानी ग्रहण नहीं करते एवं मृत्यु को प्राप्त होते है। वास्तव में पशु-पक्षी किसी व्यक्ति या माहौल के आदी हो जाते हैं एवं उससे वंचित होने पर, आदत से लाचार होने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। अतः इस तरह के प्रकरणों को आत्महत्या से जोड़ना सर्वथा गलत होगा। कुछ कुत्तों एवं बतखों द्वारा स्वयं को जल में डुबाकर मारने की घटनाओं का भी जिक्र मिलता है परन्तु सच्चाई विवादित ही रही।

अफ्रीका में पाये जाने वाले काले मुँह के बन्दरों के समूह के कुछ बन्दर (वरवेट मंकी) किसी हिंसक पशु के आने पर जोरो से शोर मचाकर आक्रमणकारी को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं ताकि शेष साथी भाग सके। प्रायः शोर मचाने वाले बन्दर आक्रमणकारियों द्वारा मार दिये जाते हैं परन्तु ऐसी घटनाओं को आत्महत्या का प्रयास तो नहीं माना जा सकता है। एक डाल्फिन द्वारा अपने आपको दम घोंट कर मरने का आरोप एक टेलीविजन शो के मार्फत साठ के दशक में प्रदर्शित फिल्म 'द कोव' में बताया गया था जिसकी पुष्टि वैज्ञानिकों द्वारा कभी नहीं की गई। अरस्तू ने एक घोड़े द्वारा आत्महत्या करने का जिक्र उनकी पुस्तक 'हिस्ट्री आफ ऐनीमल्स' में मिलता है हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की गई। जीवों का विशेष व्यवहार ' एलटूइजम' (परोपकारिता या परहितवाद) जिसका सम्बन्ध विकासवाद से भी जोड़ा गया है, इसका उदाहरण देखते है। एक मादा मकड़ी स्टीगोडायफस का स्वयं के नवजात शिशुओं द्वारा भक्षण एवं एक मकड़ी के नर का उसी की मादा द्वारा निशेचण पश्चात खाया जाना। ये उदाहरण एलटूइजम की पराकाष्ठा है. इसके बावजूद इसे आत्महत्या तो नहीं कहा जा सकता।

शोधकर्ताओं ने मनुष्य में सेल्फ डिस्ट्रक्शन बिहेवियर (स्वयं को कष्ट या हानि पहुँचाने का प्रयास) जैसे मुद्दे को असामान्य श्रेणी का व्यवहार माना एवं आत्महत्या को भी इसमें शामिल कर लिया। आनुवांशिकी आधारों (जेनेटिक बेसिस) को जानने हेतु कंडीडेट जीन (जिम्मेदार डी.एन.ए. के हिस्से) को पहचानने की दिशा में भी गहन शोध कार्य किये गये। सिरेटोनिन को व्यक्ति का मिजाज नियंत्रक (मूड रेगुलेटर) रसायन मानकर इसके निर्माण में गड़बड़ी का कारण मानव जीन टी.पी.एच. वन में माइक्रोडिलीशन एवं सिरेटोनिन रिसेप्टर की गड़बड़ी आत्मघाती व्यवहार की जिम्मेदार ठहराई गई। महिलाओं में पुरुषों से दुगुने आत्महत्याओं का सम्बन्ध एक्स क्रोमोसोम में जुड़े जीन (एचटीआरटूसी) से भी जोड़ा गया। सम्भव है कि भविष्य में प्रसव पूर्व आनुवांशिकी विकृतियों के निदान हेतु गर्भस्थ भ्रूण के जीनोम (प्रत्येक कोशिका के केन्द्र स्थित डीएनए) के अध्ययन (प्रिनेटल डायग्नोसिस) से ऐसी आनुवांशिकी गड़बड़ियों का पता लगने से आनुवांशिकी सलाह केन्द्र की सिफारिश उपरान्त विधि सम्मत चिकित्सीय आनुवांशिक विज्ञानी की निगरानी में गर्भपात किया जा सकेगा। भविष्य में ऐसी जागरूकता एवं सुविधाएँ होने से ही शब्द कोषों से 'आत्महत्या' जैसा घृणित शब्द एवं समाज से आत्महत्या जैसा सामाजिक अपराध लुप्त हो सकेगा। वास्तव में आत्महत्या किसी भी सामान्य जीव की नैसर्गिक प्रवृत्ति है ही नहीं। यदि ऐसा होता तो सभी जीवों में यह प्रवृत्ति समान रूप से देखने को मिलती।

# वरिष्ठ साहित्यकार लेखक बच्चुलाल दिक्षित गुरु जी जैसे व्यक्तित्व कलमकारो के मार्गदर्शक थे।

**स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर**

7 सितंबर 2025 की रात पुर्णिमा के दिन वह ग्रहण वाली रात साहित्यक क्षेत्र के वयोवृद्ध श्री बच्चुलाल दिक्षित गुरु जी के देवलोकगमन की इस खबर से मन आज बहुत दुखी है । हमारे मध्यप्रदेश के भिंड के वरिष्ठ साहित्यकार लेखक आदरणीय गुरुदेव श्री बच्चूलाल जी दीक्षित जी के निधन की खबर से हम सभी कलमकारो के लिए दुःख का छ्ण है , पर नियती के आगे सब नतमस्तक है। शरीर के क्षणभंगुर होने पर गुरु जी दिक्षित जी ने जीवन दर्शन को शब्दों के मध्यम से कई बार सृजन किया। उनसे मेल-मुलाकात तो मेरी नहीं हुई पर मुझे मोबाइल के जरिए वार्तालाप पिछले कई सालों से ज़ारी थी। उनका मेरे प्रति बहुत ज्यादा स्नेह व वात्सल्य भाव था। दुख-सुख में वह मेरे मार्ग को प्रशस्त करतें रहते थे। मेरे युवा सुपुत्र की मृत्यु पर उन्होंने कई बार मुझसे फोन के मध्यम से बहुत समझाया दिलासा दिया। गुरु जी सही में मेरे लिए सारथी थे। मंथन साहित्यिक परिवार ग्रुप के मुखिया और शिक्षक दिक्षित गुरु जी ने इसे एक मोती में पिरोकर एकजुटता से चलाया। साहित्यकारों के लिए पीडीएफ व अन्य साहित्य गतिविधियों में वह सभी को जोड़कर रखते थे।उन्होंने बहुत पुनीत कार्य किया पटल पर कोई वाद-विवाद या कोई परेशानी अगर होती थी तो आप ग्रुप के संचालक के रुप में अपनी जिम्मेदारी निभाते थे । आप हमेशा बडे शांतभाव से समस्या को सुलझाने हेतु आगे रहते थे। आदरणीय दिक्षित गुरु जी और उनकी साहित्यिक टीम भावना से मदद करते हुआ आगे बढ़ते थे। आप ने काव्य पाठ व साहित्यक गतिविधियों में पूरे देश के कलमकारो को आप आनलाइन गोष्ठी काव्य रचना का पाठ विभिन्न विषयों पर साक्षात्कार कर साहित्य सुधा को तृप्त करते रहते थे। मुझे भी उनके साथ शिवाजी महाराज के हिंदवी पर आनलाइन कविता पाठ करने का मौका मिला था। आप ने मध्यप्रदेश में मालवा निमाड़ क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योति को प्रज्वलित किया था जब आप शिक्षक थे तब धार, मनावर झाबुआ, बड़वानी, खण्डवा, आगर-मालवा नीमच आदि जिलों में आप शिक्षक बन बच्चों को पढ़ाया था। आप के परिवार के सदस्य इन्दौर में भी रहते हैं और वहां यहां आते जाते रहते थे। पर मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। आप की लेखनी के हर एक रंग हम हर रोज दैनिक इन्दौर समाचार अखबार में देखते थे।

# हृदय स्वास्थ्य संकट: भारत में मृत्यु के पीछे छुपा खतरा !

भारत में हृदय रोग मृत्यु का प्रमुख कारण बने हुए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में हृदय रोगों के मामलों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है, और यह वैश्विक औसत से भी अधिक है। इसका प्रमुख कारण उच्च एलडीएल (खराब) कोलेस्ट्रॉल स्तर है, जो समय पर जांच और उपचार से नियंत्रित किया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज की आधुनिक दुनिया में जीवनशैली में तेजी से बदलाव आया है। तकनीकी विकास, काम का तनाव, असंतुलित खानपान और शारीरिक गतिविधियों की कमी ने मानव स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाला है।सच तो यह है कि आज की भागम भाग भरी इस जिंदगी में जंक फूड, प्रोसेस्ड फूड, अधिक तेल, नमक और शक्कर का सेवन बढ़ गया है। फल, सब्ज़ियाँ और फाइबर युक्त भोजन की कमी से शरीर में वसा जमा होती है और अधिक कैलोरी सेवन से मोटापा बढ़ता है, जो हृदय रोग का बड़ा कारण है। यदि हम यहां पर भारत में मोटापे की राष्ट्रीय स्थिति की बात करें तो भारत में मोटापे की औसत दर लगभग 40.3% है, जिसमें महिलाओं में यह दर 41.88% और पुरुषों में 38.67% है। शहरी क्षेत्रों में यह दर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक है। आंकड़े बताते हैं कि पुडुचेरी, चंडीगढ़, और दिल्ली जैसे राज्यों में मोटापे की दर उच्चतम है। उदाहरण के लिए, पुडुचेरी में महिलाओं में मोटापे की दर 47.6% और पुरुषों में 43.3% है। वहीं दूसरी ओर यदि हम यहां पर महिलाओं और युवाओं में मोटापे की स्थिति की बात करें तो 35 से 49 वर्ष की आयु वर्ग में लगभग 50% महिलाएँ या तो अधिक वजन वाली हैं या मोटापे से ग्रस्त हैं। यह स्थिति विशेष रूप से दक्षिण एशियाई महिलाओं में अधिक देखी जाती है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शहरी कॉलेज छात्रों में मोटापे की दर 38.4% है, जिसमें 19.4% छात्रों में क्लास I मोटापा, 9.6% में क्लास II मोटापा, और 0.6% में मोर्बिड मोटापा पाया गया। एक हालिया अध्ययन के अनुसार, भारत के लगभग २0% परिवारों में सभी वयस्क सदस्य अधिक वजन वाले या मोटापे से ग्रस्त हैं। आंकड़े बताते हैं कि 5 से 19 वर्ष की आयु वर्ग में मोटापे की दर 8.4% और अधिक वजन की दर 1२.4% है। बहरहाल,आज पहले की तुलना में शारीरिक गतिविधियों में भी कमी आई है। ऑफिस में लंबे समय तक बैठकर काम करना, वाहन का अधिक उपयोग और व्यायाम की कमी से रक्त संचार धीमा होता है।शरीर में ऊर्जा का उपयोग न होने से अतिरिक्त वसा जमा होती है और धमनियों में रुकावट की संभावना बढ़ती है। धूम्रपान, तंबाकू व शराब सेवन, और नींद की कमी से हार्मोन असंतुलन, मोटापा और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। इस क्रम में हाल ही में कॉजेज ऑफ डेथ इन इंडिया: २0२1-२३ शीर्षक से जारी रिपोर्ट बताती है कि भारत में सबसे अधिक करीब 31 फीसदी मौतें दिल की बीमारियों के कारण होती हैं। सर्वेक्षण में यह पता चला है कि 30 से अधिक उम्र वाले लोगों में मौत की सबसे बड़ी वजह यही है। देश के २8 राज्यों और आठ केंद्रशासित क्षेत्रों में करीब 88 लाख लोगों पर किए गए इस सर्वेक्षण से यह पता लगाने की कोशिश की गई थी कि भारत में मौत की वजह क्या है और किस बीमारी से कितनी जान जा रही है? एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार २0२1 में कोविड-19 महामारी के कारण मृत्यु दर में वृद्धि हुई। हालांकि, २0२२ और २0२3 में स्थिति में सुधार देखा गया, लेकिन महामारी के प्रभाव से उत्पन्न स्वास्थ्य संकटों का असर अभी भी महसूस किया जा रहा है। आत्महत्या भी मृत्यु का एक बड़ा कारण बनकर उभर रही है।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार साल २0२२ में भारत में 171,000 आत्महत्याएँ दर्ज की गईं, जो २0२1 की तुलना में 4.२% अधिक थीं। यह आंकड़ा २018 की तुलना में २7% अधिक है। आत्महत्याओं में दैनिक वेतनभोगी श्रमिकों की संख्या अधिक है, जो मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता को दर्शाता है। इतना ही नहीं, २0२1 में भारत में 155,6२२ सड़क दुर्घटनाएँ हुईं, जिनमें से 69,२40 मौतें दोपहिया वाहनों से संबंधित थीं। राष्ट्रीय राजमार्गों पर दुर्घटनाओं की संख्या अधिक है, जो सड़क सुरक्षा उपायों की आवश्यकता को दर्शाता है। भारत में हर साल लगभग २२0,000 लोग ट्यूबरकुलोसिस (टीबी) के कारण मरते हैं। यह देश में संक्रामक रोगों में प्रमुख है और वैश्विक टीबी के मामलों का एक बड़ा हिस्सा भारत में है। इतना ही नहीं,जलजनित घटनाएँ, विशेषकर बच्चों के लिए, एक प्रमुख असंक्रामक मृत्यु कारण हैं। सर्वेक्षण बताते हैं कि भारतीयों में मौत की सबसे बड़ी वजह (56.7 फीसदी) गैर-संक्रामक रोग हैं, जिसके बाद सांस के संक्रमण से लोगों की जान (9.3 प्रतिशत) जा रही है। फिर, कैंसर और ट्यूमर, सांस संबंधी अन्य रोगों का स्थान आता है। वैसे, नवीनतम २0२२ के वैश्विक आंकड़े भी यही बताते हैं कि दुनिया में सबसे अधिक मौतें (लगभग 3२ प्रतिशत) हृदय संबंधी बीमारियों से ही होती हैं। वास्तव में, आज की भागम-भाग भरी जिंदगी में हमें यह चाहिए कि हम नमक, चीनी और वसा आदि पर नियंत्रण करें तथा हमें यह चाहिए कि हम संतुलित और पौष्टिक भोजन लें। इतना ही नहीं,कम से कम 30 मिनट रोज नियमित व्यायाम करें। तनाव कम करने के लिए योग, ध्यान और गहरी साँस लेने की तकनीक अपनाएँ। धूम्रपान और शराब से बचें।पर्याप्त नींद लें तथा नियमित स्वास्थ्य जांच कराएँ और ब्लड प्रेशर व शुगर पर नज़र रखें। वास्तव में, सच तो यह है कि यदि शारीरिक निष्क्रियता से बचा जाए, तो हृदय रोगों से काफी हद तक बचाव हो सकता है। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत मोटापे और अधिक वजन से ग्रस्त वयस्कों वाले देशों में चीन के बाद दूसरे स्थान पर आता है। आंकड़े बताते हैं कि २0२1 में यहां की 18 करोड़ आबादी मोटापे की शिकार थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि अत्यधिक वजन सीधे तौर पर दिल की बीमारियों से जुड़ा है। मोटापे से रक्तचाप(बीपी) बढ़ने के साथ-साथ दिल की धड़कन अनियमित हो सकती है और शरीर में कोलेस्ट्रॉल का स्तर भी बढ़ सकता है, जो हृदयाघात की बड़ी वजहों में एक है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ समय पहले लाल किले से देशवासियों को अपने संबोधन में मोटापा कम करने का आह्वान करते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपनाने पर ज़ोर दिया था। उस समय उन्होंने यह कहा था कि-' बढ़ता मोटापा न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर बल्कि समाज और देश की उत्पादकता पर भी नकारात्मक असर डालता है।'दरअसल, उस समय हमारे देश के प्रधानमंत्री ने लोगों से जागरूक होकर संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, योग, और सक्रिय जीवनशैली अपनाने की अपील की थी। उन्होंने यह बताया था कि आधुनिक जीवनशैली में जंक फूड, शारीरिक गतिविधि की कमी और मानसिक तनाव मोटापे की बड़ी वजह बनते जा रहे हैं।इसके समाधान के रूप में उन्होंने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे कि स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, फिट इंडिया मूवमेंट, और योग दिवस जैसे कार्यक्रमों का भी उल्लेख अपने संबोधन में किया था। इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने की बात उन्होंने कही थी। वास्तव में, आज के समय में स्वस्थ जीवनशैली के लिए लोगों को जागरूक करना निहायत ही जरूरी है। आज तकनीक और नवाचार का युग है और इस युग में हृदय रोगों से बचाव में तकनीक का योगदान आज बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। आधुनिक चिकित्सा, डिजिटल उपकरणों और स्वास्थ्य निगरानी प्रणालियों की मदद से हृदय संबंधी समस्याओं को समय पर पहचानना और उनका इलाज करना आसान हुआ है।फिटनेस ट्रैकर्स और स्मार्टवॉच इसमें बहुत ही उपयोगी साबित हो सकते हैं। आज के समय में डॉक्टर से ऑनलाइन परामर्श संभव है।टेलीमेडिसिन सुविधा के कारण विशेषकर दूरस्थ क्षेत्रों के लिए आज नियमित जांच और उपचार योजना बनाना आसान हो गया है।इमेजिंग तकनीकें जैसे कि इकोकार्डियोग्राफी और सीटी एंजियोग्राफी हृदय की स्थिति की स्पष्ट जानकारी देती हैं।एआई आधारित निदान भी उपयोगी साबित हो सकता है। इतना ही नहीं,हार्ट मॉनिटरिंग डिवाइसेज़ घर बैठे उपयोग कर सकते हैं और डॉक्टर से नियमित डेटा साझा कर सकते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि तकनीक ने हृदय रोगों की पहचान, उपचार और रोकथाम को अधिक प्रभावी, सुरक्षित और सहज बना दिया है। स्मार्ट उपकरण, एआई आधारित निदान और टेलीमेडिसिन जैसे उपकरण समय पर सहायता प्रदान करते हैं, जिससे जीवन की गुणवत्ता बेहतर होती है और गंभीर समस्याओं से बचाव संभव होता है। अंत में यही कहूंगा कि अच्छी जीवनशैली अपनाना केवल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ही नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन, ऊर्जा, आत्मविश्वास और दीर्घायु के लिए भी आवश्यक है। संतुलित जीवनशैली शरीर और मन दोनों को मजबूत बनाती है, रोगों से बचाती है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करती है।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# बीजद उपराष्ट्रपति चुनाव में मतदान से दूर रहेगी

**मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेश्वर:** बीजेडी कल होने वाले उपराष्ट्रपति चुनाव में मतदान से दूर रहेगी। पार्टी के राज्यसभा सांसद सस्मित पात्रा ने आज इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बीजेडी ने एनडीए और एनडीए, दोनों से समान दूरी बनाए रखी है। इसलिए पार्टी अध्यक्ष नवीन पटनायक ने यह फैसला लिया है। ओडिशा में भाजपा के 20 लोकसभा सांसद हैं। इसलिए एनडीए उम्मीदवारों के लिए ओडिशा से वोट हासिल करने में कोई दिक्कत नहीं है। हालाँकि, राज्यसभा में बीजद की संख्या अभी भी अच्छी है। बीजद के 7 और भाजपा के 3 सदस्य हैं। एनडीए उम्मीदवारों की जीत के लिए बीजद का समर्थन उतना महत्वपूर्ण नहीं है। इसके बावजूद, एनडीए ने बीजद से समर्थन माँगा है। भाजपा का राष्ट्रीय नेतृत्व एनडीए उम्मीदवारों को भारी मतों से जिताने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।

उपराष्ट्रपति चुनाव में वोट न देने का बीजद का फैसला कितना सही है? क्या इससे दिल्ली की राजनीति में बीजद की अहमियत कम नहीं हो जाएगी? या फिर बीजद ने अप्रत्यक्ष रूप से एनडीए को समर्थन देने का फैसला लिया है? राज्य की राजधानी की राजनीति इस समय ऐसे ही सवालों को लेकर उहापोह की स्थिति में है।आखिर, पिछले कुछ दिनों से जिस बात पर चर्चा हो रही थी, वो आखिरकार सामने आ ही गई। और खबर ये भी है कि बीजेडी उपराष्ट्रपति चुनाव में मतदान से दूर रहेगी। तो क्या इस फैसले से दिल्ली में बीजेडी का वज़न कम हो जाएगा? इस बार लोकसभा चुनाव में पार्टी का एक भी सांसद क्यों नहीं जीता? वहीं, राज्यसभा में बीजेडी के सांसदों की संख्या सिर्फ़ 7 है। ऐसे में अगर पार्टी उपराष्ट्रपति चुनाव में किसी का समर्थन नहीं कर रही है, तो क्या संदेश जा रहा है?

# दूध की हर बूँद में क्रांति का घोष — वर्गीज़ कुरियन

भारत की पावन धरती पर इतिहास ने एक साधारण इंजीनियर को क्रांति का मुकुट पहनाया, वह थे वर्गीज कुरियन। उन्होंने दूध की हर बूंद को आजादी और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बना दिया। अमेरिका की प्रयोगशालाओं से लौटे युवा कुरियन गाँवों की मिट्टी में उतरे और लाखों किसानों की किस्मत बदल दी। उनकी पुण्यतिथि, 9 सितंबर, ग्रामीण भारत के जागरण का अमिट प्रतीक है। 9 सितंबर २01२ को गुजरात के नडियाद में उनका देहांत हुआ, लेकिन अमूल के रूप में उनकी विरासत अमर हो गई। अमूल न केवल दूध बेचती है, बल्कि करोड़ों सपनों को पोषण देती है। यह दिन हमें झकझोरता है: क्या हम सफेद क्रांति की लौ को प्रज्वलित रख पाए हैं?

कुरियन का जन्म २6 नवंबर 19२1 को केरल कालीकट (कोझिकोड) में एक सीरियाई क्रिश्चियन परिवार में हुआ। उनका हृदय कभी जाति-धर्म या सीमाओं से बंधा नहीं। दूध या डेयरी इंजीनियरिंग उनकी प्राथमिकता न थी; सरकारी छात्रवृत्ति के लिए उन्होंने मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग चुनी, सोचते हुए कि स्वतंत्र भारत को परमाणु ऊर्जा चाहिए। लेकिन 1949 में आनंद पहुँचकर उनका भाग्य बदला। वहाँ एक छोटी क्रीमरी में किसानों का संघर्ष देखा, पोल्सन जैसी विदेशी कंपनियाँ दूध सस्ते में लूट रही थीं, शहरों में दोगुना दाम बेचकर किसानों को भुखमरी की ओर धकेल रही थीं। त्रिभुवनदास पटेल के साथ कुरियन ने सहकारी समिति की नींव रखी। उन्होंने किसानों को नारा दिया: "दूध है आपकी ताकत"। यह ताकत बिचौलियों को उखाड़ फेंकने वाली थी। 13 मई 1949 को शुक्रवार को आनंद पहुँचकर उन्होंने दूध उद्योग को नई दिशा दी, और सफेद क्रांति की बाढ़ आ गई।

कुरियन को 'श्वेत क्रांति के जनक' कहा जाता है, लेकिन यह उनकी महानता को सीमित करता है। उन्होंने दूध को सामाजिक हथियार बना दिया। भैंस के दूध से स्किम्ड मिल्क पाउडर बनाने की तकनीक विकसित की, जो विशेषज्ञों के लिए असंभव मानी जाती थी। भारत में भैंस का दूध गाय के दूध से दस गुना अधिक था, लेकिन वसा अलग करना चुनौतीपूर्ण था। सहयोगी एच.एम. दलाई के साथ प्रयोगों से उन्होंने सफलता पाई। इससे अमूल ने नेस्ले जैसी कंपनियों से मुकाबला किया और भारत आयात-निर्भरता से मुक्त हुआ। कुरियन का दर्शन था: "किसान को हाथी की सवारी सिखाओ, ताकि वह खुद को नियंत्रित कर सके।" ऑपरेशन फ्लड, दुनिया का सबसे बड़ा कृषि कार्यक्रम, इसी पर आधारित था। 1970 से 1996 तक इसने 81,000 सहकारी समितियाँ बनाईं, 10 मिलियन से अधिक किसानों को जोड़ा। दूध उत्पादन 1,90,000 टन से बढ़कर 50 लाख टन सालाना हो गया, और भारत दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया। दिलचस्प है कि कुरियन को दूध का स्वाद पसंद न था, फिर भी उन्होंने करोड़ों बच्चों को इसका महत्व सिखाया।

अमूल केवल ब्रांड नहीं, विद्रोह का प्रतीक था। कुरियन ने किसानों को मालिक बनाया, वे दूध देने से लेकर प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन तक भागीदार बने। अमूल गर्ल का विज्ञापन अभियान, 50 वर्षों से चल रहा, कुरियन की देन है। यह हास्य से राजनीति पर व्यंग्य करता है, लेकिन हमेशा किसान के पक्ष में। 196२ के भारत-चीन युद्ध में दूध सेना को भेजा गया, तो पोल्सन ने बाजार हथिया लिया। कुरियन ने सरकार से पोल्सन की मशीनें रोकने की अपील की, सहकारिता की रक्षा के लिए। उनकी सबसे बड़ी लड़ाई नौकरशाही से थी। वे कहते: "मैं संकट से भागता नहीं, उसे सींगों से पकड़ता हूँ।" 1990 के दशक में उदारीकरण से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आईं, तो एनडीडीबी से इस्तीफा दे दिया, क्योंकि उत्तराधिकारी अमृता पटेल विपणन आउटसोर्सिंग पर जोर दे रही थीं, जो किसानों को कमजोर कर सकती थी। बाद के वर्षों में कुरियन नास्तिक हो गए; उनके लिए केवल मानव कल्याण मायने रखता था।

कुरियन की दृष्टि सीमाओं से परे थी। उन्होंने विज्ञान को केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे गाँव की धूल-मिट्टी और किसानों के सपनों से जोड़ दिया। इंजीनियर होकर भी उन्होंने मशीनों को किसानों की बोली सिखाई और तकनीक को किसानों की चौपाल तक पहुँचा दिया। बैंगलोर के संस्थान में सीखी गई दूध-परीक्षण की सरल विधियाँ जब गाँव की औरतों के हाथों में पहुँचीं, तो वह विधियाँ केवल तकनीक नहीं रहीं—वह आत्मनिर्भरता और सम्मान का हथियार बन गईं। 1979 में जब आनंद में इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट (आईआरएमए) की नींव रखी गई, तो ग्रामीण प्रबंधन पहली बार कॉर्पोरेट ऊँचाइयों तक पहुँचा।

महिलाओं के सशक्तिकरण में उनका योगदान अद्वितीय रहा—खेड़ा में त्रिभुवनदास फाउंडेशन के जरिए स्वास्थ्य और शिक्षा पर ध्यान दिलाया, और गाँव की महिलाएँ दूध-परीक्षण में विशेषज्ञ बनकर आर्थिक स्वतंत्रता की नई मिसाल बनीं। 1976 में किसानों के केवल दो-दो रुपये से बनी 'मंथन' फिल्म ने सहकारिता को परदे से दिलों तक पहुँचा दिया। भैंस के दूध से चीज़ बनाने की तकनीक ने अमूल को वैश्विक मंच पर खड़ा कर दिया, और यह साबित किया कि गाँव की गाय-भैंसें भी दुनिया की अर्थव्यवस्था में भूमिका निभा सकती हैं।

पर सवाल अब भी है, क्या हम कुरियन के सपनों को सँभाल पा रहे हैं? आज दूध उद्योग अरबों का हो चुका है, लेकिन किसान क्या अब भी असली मालिक हैं? जलवायु परिवर्तन की मार से सूखा उत्पादन को प्रभावित कर रहा है, तो क्या हम भैंसों की नस्ल-सुधार और पानी-संरक्षण को सहकारिता से जोड़ पाए हैं? कुरियन ने जीवनभर समझौता नहीं किया। 1998 में उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी को अमृता पटेल को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए राज़ी तो किया, पर मतभेदों ने रिश्तों को तनावपूर्ण बना दिया। गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी से भी उनके मतभेद रहे, और यही उनके सिद्धांतों पर अडिग व्यक्तित्व की गवाही देता है—एक ऐसा व्यक्तित्व जो सच्चाई के साथ खड़ा रहा, चाहे सामने सत्ता क्यों न हो।

कुरियन का जीवन हमें यह अद्भुत सत्य सिखाता है कि क्रांति कभी नारों से नहीं, बल्कि संगठित संकल्प से जन्म लेती है। उन्होंने किसान की टूटी-फूटी झोपड़ी से उठकर एक ऐसा विश्वस्तरीय आंदोलन खड़ा किया, जिसकी गूंज आज भी भारत की नसों में बहते दूध में सुनाई देती है। आत्मनिर्भरता उनके विचारों का मूल था—स्वाभिमान से जीना और अपनी धरती की ताकत को पहचानना ही उनकी पहचान थी।

9 सितंबर को जब हम उन्हें स्मरण करते हैं, तो यह केवल श्रद्धांजलि का क्षण नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण का अवसर है—क्या हम वास्तव में उनके साहस और दृष्टि के साथ आगे बढ़ रहे हैं? उनका जाना केवल एक महान व्यक्ति का अंत नहीं था; वह एक युग का अवसान था। पर उनकी विरासत अब भी जीवित है, और उसे नया आयाम देना हमारी पीढ़ी की जिम्मेदारी है। उन्होंने साबित किया कि एक अकेले व्यक्ति की दृढ़ता पूरे राष्ट्र की दिशा बदल सकती है। दूध की हर बूंद केवल पोषण नहीं, बल्कि भविष्य की ऊर्जा है। यदि हम उसे उज्ज्वल और आत्मनिर्भर बनाने का प्रण लें, तो यही हमारी सच्ची प्रतिज्ञा होगी और यही प्रतिज्ञा उनके प्रति सबसे गहरी श्रद्धांजलि होगी।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# पारदीप समुद्र से लापता चीनी जाहाज के सदस्य का शव बरामद

**मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार**

**भूबनेश्वर :** पारादीप पोर्ट (PICT) पर एक जहाज से गलती से समुद्र में गिरने के बाद लापता हुए एक चीनी चालक दल के सदस्य का शव बरामद कर लिया गया है। उसका शव समुद्र के पानी में तैरता हुआ मिला। पुलिस ने शव बरामद कर लिया है। मृतक की पहचान झांग ताई के रूप में हुई है। शुक्रवार सुबह पारादीप इंटरनेशनल कार्गो टर्मिनल पर सीढ़ी लगाते समय ताई पानी में गिरने के बाद लापता हो गए थे। पुलिस ने कहा कि शुक्रवार सुबह ओडिशा के पारादीप बंदरगाह के PICT बर्थ पर एक जहाज से गलती से समुद्र में गिरने के बाद लापता हुए चीनी चालक दल के सदस्य झांग ताई का शव रविवार को बरामद किया गया। पुलिस ने कहा कि शुक्रवार सुबह ओडिशा के पारादीप बंदरगाह के PICT बर्थ पर एक जहाज से गलती से समुद्र में गिरने के बाद लापता हुए चीनी चालक दल के सदस्य झांग ताई का शव रविवार को बरामद किया गया।जहाज पनामा से अमेरिका कच्चा लोहा ले जा रहा था। सुबह जहाज के रोप रडार में खराबी का पता चला। दो चालक दल के सदस्य खराबी को ठीक करने के लिए जहाज पर चढ़े। पारादीप अंतर्राष्ट्रीय कार्गो टर्मिनल (PICT) पर सीढ़ी लगाते समय, वे गलती से गहरे पानी में गिर गए। तुरंत बचाव अभियान शुरू किया गया। एक चालक दल के सदस्य को तुरंत बचा लिया गया, जबकि दूसरा लापता हो गया। तटरक्षक बल, एनडीआरएफ, ओडिशा आपदा त्वरित कार्रवाई बल (ODRAF), राज्य समुद्री पुलिस, स्कूबा गोताखोरों और CISF की एक संयुक्त टीम ने लापता चालक दल के सदस्य की तलाश शुरू की। कल (रविवार) चीनी चालक दल के सदस्य का शव पानी में तैरता हुआ मिला। बाद में, पुलिस ने शव को समुद्र से बरामद किया।

# गाँव माकोवाल में बेस कैंप स्थापित, बाढ़ प्रभावितों के लिए मेडिकल कैंप, मरीजों के इलाज हेतु आई.सी.यू. की सुविधा उपलब्ध

डी.एम.सी.एच. के विशेषज्ञों द्वारा सुधार बेस कैंप में लगाया गया मेडिकल कैंप

**अमृतसर, 8 सितम्बर (साहिल बेरी)**

बाढ़ प्रभावित लोगों की सहायता के लिए गाँव माकोवाल में बेस कैंप स्थापित किया गया है। इस बेस कैंप में मेडिकल कैंप के अलावा मरीजों की सुविधा के लिए आई.सी.यू. भी लगाया गया है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने बताया कि रमदास के आसपास के क्षेत्रों का सर्वे किया गया है और गुरुद्वारों के माध्यम से मेडिकल कैंप की लगातार घोषणा भी करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि इस कैंप में लगभग 750 मरीजों का इलाज किया गया है और 6 गाँवों — माकोवाल, कोट गुरबख्श, गग्गोमाहल, माछीवाल, मद्धूछांगा — में मुफ़्त दवाइयाँ बाँटी गई हैं। इसके अलावा खून की जाँच भी की गई है। उन्होंने बताया कि इस बेस कैंप में सेना के जवानों का इलाज भी किया जा रहा है।

डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि गाँव हरदोवाल में फँसे गाँववासियों को राहत सामग्री पहुँचाने के लिए सेना के जवानों की सहायता से सक्की नाले में नाव के माध्यम से सामग्री भेजी जा रही है। डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि प्रशासन बाढ़ प्रभावित लोगों की सेहत और सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। उन्होंने बताया कि सुधार बेस कैंप में भी दयानंद मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के विशेषज्ञों द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से विशेष मेडिकल कैंप लगाया गया है, जहाँ बाढ़ प्रभावित परिवारों की मेडिकल जाँच की जा रही है।

उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा गाँव घोनेवाल और माछीवाल में लगातार एंटी-लार्वा स्प्रे भी करवाया जा रहा है, ताकि डेंगू या मलेरिया जैसी बीमारियों का फैलाव न हो।डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि जब तक हालात पूरी तरह सामान्य नहीं हो जाते, जिला प्रशासन इन बाढ़ प्रभावित परिवारों की हर संभव मदद करेगा और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए हर तरह का सहयोग भी देगा।

# वार्डों में कार्य प्राथमिकता के आधार पर कराने संबंधी विधायक जसबीर सिंह संधू की मेयर जतिंदर सिंह मोती भाटिया के साथ बैठक

**अमृतसर 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिम से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने पश्चिम हलके के वार्डों में कार्य प्राथमिकता के आधार पर करवाने के लिए नगर निगम अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया से बैठक की। इस मौके पर उन्होंने वार्डों में चल रहे सिविल, इलेक्ट्रिक और ओ एंड एम विकास कार्यों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया।

डॉ. संधू ने बताया कि बैठक के दौरान खास तौर पर सीवरेज से संबंधित समस्याओं पर गहन चर्चा की गई। कई वार्डों में नागरिकों को हो रही दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि सभी कार्य प्राथमिकता के आधार पर करवाए जाएंगे। नगर निगम के मेयर ने विधायक को भरोसा दिलाया कि निगम किसी भी वार्ड के विकास कार्यों में कोई कमी नहीं छोड़ेगा और जहां भी आवश्यकता होगी, तुरंत कार्रवाई की जाएगी।

डॉ. संधू ने कहा कि नगर निगम का मुख्य उद्देश्य शहरवासियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। इसलिए हर वार्ड को समान प्राथमिकता दी जाएगी, ताकि विकास कार्यों में संतुलन बना रहे।

डॉ. संधू ने लोगों से अपील की कि वे अपनी समस्याएं सीधे हमारे कार्यालय के ध्यान में लाएं, ताकि उनका समाधान जल्द से जल्द किया जा सके। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार लोगों को सुविधाएं देने के लिए वचनबद्ध है और हर हाल में वार्डों में कार्य करवाए जाएंगे।

# विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू द्वारा वार्ड नं-82 में ट्यूबवेल का उद्घाटन

**अमृतसर, 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिम से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू ने आज वार्ड नं-82 हरगोबिंद एवेन्यू में स्वच्छ पेयजल के लिए ट्यूबवेल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर वार्ड काउंसलर संदीप सिंह सहित क्षेत्रवासी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

डॉ. संधू ने कहा कि इस ट्यूबवेल के लगने से वार्ड की लंबे समय से चली आ रही मांग पूरी हो जाएगी और लोगों को स्वच्छ एवं सुरक्षित पानी उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य को लेकर क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर है क्योंकि अब लोगों को यह बुनियादी सुविधा बिना किसी रुकावट के मिल सकेगी।

उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार और आम आदमी पार्टी की प्राथमिकता लोगों को बेहतर जीवन के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करना है। डॉ. संधू ने यह भी बताया कि सरकार स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़कों और स्वच्छ वातावरण के लिए भी बड़े स्तर पर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विकास की योजनाएँ केवल कागज़ों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जमीनी स्तर पर उसके परिणाम लोगों तक पहुँच रहे हैं।

इस मौके पर क्षेत्रवासियों ने भी विधायक संधू का धन्यवाद किया और कहा कि उनके प्रयासों से क्षेत्र में विकास कार्य तेज़ी से हो रहे हैं। लोगों ने कहा कि लगातार हो रहे इन कार्यों से उनका विश्वास और मजबूत हुआ है कि आम आदमी पार्टी की सरकार वास्तव में जनता की भलाई के लिए कार्य कर रही है।

अंत में डॉ. संधू ने भरोसा दिलाया कि ऐसे विकास कार्य लगातार जारी रहेंगे और किसी भी क्षेत्र को पीछे नहीं छोड़ा जाएगा।

# प्रधानमंत्री आज पंजाब दौरे के दौरान अजनाला के बाढ़ पीड़ितों के लिए 2 हज़ार करोड़ रुपये के पैकेज सहित पंजाब के 60 हज़ार करोड़ रुपये जारी करें – धालीवाल

**अमृतसर 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

* उम्मीद है कि केंद्रीय मंत्री चौहान की तरह प्रधानमंत्री पंजाब के साथ कोई कड़वा मज़ाक नहीं करेंगे – धालीवाल

***अमृतसर/अजनाला,** – हलका अजनाला से विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री कुलदीप सिंह धालीवाल ने हलके में बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित रमदास क्षेत्र के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए चलाए जा रहे सरकारी व सामाजिक संगठनों के राहत कार्यों का जायज़ा लिया। उन्होंने कहा कि कल 9 सितंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी पंजाब में बाढ़ से हुई तबाही का हवाई सर्वेक्षण करने और पठानकोट में अधिकारियों से रिपोर्ट लेने के लिए दिल्ली से आ रहे हैं।

धालीवाल ने अपने सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री श्री मोदी को सीधे संबोधित करते हुए और पीएमओ के सोशल मीडिया हैंडल को टैग कर वीडियो संदेश जारी किया। इसमें उन्होंने प्रधानमंत्री से अपील की कि कल जब वह पंजाब के दौरे पर आएं तो पिछले 20–22 दिनों से भयंकर बाढ़ की त्रासदी झेल रहे अजनाला क्षेत्र के लोगों के लिए विशेष *2000 करोड़ रुपये का पैकेज* घोषित करें।

**साथ ही पंजाब सरकार की केंद्र से बकाया राशि –**

* *50,000 करोड़ रुपये GST मुआवज़ा*,

* *8,000 करोड़ रुपये पंजाब ग्रामीण विकास फंड*,

* और *850 करोड़ रुपये प्रधानमंत्री सड़क योजना के रद्द किए गए फंड*, को मिलाकर कुल *60,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि* जारी करने की घोषणा करें। पूर्व मंत्री धालीवाल ने कहा कि सीमा क्षेत्र पंजाब ने हमेशा पड़ोसी देशों की लड़ाइयों में दुश्मनों के दांत खट्टे किए हैं, आज़ादी संग्राम में 80% से अधिक कुर्बानियाँ दी हैं और देश को अन्न भंडार से आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि उम्मीद है प्रधानमंत्री श्री मोदी सभी राज्यों को समान दृष्टि से देखेंगे और पंजाब के साथ कोई भेदभाव नहीं करेंगे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री को अपने पंजाब दौरे के दौरान खाली हाथ वापस नहीं जाना चाहिए बल्कि *अजनाला सीमा क्षेत्र के लिए 2000 करोड़ रुपये का विशेष पैकेज, **पंजाब के बाढ़ पीड़ितों के लिए 20,000 करोड़ रुपये का पैकेज* और *60,000 करोड़ रुपये की बकाया राशि* जारी करने का एलान करना चाहिए।

क्योंकि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के पंजाब दौरे का कड़वा अनुभव सामने है – उन्होंने बाढ़ प्रभावित किसानों, खेत मजदूरों और भूमिहीन किसानों के लिए दिल्ली लौटकर कोई पैकेज देने के बजाय पंजाब को ही दोषी ठहराया और उनका दौरा पिकनिक जैसा लगा।

इस अवसर पर वरिष्ठ नेता खुशपाल सिंह धालीवाल, मार्केट कमेटी अजनाला के चेयरमैन बलदेव सिंह बब्बू चेतनपुरा सहित अन्य नेता और सरकारी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

# नशा तस्कर सोनी सहित पांच व्यक्ति 8.1 किलो हेरोइन के साथ गिरफ्तार

– तस्कर सोनी सिंह के खुलासे पर उसके चार सहयोगियों को किया गिरफ्तार : सी.पी. अमृतसर गुरप्रीत भुल्लर

**चंडीगढ़/अमृतसर 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के मद्देनजर चल रही मुहिम के दौरान सीमा पार से नार्को-आतंकवाद नेटवर्क को बड़ा झटका देते हुए, कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने सोनी सिंह उर्फ सोनी को, उसके चार साथियों समेत गिरफ्तार करके हेरोइन तस्करी कार्टेल का पर्दाफाश किया है। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों के कब्जे से 8.1 किलो हेरोइन बरामद की गई है। यह जानकारी डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने सोमवार को यहाँ दी।

गिरफ्तार किए गए अन्य चार नशा तस्करों की पहचान गुरसेवक सिंह, विशालदीप सिंह उर्फ गोला, गुरप्रीत सिंह और अर्शदीप सिंह के रूप में हुई है, जो सभी अमृतसर के अजनाला के रहने वाले हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि सिंडिकेट पाकिस्तान से संबंधित था और भारतीय क्षेत्र में हेरोइन की बड़ी खेपें पहुंचाने के लिए ड्रोन का उपयोग किया जाता था। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि सिंडिकेट द्वारा नेटवर्क में खेपों को आगे पहुंचाने के लिए होटलों को तस्करी डंप के रूप में उपयोग किया जाता था।

डीजीपी ने कहा कि हैंडलरों, सप्लाई चैन और वित्तीय नेटवर्क की पहचान करने के लिए अगले-पिछले संबंध स्थापित करने हेतु और जांच जारी है।

ऑपरेशन संबंधी विवरण साझा करते हुए, पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने कहा कि भरोसेमंद सूचना पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीमों ने शहर के बाहरी इलाके से नशा तस्कर सोनी सिंह को 150 ग्राम हेरोइन और ड्रग मनी सहित गिरफ्तार किया था। प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार आरोपी सोनी, जिसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के छह मामले दर्ज हैं और जो जून महीने में जेल से बाहर आया था, ने लगभग 30 किलो हेरोइन की खेपें ड्रोन के माध्यम से हासिल की थीं, जो इस श्रृंखला में आगे सप्लाई की जानी थी।

सीपी ने कहा कि सोनी के खुलासे पर उसके साथी गुरसेवक सिंह को नामजद किया गया और उसे 8.037 किलो हेरोइन के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। गुरसेवक द्वारा खेपें शहर में आगे डिलीवर की जाती थीं। उन्होंने कहा कि आगे की जांच के बाद सोनी के इस तस्करी मॉडल के बाकी सक्रिय सदस्यों को भी नामजद करके गिरफ्तार किया गया। उन्होंने कहा कि अगली जांच जारी है। आने वाले दिनों में और गिरफ्तारी तथा बरामदगी की उम्मीद है। इस संबंधी अमृतसर के थाना छेहरटा में एनडीपीएस एक्ट की धाराओं 21-बी, 27-ए, 21-सी और 29 के तहत एफआईआर नंबर 177 दिनांक 06-09-2025 के अंतर्गत केस दर्ज किया गया है।

# 117 बटालियन बीएसएफ, सेक्टर गुरदासपुर द्वारा भोजन वितरण एवं सामूहिक भोज का आयोजन

**अमृतसर 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

दिनांक 08 सितम्बर 2025 को 117 बटालियन सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने, सेक्टर मुख्यालय गुरदासपुर के तत्वावधान में, अन्नाज मंडी, अजनाला (जिला अमृतसर ग्रामीण) में स्थानीय जनता तथा बाढ़ राहत कार्यों में निरंतर लगे हुए फ्लड रिलीफ वारियर्स के लिए भोजन वितरण एवं सामूहिक भोज कार्यक्रम का आयोजन किया। 25 अगस्त 2025 से लगभग 125 जवान दिन-रात लगातार रेत की बोरियां भरकर बाढ़ को रोकने एवं अजनाला तथा आसपास के सीमावर्ती गाँवों में हजारों नागरिकों की रक्षा हेतु जुटे रहे। यह राहत कार्य 26 अगस्त से 05 सितम्बर 2025 के बीच के गंभीर बाढ़ संकट के दौरान किया गया। उनके अथक प्रयासों के प्रति आभार एवं एकजुटता व्यक्त करने के उद्देश्य से, बीएसएफ द्वारा गरमा-गरम जलेबी, पूरी के साथ आलू-टमाटर की सब्जी, छोले, चावल एवं अन्य व्यंजन परोसे गए। इस कार्यक्रम में लगभग 230 लोगों ने भाग लिया।

# आम आदमी पार्टी लोकसभा हल्का अमृतसर इंचार्ज और पंजाब लघु उद्योग एवं निर्यात निगम के उपाध्यक्ष श्री जसकरण बांदेशा ने आज पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत सिंह मान की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक

**अमृतसर 8 सितंबर (साहिल बेरी)**

किसानों–मजदूरों सहित आम वर्गों के लिए सरकार ने खजाने का मुंह खोलकर ऐतिहासिक कदम उठाया है।

उन्होंने कहा कि देशभर के राज्यों में पहली बार हड़ से प्रभावित किसानों को फसलों के नुकसान के लिए 20 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने का नया कीर्तिमान स्थापित किया गया है। इसके साथ ही हड़ प्रभावित किसानों के सहकारी कर्ज को 6 महीनों तक बिना ब्याज स्थगित करने और किसानों की उपजाऊ ज़मीनों को, जो तेज बहाव व मिट्टी-रेत से भर जाने के कारण बर्बाद हो चुकी हैं, दोबारा खेती योग्य बनाने के लिए "जिसका खेत – उसकी रेत" का ऐतिहासिक निर्णय भी किसानों के हक़ में सुनाया गया है।

श्री बांदेशा ने कहा कि इन फैसलों से किसानों, खेत मज़दूरों और आम वर्गों के पुनर्वास के लिए यह संजीवनी बूटी साबित होंगे। खेतों से रेत और मिट्टी निकालकर बेचने से जहां किसानों को आर्थिक लाभ होगा, वहीं मज़दूरों को भी रोज़गार मिलेगा।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के हर वालंटियर और विधायक, मुख्यमंत्री भगवंत मान और पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरविंद केजरीवाल की अगुवाई में इस आपदा की घड़ी में हड़ प्रभावित परिवारों के दुख-सुख में पूरी तरह साथ खड़े हैं। पार्टी के कार्यकर्ता बिना किसी परवाह के खाने-पीने का सामान और ज़रूरी वस्तुएं प्रभावित परिवारों तक पहुंचाने में जुटे हैं।

श्री बांदेशा ने केंद्र सरकार पर भी निशाना साधते हुए कहा कि देश के किसी भी हिस्से में आपदा आने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद ट्वीट कर या प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर संवेदना जताने में देर नहीं करते, लेकिन पंजाब के हड़ पीड़ितों के लिए अब तक केंद्र सरकार की बेरुखी निंदनीय है।

उन्होंने कहा कि मान सरकार ने न सिर्फ ऐतिहासिक फैसले लिए हैं, बल्कि हड़ में जान गंवाने वालों के परिवारों को प्रति व्यक्ति 4 लाख रुपये का मुआवजा देने, प्रभावित गांवों में विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा मुफ्त स्वास्थ्य जांच और उपचार शिविर लगाने, पशुओं के लिए मुफ्त टीकाकरण करने और हड़ से तबाह हुए घरों का सर्वे कर उचित मुआवजा देने का भी निर्णय लिया है।

आज कैबिनेट में लिए गए इन फैसलों को उन्होंने ऐतिहासिक करार दिया।

# लोगों के चेहरों पर मुस्कान देखना चाहती हूँ: पायल लाठ

पायल फाउंडेशन ने जरूरतमंद बच्ची को व्हीलचेयर देकर दी नई उम्मीद, समाज में फैली खुशी की लहर

**सुनील चिंचोलकर**

**बिलासपुर,छत्तीसगढ़।** पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन समाजसेवा के क्षेत्र में लगातार निस्वार्थ प्रयास करता आ रहा है। यह संस्था हमेशा समाज में जागरूकता फैलाने, इंसानियत की सीख देने और जरूरतमंदों की मदद करने में अग्रणी रही है। इसी नेक उद्देश्य के तहत संस्था ने एक बेहद जरुरतमंद बच्ची को व्हीलचेयर प्रदान किया। यह बच्ची पिछले 15 वर्षों से न चल सकती है और न बोल सकती है। उसकी मां की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि वे अपनी बेटी के लिए व्हीलचेयर भी नहीं खरीद पाई। इस दर्दनाक स्थिति में पायल फाउंडेशन ने सहायता का हाथ बढ़ाया और उस बच्ची के जीवन में उम्मीद की एक नई किरण जगाई।

इस विशेष अवसर पर संस्था के उपाध्यक्ष प्रशांत सिंह राजपूत व सुपुत्र राजवीर लाठ भी उपस्थित रहे। उन्होंने बच्ची व उसके परिवार का उत्साहवर्धन किया। साथ ही ट्विंकल मितेश चौकसी का भी तहे दिल से धन्यवाद किया गया, जिन्होंने इस सहायता कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संस्था की अध्यक्ष पायल लाठ ने कहा, ₹हमारा उद्देश्य केवल मदद करना नहीं है, बल्कि ज़िन्दगियों में नई आशा की किरण जगाना है। हम हर समय लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाते रहेंगे। आज यह व्हीलचेयर उस बच्ची के चेहरे पर मुस्कान की वजह बनेगी। यही हमारी असली सफलता होगी।₹

पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन का यह कदम समाज में मानवता और सहानुभूति की मिसाल बनकर उभरा। ऐसी पहलें न केवल जीवन को आसान बनाती हैं, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनती हैं। आज का यह प्रयास एक छोटे से कदम से एक बड़े बदलाव की शुरुआत है। इस नेक कार्य ने यह साबित कर दिया कि सच्ची समाजसेवा तभी संभव है, जब इंसानियत की भावना दिल से जुड़ी हो। संस्था का यह संकल्प है कि आगे भी इसी तरह जरूरतमंदों की सहायता करती रहेगी और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का काम करती रहेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी–18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए–4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली– 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023